पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023


BLM Academy
Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

Wish You all a Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

**Vision** -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

**Mission**-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

**Pillars** -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

**Goal**-
ब्रह्म तद् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2025-26
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand
blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्मुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)



जून 2025

# उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित


हनीमून या हनीखून

₹:40

# राहुल को सत्ता देना आत्मघाती ?

भारतीय होने के बाद भी गांधी परिवार पाकिस्तान और चीन की पैरवी क्यों करता है? इसमें गांधी परिवार का क्या स्वार्थ है? नरेंद्र के सरेंडर जैसे बयान और बहुत से घटनाक्रम साबित करते हैं कि गांधी परिवार को सत्ता सौंपना भारतीयों के लिए कितना आत्मघाती हो सकता है, इसकी कल्पना सहज की जा सकती है?

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com
Web: uttaranchaldeep.com

मासिक
# उत्तरांचल दीप
पत्रिका

वर्ष:8, अंक 2, जून 2025

**संस्थापक संपादक**
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
**प्रधान संपादक**
साकेत अग्रवाल
**संपादक**
श्रीमती आदेश अग्रवाल
**मुख्य कार्यकारी संपादक**
केके चौहान
**मुख्य उप संपादक**
उदयभान सिंह
**मार्केटिंग हेड**
तारु तिवारी
**प्रबंधक**
दीपक तिवारी
**वरिष्ठ संवाददाता**
रवि दुर्गापाल

**उत्तरांचल दीप ब्यूरो**
**दिल्ली** : शालिनी चौहान
**लखनऊ** : पारस अमरोही
**रुद्रप्रयाग** : हिमांशु पुरोहित
**नैनीताल** : अफजल फौजी
**अल्मोड़ा** : कमल कपूर
**पिथौरागढ़** : ललित जोशी
**बागेश्वर** : नरेंद्र बिष्ट
**चंपावत** : मनोज राय
**बरेली** : अनुज सक्सेना
**मुरादाबाद** : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
**डोईवाला** : चंद्रमोहन कोठियाल
**किच्छा** : राजकुमार राज
**रामनगर** : एचसी भट्ट
**थत्यूड़** : मुकेश रावत
**रुद्रपुर** : मुकेश गुप्ता
**बाजपुर** : इंद्रजीत सिंह
**ग्राफिक्स डिजाइन:** देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep


# अंदर

23 मई से राजा के कत्ल की कहानी शुरु होती है, 2 जून को उसकी डेडबॉडी मिलती है और 8 जून को हनीमून पर साथ गई पत्नी सोनम शिलांग से करीब 1200 किलोमीटर दूर यूपी के गाजीपुर जिले में शिवा ढाबे पर बदहवास हालत में मिली, लेकिन ये सब पहले से बने प्लान का एक हिस्सा है।

सिस्टम
**सच में ये अंधा कानून है...?**
104 वर्षीय लखन सरोज की कहानी हमारी न्यायिक व्यवस्था पर सवाल है, जिसने लखन सरोद को ऐसा ...

नजरिया
**मीडिया से भरोसा उठा?**
किसी भी व्यक्ति, संस्थान, राजनेता, को विश्वसनीयता बनाने में जीवन खपाना पड़ता है ...

पर्यटन
**उत्तराखंड का लद्दाख**
नेलांग घाटी की यात्रा के दौरान सैलानी विश्वनाथ मंदिर, डोडीताल झील, नचिकेता झील, हर की दूं गौमुखी ...

घुसपैठ

**जौनसार में बाहरी लोगों की घुसपैठ**
कुछ वन गुर्जर फर्जी तरह से परमिट लेकर उनका दुरुपयोग कर रहे हैं, ये परमिट वो उत्तर प्रदेश व हरियाणा के मुस्लिम ...

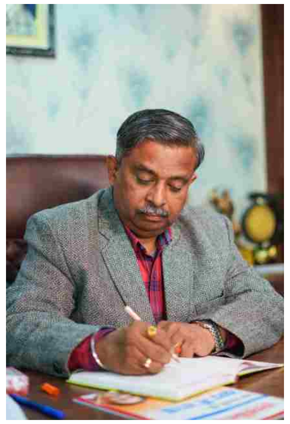

साकेत अग्रवाल

# कश्मीरियों का सपना पूरा

**प्रधानमंत्री** नरेंद्र मोदी के विरोधी आमतौर पर सवाल करते हैं कि मोदी सरकार ने क्या किया? ऐसे सवालों के जबाव मोदी सरकार नहीं बल्कि जनता खुद विपक्षी दलों को दे देती है। लेकिन अब मोदा विरोधी ही कह रहे हैं कि जो काम अंग्रेज नहीं कर पाए, जो कांग्रेस की सरकार 60 साल में नहीं कर पाई वो मोदी सरकार ने करके दिखा दिया। ऐसा जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुला कह रहे हैं। उमर अब्दुल्ला वैसे तो इंडिया गठबंधन का हिस्सा रहे हैं। जम्मू कश्मीर में कांग्रेस के साथ गठबंधन कर विधानसभा चुनाव भी लड़ा था, लेकिन पहलगाम में जब से धर्म पूछ कर 27 हिंदुओं का आतंकवादियों ने नसंहार किया है तब से जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़े नजर आ रहे हैं। ऐसा पहली बार हुआ जब पहलगाम में आतंकी हमले की जम्मू-कश्मीर की आवाम के साथ सरकार ने कड़े शब्दों में निंदा की है। जबकि जम्मू कश्मीर की ही पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती भारत और पाकिस्तान के तनाव के बीच फिर शांति वार्ता की पैरवी करती नजर आई। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 7 मई को जम्मू-कश्मीर पहुंचे और दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे पुल चिनाब का उद्घाटन कर जम्मू कश्मीर को भारत की रेल लाइन से जोड़ दिया। इसी कार्यक्रम में उमर अब्दुल्ला ने कहा कि जम्मू कश्मीर की जनता के लिए रेलवे लाइन एक सपना था। जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा किया है। पीएम मोदी की तारीफ करते हुए उमर अब्दुल्ला ने जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग भी रख दी। उमर अब्दुल्ला का कहना था कि इस मंच पर चार लोग हैं जो 2014 में कटरा रेलवे स्टेशन के उद्घाटन के समय भी थे। आप (प्रधानमंत्री मोदी) उस समय पहली बार प्रधानमंत्री बने थे। मनोज सिन्हा रेल राज्य मंत्री थे और मैं पूर्ण राज्य का मुख्यमंत्री था। आज मनोज सिन्हा उपराज्यपाल हैं, यानी उन्हें पदोन्नति मिली है, लेकिन मैं अब एक राज्य का नहीं बल्कि केंद्र शासित प्रदेश का मुख्यमंत्री हूं, यानी मेरा डिमोशन हुआ है। मुझे विश्वास है कि यह स्थिति जल्द बदलेगी और आपके कार्यकाल में ही जम्मू-कश्मीर को फिर से पूर्ण राज्य का दर्जा मिलेगा। यानी उमर अब्दुल्ला को समझ आ गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से यदि कुछ हासिल करना है तो वो सिर्फ आपसी सहयोग से हासिल हो सकता है। वो जानते हैं कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, पीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ जहर उगलते हैं, जिससे कांग्रेस खोखली हो चुकी है।

चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। ये ब्रिज, एफिल टॉवर से भी ऊंचा है। अब लोग चिनाब ब्रिज के जरिए कश्मीर की जन्नत देखने तो जाएंगे ही, साथ ही ये ब्रिज अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन भी बनेगा। चिनाब ब्रिज हो या फिर आंजी ब्रिज ये जम्मू-कश्मीर की समृद्धि का जरिया बनेंगे। इससे टूरिज्म तो बढ़ेगा ही इकोनॉमी के दूसरे सेक्टर्स को भी लाभ होगा। जम्मू कश्मीर की रेल कनेक्टिविटी कारोबारियों के लिए नए अवसर पैदा करेगी। ये रेल लाइन प्रोजेक्ट सिर्फ एक नाम नहीं है, बल्कि जम्मू-कश्मीर के नए सामर्थ्य की पहचान है। हालांकि इस प्रोजेक्ट के रास्ते में काफी चुनौतियां थीं, लेकिन मोदी सरकार ने सभी चुनौतियों को पार करते हुए इस काम को पूरा किया। मोदी सरकार ने चुनौती को चुनौती देने का रास्ता चुना और जम्मू-कश्मीर के लाखों लोगों का सपना पूरा किया। कश्मीर से कन्याकुमारी अब रेलवे के लिए हकीकत बन गया है, जो कभी सपना हुआ करता था। यह ऐतिहासिक पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। प्रधानमंत्री ने कटरा और श्रीनगर को जोड़ने वाली दो वंदे भारत एक्सप्रेस को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन ट्रेनों के जरिये जम्मू से श्रीनगर का रास्ता सिर्फ 3 घंटे का रह गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू कश्मीर दौरे के दौरान पब्लिक को एड्रस करते हुए पाकिस्तान पर आरोप लगाया कि उसने पहलगाम में आतंकी हमला कराकर 'इंसानियत और कश्मीरियत' का कत्ल किया है। जम्मू-कश्मीर में जितने भी आतंकवादी हमले होते है, उनमें पाकिस्तान की भूमिका होती है। पड़ोसी देश मानवता, सामाजिक सद्भाव और आर्थिक समृद्धि के खिलाफ खड़ा है। उसे जैसे ही पता चलता कि जम्मू-कश्मीर आर्थिक रूप से सक्षम हो रहा है, वो आतंकवादी हमले करवा देता है, जिससे शांति भंग होती है। केवल इतना ही नहीं, पाकिस्तान, जम्मू कश्मीर के गरीबों की रोजी-रोटी का भी दुश्मन है। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुआ आतंकी हमला इसका उदाहरण है, जहां पाकिस्तान से आए आतंकियों ने भारत में धर्म के नाम पर हिंसा भड़काने की कोशिश की। जिसका असर कश्मीर के गरीबों और श्रमिकों की कमाई पर पड़ा। पीएम मोदी ने पहगाम की आतंकी घटना में पाकिस्तान को लपेटा तो पाकिस्तान ने भी प्रतिक्रिया दी। पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने कहा कि पीएम मोदी के पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि पहलगाम आतंकी हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। प्रधानमंत्री मोदी की तरफ से की गई इस टिप्पणी को हम खारिज करते हैं, क्योंकि इसका कोई आधार ही नहीं है। पाकिस्तान ने अपने बयान में कहा कि हम इस बात से बेहद निराश हैं कि भारत के प्रधानमंत्री ने एक बार फिर विश्वसनीय सबूत पेश किए बिना पहलगाम हमले में पाकिस्तान के शामिल होने का आरोप लगाया है। पाकिस्तान को समझना चाहिए कि अब भारत का नेतृत्व नरेंद्र मोदी कर रहे हैं, जो डोजियर नहीं देते बल्कि सीधे आतंकवाद को मिट्टी में मिलाते हैं। आतंक को पनाह देने वालों का पानी बंद कर देते हैं।



# रामनगर की लीची की डिमांड बढ़ी

**रिसर्च के मुताबिक, 'नॉन वोवन बैग्स' से लीची को न कीड़े नुकसान पहुंचा सकते हैं, न चिड़िया या चमगादड़, यहां तक कि आंधी-तूफान और ओलावृष्टि जैसी आपदाओं में भी ये फल सुरक्षित रहते हैं, इसके अलावा इन बैग्स में लीची का रंग ज्यादा निखरता है और साइज भी बड़ा होता है।**

उत्तरांचल दीप डेस्क

**नैनीताल** जिले के रामनगर की लीची अपनी मिठास के कारण इस बार मशहूर हो रही है। दो साल पहले ही यहां की लीची को जीआई टैग मिला था। अब एक नई तकनीक से ये लीची और भी खास बन गई है। यानी रामनगर की लीची के गुच्छे 'नॉन वोवन बैग्स' में लिपटे हुए हैं। इससे न केवल उसका स्वाद बढ़ा है, बल्कि किसानों की कमाई भी उछाल मार रही है। रामनगर की लीची अब एक ब्रांड बन चुकी है। उत्तराखंड के नैनीताल जिले में रामनगर, कालाढुंगी, चकलुआ अब अपनी प्राकृतिक सुंदरता या जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क के लिए नहीं, बल्कि मीठी और रसीली लीची के लिए भी जाना जा रहा है। दो वर्ष पूर्व रामनगर की लीची को विशेष भौगोलिक पहचान और गुणवत्ता के प्रमाण के लिए जीआई टैग मिला था। टैग से रामनगर की लीची को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नई पहचान मिली। इस सफलता के बाद किसानों ने इसे और बेहतर बनाने की दिशा में काम किया। इस कोशिश में एक नई तकनीक सामने आई जिसका नाम है 'नॉन वोवन बैग्स'। रिसर्च के मुताबिक, 'नॉन वोवन बैग्स' से लीची को न कीड़े नुकसान पहुंचा सकते हैं, न चिड़िया या चमगादड़। यहां तक कि आंधी-तूफान और ओलावृष्टि जैसी आपदाओं में भी ये फल सुरक्षित रहते हैं। इसके अलावा इन बैग्स में लीची का रंग ज्यादा निखरता है और साइज भी बड़ा होता है। जब लीची बैग में होती है, तो कीटनाशकों का छिड़काव करने की जरूरत नहीं पड़ती। इससे किसानों का खर्चा कम होता है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है। ये तकनीक पूरी तरह इको-फ्रेंडली और कारगर है। इस साल पहली बार यह तकनीक कई लीची के बगीचों में ट्रायल के रूप में अपनाई गई है। शुरुआती नतीजे उत्साहजनक हैं। बैग्स में लिपटी लीची न सिर्फ बड़ी और रसदार है, बल्कि टूट-फूट से भी पूरी तरह बची है।

खुले में और बैग में लीची का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। बैग वाली लीची न केवल बड़ी है, बल्कि गुणवत्ता में भी बेहतर है। यह किसानों के लिए फसल की सुरक्षा का एक बेहतरीन तरीका बनकर उभरा है। इस क्षेत्र में लीची का उत्पादन रामनगर, कालाढुंगी, कोटाबाग और चकलुआ में होता है। यहां करीब 900 हेक्टेयर में लीची का उत्पादन होता है और लीची के करीब 140,000 पेड़ हैं। 2000 से ज्यादा किसान लीची का उत्पादन करते हैं। नॉन वोवन बैग पॉली प्रोपाइलीन से बनाए जाते हैं। ये एक प्रकार का प्लास्टिक पॉलीमर है, लेकिन पारंपरिक प्लास्टिक बैग की तुलना में यह पर्यावरण के अधिक अनुकूल माने जाते है। नॉन-वोवन बैग वाटर प्रूफ होते हैं। इसलिए ये फलों के लिए सुरक्षित माने जाते हैं। यहां के बागानों से लीची सीधे बाहरी राज्यों में सप्लाई हो रही है। खपत इतनी बढ़ गई कि मुंह मांगी कीमत मिलने पर भी बगीचे वालों के लिए आपूर्ति करना मुश्किल हो रहा है। इस बार देहरादून के बाजार में स्थानीय लीची की उपलब्धता घटी है। लगातार बारिश ने लीची की फसल को बड़ा नुकसान पहुंचाया है, जिससे बाजार से लीची चुपचाप गायब हो गई है। देहरादून में रामनगर की लीची उपलब्ध है, लेकिन काफी ज्यादा कीमत पर। शहर के फल व्यापारियों का कहना है कि भारी बारिश के कारण इस साल देहरादून की लीची की फसल को 50 फीसदी तक बर्बाद हो चुकी है। लिहाजा इस बार देहरादून के बाजार में स्थानीय लीची की कमी है और आगे भी रहेगी। लीची व्यापारियों का कहना है कि वे रामनगर से उच्च गुणवत्ता वाली लीची खरीद रहे हैं और 180 से 200 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेच रहे हैं। बढ़ती कीमतों का कारण देहरादून में स्थानीय लीची की फसल का खराब होना है, जिससे बाजार में आपूर्ति कम हो गई है। लिहाजा स्थानीय फल विक्रेता दूसरे जिलों से लीची खरीद रहे हैं, जिससे उनकी कीमतों पर असर पड़ रहा है। हालांकि कुछ स्थानीय लीची भी उपलब्ध हैं, लेकिन उसकी मात्रा पिछले वर्षों की तुलना में काफी कम है, फिर भी स्थानीय लीची की कीमत 120 रुपये प्रति किलोग्राम है।

**देहरादून में कभी 6 हजार लीची के बाग थे, तब हजारों टन लीची का उत्पादन होता था, लेकिन अब लोगों के घरों में और हरबर्टपुर, विकासनगर, सहसपुर और झाझरा में ही लीची के कुछ पेड़ देखने को मिलते हैं, यानी पहाड़ों की लीची अपनी मिठास और महक खो रही है।**

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून की लीची दुनियाभर में मशहूर रही है। एक दौर था जब पर्यटक देहरादून घूमने आते थे तो यहां की लीची लेकर जरूर जाते थे, लेकिन देहरादून के शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन, निर्माण कार्य और लीची बागों के कम हो जाने से अब देहरादून का यह मशहूर फल गायब हो गया है। अब लीची का उतना उत्पादन नहीं होता, जितना कभी होता था। देहरादून में कभी 6 हजार लीची बाग थे, तब हजारों टन लीची का उत्पादन हुआ करता था। लेकिन अब लोगों के घरों में और हरबर्टपुर, विकासनगर, सहसपुर और झाझरा में ही कुछ पेड़ देखने को मिलते हैं। यानी पहाड़ों की लीची अपनी मिठास और महक खोती जा रही है। लीची का उत्पादन कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। सबसे बड़ी समस्या है शहरीकरण की है जिससे बागों का अंधाधुंध कटान हुआ है। वन और उद्यान विभाग द्वारा पेड़ों के कटान की मंजूरी मिलने के बाद कई पुराने बाग समाप्त हो गए हैं। इसके अलावा नए बाग लगाने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा, जिससे न केवल उत्पादन घटा है, बल्कि लीची की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। जलवायु परिवर्तन भी एक बड़ी चिंता बन चुका है, क्योंकि बारिश और तापमान में बदलाव फलों के रंग और स्वाद पर असर डाल रहे हैं।

# सुर्खियां

## 200 से ज्यादा भ्रष्ट अफसरों पर एक्शन

**मुख्यमंत्री** पुष्कर सिंह धामी ने एक बार फिर साफ-साफ कहा है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति जारी रहेगी। भ्रष्टाचार किसी भी रूप में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मीडिया से बातचीत में सीएम धामी ने कहा कि ऊपर तक जाता है, ऊपर तक देना होता है, कह कर पैसा मांगने वाले अधिकारियों कर्मचारियों की शिकायत 1064 नंबर पर करें। शिकायतकर्ता को डरने की जरूरत नहीं है, सरकार पूर्ण सुरक्षा देगी। सीएम धामी ने हाल ही में हरिद्वार नगर निगम भूमि घोटाले मामले में दो आईएएस और एक पीसीएस को सस्पेंड कर उनके खिलाफ विजलेंस जांच कराने संबंधी सवाल के जवाब में कहा कि उनकी सरकार भ्रष्टाचार को सहन नहीं करेगी। कुछ लोग ये कहते थे कि भ्रष्टाचार के मामलों में छोटी मछलियां पकड़ी जाती है, बड़ी छूट जाती है जबकि ये आरोप इसलिए गलत है कि हमने पहले भी आईएफएस और अन्य अधिकारियों को भ्रष्टाचार में जेल भेजा है। सरकारी नौकरियों में भर्ती परीक्षा में नकल कराने वाले दर्जनों लोगों को जेल भेजा, उन पर गैंगस्टर की कार्रवाई की। सरकार ने सख्त नकल विरोधी अध्यादेश भी राज्य में लागू किया, जिसके बाद हजारों युवाओं को सरकारी नौकरियों में पारदर्शिता से रोजगार मिला है। विपक्ष के आरोपों के सवाल पर सीएम धामी ने कहा कि हम यही कहते हैं, उनके पास भ्रष्टाचार संबंधी कोई शिकायत है तो वे विजलेंस में प्रमाण सहित दर्ज करवा सकते हैं या उन तक पहुंचा सकते हैं। हम यकीन दिलाते हैं कि सरकार निश्चित रूप से कार्रवाई करेगी। सीएम धामी ने माना कि तहसील स्तर पर कार्य संस्कृति में बदलाव की जरूरत है, आम आदमी के कार्यों के प्रति प्रशासनिक अधिकारी ध्यान कम दे रहे हैं इसलिए उनको हिदायत दी गई है। वो खुद तहसील का औचक निरीक्षण करने जा सकते हैं। ऑनलाइन प्रमाण-पत्रों के आवेदन की संघनता से जांच करने के बाद ही प्रमाण-पत्रों को समयबद्धता से जारी किया जाएगा। इस कार्य में कोई शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। परिवार रजिस्टर में हेर-फेर करने, फर्जी दस्तावेजों से आधार कार्ड, वोटर कार्ड, आयुष्मान कार्ड बनाने वाले कर्मचारी भी जांच अधिकारियों की नजर से बचने नहीं चाहिए। विजलेंस के रडार पर कई अधिकारी है जिनकी शिकायतें आई हैं। आय से अधिक संपत्तियों को रखने वाले, बेनामी संपत्तियों को रखने वाले ऐसे कई अधिकारियों की भी जांच पड़ताल, वित्त एजेंसियां कर सकती है। हमारी सरकार ने दो सौ से अधिक भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कारवाई की है और ऐसा किसी भी पूर्ववर्ती सरकार में नहीं हुआ है।

## बेमौत मरने से बच सकते हैं पौधे

**हर** साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर लाखों की संख्या में पौधरोपण किया जाता है। इनमें से 95 प्रतिशत पौधे सार्वजनिक जगहों पर लगाए जाते हैं और इन्हें लगाकर लोग भूल जाते हैं। फोटो सेशन होता है अखबार या सोशल मीडिया में खबरें छपती हैं पर अगले दिन से किसी को उन पौधों को पानी देने की फुर्सत नहीं होती है। जून में कुछ पर्वतीय इलाकों और दक्षिण भारतीय राज्यों के अलावा सारे भारत में धरती तप रही होती है। ऐसे में सार्वजनिक स्थानों पर पौधे लगाने का मतलब है उनकी हत्या करना। इस दौरान बीच-बीच में कभी बारिश होती भी है तो अगले दिन फिर तापमान 40 से 45 डिग्री पहुंच जाता है। लिहाजा बारिश के भरोसे पौधे नहीं लगाने चाहिए। यदि 15 से 20 दिन इंतजार करके मानसून आने के बाद पौधे लगाएं तो उनके बचने की काफी संभावना रहती है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजगता का डा.आशुतोष पंत हृदय से स्वागत करते हैं। इसमें सहयोग देने वालों का आभार भी जताते हैं लेकिन पौधा रोपण करना ही तो पर्यावरण के प्रति प्रेम नहीं है। इस समय जल संरक्षण, पालीथीन का प्रयोग रोकना, वनों को अग्नि से बचाना ये सब करके भी हम प्रकृति की सेवा कर सकते हैं। बच्चों को बीजों से पौधे तैयार करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच समझ कर ही हरेला, हरियाली तीज जैसे उत्सव तय किए हैं। उन्होंने हमें संदेश दिया है कि 15 जुलाई के आसपास धरती का तापमान ठीक हो जाता है उस समय पौधे लगाएं जाएं तो जीवित रहते हैं। दो ढाई महीने लगातार पानी मिलता है तो पौधे खिल उठते हैं उनका अच्छा विकास होता है। इसलिए सबसे अनुरोध है 5 जून को जल संरक्षण, स्वच्छता अभियान आदि कार्यक्रम करें, हरेला के दिन से बड़ी संख्या में पौधे लगाएंगे। हर साल की तरह मेरा निःशुल्क पौधे उपलब्ध कराने का प्रयास रहेगा।

## क्यों हो रहे हेलीकाप्टर क्रैश

**चारधाम** यात्रा शुरू होने के बाद पांचवीं बड़ी हेलीकाप्टर दुर्घटना के बाद अब देहरादून में एअर ट्रैफिक कंट्रोल का निर्णय हुआ है, जो देर से लिया गया पर सही निर्णय है, लेकिन हाल ही में केदारनाथ हादसे ने हेली सेवाओं पर प्रश्न चिह्न तो खड़ा कर ही दिया है। इस हादसे के वाद सरकार के स्तर से सख्त संदेश देने के लिए जिस प्रकार से ताबड़तोड़ फैसले लिए जा रहे उससे ऐसा लग रहा है कि सरकार भी हादसे के इंतजार में रहती है। चारधाम यात्रा शुरू होने के बाद 8 मई से 15 जून के बीच पांच हेलीकाप्टर क्रैश हो चुके हैं। 8 मई को उत्तरकाशी के गंगनानी में हेलीकाप्टर क्रेश हुआ और 6 तीर्थयात्रियों की मौत हुई। केदारनाथ हादसे के बाद हेली सेवाओं के संचालन पर जिस प्रकार के निर्णय लिए गए यदि 8 मई को उत्तरकाशी की घटना के बाद ही सख्त निर्णय ले लिए जाते तो 6 लोगों की जान बचाई जा सकती थी। यह सवाल आम जनमानस के मन में भी तैर रहा है। केदारनाथ हादसे के बाद पहला निर्णय कॉमन कमांड सेंटर बनाने का हुआ है तो क्या उत्तराखंड में हेली सेवाओं को शुरू करने से पहले कॉमन कमांड सेंटर नहीं बनना चाहिए था? दूसरा निर्णय हुआ है कि अब हिमालय में उड़ान के लिए अनुभवी पायलटों को ही इजाजत दी जाएगी तो क्या अब तक उच्च हिमालय में उड़ान भर रहे अनुभवी पायलट नहीं थे? तीसरा निर्णय सख्त एसओपी लागू करने का भी हुआ है तो उत्तराखंड मे क्या हेलीकाप्टर बिना किसी एसओपी के ही संचालित हो रहे थे? यह सब प्रश्न हेलीकाप्टर क्रैश में अपनों को खो चुके परिवार तो पूछेंगे ही। यह भी सच है कि हादसा कभी भी किसी के साथ हो सकता है, लेकिन हादसे के तुरंत बाद जिस प्रकार से सुरक्षात्मक निर्णय लिए जाते हैं उनसे लोगों के मन में सवाल उठना लाजिमी है कि यदि इस प्रकार के निर्णयों से हादसे कम या रोके जा सकते हैं तो यह हादसों से पहले क्यों नहीं लिए जाते। केदारनाथ हादसे के बाद एक महत्वपूर्ण निर्णय एटीसी-एअर ट्रैफिक कंट्रोल का हुआ है जो अब तक नहीं था, एटीसी का मतलब ही वायु यातायात नियंत्रण है, एटीसी ही वायु यातायात के सुरक्षित एवं व्यवस्थित करने का प्रबंधन करती है। ऐसा सुरक्षित प्रबंधन भी हेली सेवाओं को शुरू करने से पूर्व नहीं किया गया। किसी भी राज्य अथवा केंद्र सरकार की पहली जिम्मेदारी अपने नागरिकों की सुरक्षा करना है और नागरिकों की सुरक्षा के लिए हादसों व मौतों का इंतजार किए बिना जो भी बड़े निर्णय लिए जाने हो वह किसी भी योजना को शुरू करने से पहले ले लिए जाने चाहिए। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा ही राज्य की आर्थिकी की रीढ़ है, हर वर्ष शीतकाल में चारों धामों के कपाट बंद होने के बाद से ही आगामी यात्रा सीजन की तैयारियों को लेकर बैठकों का दौर शुरू हो जाता है, वसंत पंचमी आते आते दर्जनों बैठकें कई स्तर पर हो जाती है, कपाट खुलने से ठीक पहले चाक चौबंद व्यवस्था का दावा भी कर दिया जाता है और कपाट खुलने के बाद हादसों की शुरुआत होती है। उत्तरकाशी एवं केदारनाथ जैसे हादसों की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए राज्य सरकार कठोर निर्णय ले रही है।

## अंकिता को मिला न्याय

**उत्तराखंड** के बहुचर्चित अंकिता भंडारी हत्याकांड में तीनों आरोपियों को कोटद्वार की सेशन कोर्ट ने उम्र कैद की सजा सुना दी है। तीन साल पुराने इस मामले पर उत्तराखंड ही नहीं, पूरे देश की नजरें कोर्ट के फैसले का इंतजार कर रही थीं। अदालत ने पुलकित आर्य, सौरभ भास्कर और अंकित गुप्ता को हत्या का दोषी माना है। हालांकि अंकिता के परिजन व जनसामान्य दोषियों को फांसी की दिए जाने की मांग कर रहे थे। कोटद्वार के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने पहले अभियुक्त पुलकित आर्य को आईपीसी की धारा 302 में कठोर उम्र कैद व 72,000 रुपये जुर्माना। दूसरे अभियुक्त सौरभ भास्कर व तीसरे आरोपी अंकित गुप्ता को हत्या के जुर्म में आजीवन कठोर कारावास व 62000 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। तीनों अभियुक्तों को पीड़िता के परिजनों को भी 4 लाख रुपये बतौर मुआवजा देना होगा। दरअसल पौड़ी जिले की 19 वर्षीय अंकिता भंडारी ऋषिकेश के वनंतरा रिजॉर्ट में रिसेप्शनिस्ट के रूप में कार्यरत थीं। 18 सितंबर 2022 को रिजॉर्ट के मालिक पुलकित आर्य ने अपने दो कर्मचारियों, सौरभ भास्कर और अंकित गुप्ता के साथ मिलकर अंकिता को चीला नहर में धक्का देकर उसकी हत्या कर दी थी। तीनों आरोपी अंकिता पर ग्राहकों को 'विशेष सेवाएं' देने का दबाव बना रहे थे, जिसका उसने विरोध किया था। इस घटना के बाद पुलकित आर्य के पिता व भाजपा नेता विनोद आर्य को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था। पुलिस हत्याकांड की सुनवाई करीब तीन साल चली, जिसमें अभियोजन पक्ष ने 47 गवाहों के बयान दर्ज कराए। अदालत ने अंतिम बहस सुनने के बाद आज 30 मई को सजा सुनाई। अंकिता भंडारी हत्याकांड हाईप्रोफाइल होने के कारण खासी चर्चा में रहा था। क्योंकि उत्तराखंड की धामी सरकार ने घटना के तुरंत बाद सख्त रुख अपनाया था। सरकार ने पीड़िता के परिवार की इच्छा के अनुसार न्याय के लिए वरिष्ठ वकील उपलब्ध करवाए। स्वयं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पीड़िता के परिवारजनों के साथ कई बार बातचीत भी की थी। इस मामले में सजा होने के बाद सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि कोर्ट ने आरोपियों को उम्र कैद की सजा सुनाई है, इससे पीड़िता के परिजनों को इंसाफ मिला है। हमारी सरकार हमेशा अंकिता के परिजनों के साथ खड़ी रही है। अंकिता भंडारी हत्याकांड में धामी सरकार ने न केवल संवेदनशीलता दिखाई, बल्कि विलंब के बजाय निर्णय की गति को चुना। घटना के 24 घंटे के भीतर आरोपियों को जेल भेजा, एसआईटी का गठन कर जांच को तेज और पारदर्शी बनाना, आरोपियों पर गैंगस्टर एक्ट लगाना, 500 पन्नों की चार्जशीट बनी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने परिवार को 25 लाख की आर्थिक मदद दी, साथ ही अंकिता के भाई और पिता को सरकारी नौकरी देकर सहानुभूति का परिचय दिया था। सरकार ने तीन बार वकील बदले ताकि केस में कोई कसर न रह जाए और सरकारी वकील की दमदार पैरवी से बार-बार आरोपियों की जमानत याचिकाएं खारिज होती रहीं। यह फैसला बताता है कि मुख्यमंत्री धामी के राज में न कोई अपराधी बच सकता है, न ही कोई पीड़ित अकेला पड़ सकता है। मुख्यमंत्री ने साबित किया है कि न तो न्याय में देरी हुई न ही अपराधियों के साथ किसी तरह की रहम हुई।

# राहुल को सत्ता देना आत्मघाती?

**भारतीय होने के बाद भी गांधी परिवार पाकिस्तान और चीन की पैरवी क्यों करता है? इसमें गांधी परिवार का क्या स्वार्थ है? नरेंद्र के सरेंडर जैसे बयान और बहुत से घटनाक्रम साबित करते हैं कि गांधी परिवार सो सत्ता सौंपना भारतीयों के लिए कितना आत्मघाती हो सकता है, इसकी कल्पना सहज की जा सकती है?**

कृष्ण कुमार चौहान

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी क्या चीन, पाकिस्तान, डीप स्टेट और जॉज सोरोस के पेड एजेंट हैं? ये सवाल भाजपा सांसद सबित्र पात्रा ने उठाया है, क्योंकि सेना के 'आपरेशन सिंदूर' पर जितने सवाल राहुल गांधी ने उठाएं हैं उतने तो पाकिस्तान और चीन ने भी नहीं उठाए। पाकिस्तान के मुंह से सिर्फ एक बार सुना कि उसकी सेना ने रफेल फाइटर जेट गिराया है, लेकिन सबूत कोई नहीं दिया। इसके विपरीत राहुल गांधी हर रोज सवाल कर रहे हैं कि पाकिस्तान ने भारत के कितने फाइटर जेट गिराए हैं? सरकार को बताना चाहिए। राहुल गांधी के विदेशी एजेंट होने का संदेह इसलिए भी होता है कि उन्होंने एक बार भी ये सवाल नहीं किया कि भारत ने पाकिस्तान का कितना नुकसान किया है? नेता प्रतिपक्ष ने पहलगाम में धर्म पूछ कर 27 हिंदुओं की हत्या करने वालों पर कभी सवाल नहीं उठाया, न ही धर्म पूछकर नरसंहार करने वालों के सर्वनाश की कोई मांग की है? वो पहलगाम के किसी भी पीड़ित परिवार से नहीं मिले, लेकिन उनका मन शायद 'आपरेशन सिंदूर' में मारे गए आतंकियों के परिजनों से मिलने को अवश्य मचल रहा होगा! सवाल ये भी उठता है कि क्या राहुल गांधी की सोचने समझने की शक्ति जबाव दे चुकी है, क्योंकि वो कभी-कभी ऐसी भाषा बोलते हैं जिससे साबित होता है कि वो खुद को भारतीय समझते भी हैं या नहीं? उन्हें भारत की सेना पर विश्वास नहीं है, उन्हें भारत के निर्वाचन आयोग पर यकीन नहीं है। न्यायपालिका उनके हक में फैसला दे तो सही वरना न्यायपालिका पर आरएसएस का कब्जा बता दिया जाता है। इसके साथ ही भारत की सभी संवैधानिक संस्थाओं पर कांग्रेस के अकेले राहुल गांधी एंड कंपनी को यकीन नहीं है। इस बार तो राहुल गांधी ने सारी हदें पार कर दी। 'आपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान के पीएम से लेकर मंत्री तक और पाकिस्तान की सेना से लेकर आतंकवादियों तक में नरेंद्र के सरेंडर करने का बयान देने की हिम्मत नहीं हुई, लेकिन लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सार्वजनिक रूप से नरेंद्र के सरेंडर करने का बयान दिया तो पाकिस्तान में पोस्टर ब्वाय बन गए। ये वही राहुल गांधी हैं जिनके खानदान का कलेंडल, सरेंडर के इतिहास से अटा पड़ा है।

## कांग्रेस चीन से क्या है एमओयू?

ये वो राहुल गांधी हैं जिन्होंने 2008 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) के साथ व्यक्तिगत रूप से एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए थे। ये भारतीयों को परेशान और भ्रमित करने वाली घटना है। क्योंकि कांग्रेस या राहुल गांधी ने इसे विपक्षी दलों के साथ साझा नहीं किया। न ही मुख्यधारा के मीडिया में एमओयू को विस्तार से साझा किया, ताकि हर भारतीय को इसके बारे में पता होता। आज तक इस एमओयू के बारे में भारत में सिर्फ राहुल गांधी, सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी के अलावा और कोई नहीं जानता। इसलिए भी कांग्रेस लगातार अपना जनाधार खो रही है, पार्टी के वरिष्ठ नेता पार्टी से किनारा कर रहे हैं। क्योंकि एमओयू पर आमतौर पर सरकारें और कॉरपोरेट्स हस्ताक्षर करते हैं, लेकिन कांग्रेस द्वारा सीसीपी के साथ ऐसा करना एकदम अजीब है। अगर चीन के साथ किसी तरह का समझौता करना था, तो तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को हस्ताक्षर करने चाहिए थे, लेकिन वो तो मां-बेटे के सामने एक लाचार पीएम की तरह खड़े रहते थे। कांग्रेस के गांधी परिवार और पाकिस्तानी नेता बिलावल भुट्टो के साथ चीन में गोपनीय मुलाकात की तस्वीरें भी सोशल मीडिया और मीडिया पर वायरल हो रही हैं, जो ये साबित करती हैं कि भारतीय होने के बाद भी गांधी परिवार पाकिस्तान और चीन की पैरवी क्यों करता है? इसमें गांधी परिवार का क्या स्वार्थ है? ये कुछ सवाल और घटनाक्रम साबित करते हैं कि गांधी परिवार सो सत्ता सौंपना भारतीयों के लिए कितना आत्मघाती हो सकता है?

> **राहुल गांधी ने ऑपरेशन सिंदूर का मजाक बनाकर सेना और देश का अपमान किया है, कोई भी 'सभ्य राजनेता' अपने देश के लिए इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता है, भारत ने कभी सरेंडर किया होगा, लेकिन नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए के डीएनए में सरेंडर करना नहीं है। फिर भी कोई नेता इस तरह के 'सरेंडर' शब्द का इस्तेमाल कर रहा है तो वह राजनीति करने लायक ही नहीं है।**

## पीओके दिया कांग्रेस ने और वापस ले मोदी

राहुल गांधी ने भोपाल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को एड्रस करते हुए कहा कि एक समय 1971 का भी था, जब अमेरिका का सातवां बेड़ा आया था, लेकिन इंदिरा गांधी ने कहा था, मुझे जो करना है, वो करूंगी। कांग्रेस के बब्बर शेर और शेरनियां सुपरपावर्स से लड़ते हैं, कभी झुकते नहीं। गांधीजी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल सरेंडर वाले लोग नहीं थे। लेकिन राहुल गांधी को जरा कांग्रेस और अपने पूर्वजों का इतिहास भी पढ़ लेना चाहिए। इंदिरा गांधी वो शेरनी थी जिसके राज में 1971 में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों को सरेंडर करने पर विवश किया, लेकिन यहां इंदिरा गांधी ने सरेंडर किया और पाकिस्तान के 93 हजार युद्ध बंदी सैनिकों के बदले 54 भारतीय युद्ध बंदी सैनिकों को पाकिस्तान से वापस नहीं ला पाई थीं। ये वही शेरनी इंदिरा गांधी थी जो चाहती तो 93 हजार पाकिस्तानी युद्ध बंदी सैनिकों के बदले पीओके वापस ले सकती थी, 1947 में इंदिरा गांधी के पिता पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर का एक बड़ा हिस्सा (पीओके) पाकिस्तान को गिफ्ट कर दिया था। यह इलाका 13,300 वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला है। जिसे पाकिस्तान आजाद कश्मीर कहता है और भारत के हिस्से वाले जम्मू-कश्मीर पर दावा ठोकता है। क्या यह पाकिस्तान के सामने पंडित नेहरू का सरेंडर नहीं था। लेकिन आपरेशन सिंदूर के बाद राहुल गांधी के चाटुकार निर्लज्जता से सवाल मोदी सरकार से कर रहे हैं कि पीओके वापस क्यों नहीं लिया? अब जवाहर लाल नेहरू के कारनामे भी देख ले 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान कांग्रेस का देश में एकछत्र राज था, उस समय केंद्र में जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस की मजबूत सरकार थी, फिर भी चीन ने भारतीय सीमा में घुसकर अक्साई चिन क्षेत्र के करीब 40,000 वर्ग किलोमीटर पर भूभाग पर कब्जा कर लिया। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या राहुल गांधी अपने पूर्वजों के सरेंडर करने जैसे कारनामों से वाकिफ नहीं हैं? जबकि देश के विदेश मंत्री एस जयशंकर कई मंचों पर कांग्रेस के कारनामों की हकीकत बता चुके हैं।

## राहुल नहीं जानता सीजफायर और सरेंडर क्या है?

ये वही राहुल गांधी हैं जो ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत-पाकिस्तान के बीच हुए सीजफायर को लेकर मोदी सरकार पर हमला बोलते हैं। राहुल गांधी को पता होना चाहिए कि सीजफायर और सरेंडर करने में बड़ा अंतर होता है। फिर सीजफायर के लिए भारत ने नहीं बल्कि पाकिस्तान ने पहल की थी। भारतीय सेना ने जब पाकिस्तान के हर कोने और हर स्टेट में तबाही मचाई तो पाकिस्तान के डीजीएमओ सीजफायर के लिए गिड़गिड़ाए। वैसे भी ये युद्ध नहीं था बल्कि ऑपरेशन सिंदूर था, जो अभी जारी है, ऐसा देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह कह चुके हैं। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना ने 6 जून की रात पाकिस्तान और पीओके के 9 आतंकी ठिकानों पर स्ट्राइक की थी। जिसके रिएक्शन में पाकिस्तान ने भारत पर ड्रोन और मिसाइल से हमले की कोशिश की, लेकिन भारतीय सेना ने चंद घंटों में ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया था। राहुल गांधी को शायद समझ नहीं है कि सीजफायर का फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नहीं था बल्कि भारतीय फौज के डीजीएमओ का था। फिर भी राहुल कह रहे हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का फोन आया कहा मोदी जी क्या हो रहा है? फिर ट्रंप ने कहा नरेंद्र-सरेंडर। बस हो गया सीजफायर। कांग्रेस होती तो कभी सरेंडर नहीं करती।

> - **1971 में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों को सरेंडर करने पर विवश किया, लेकिन यहां इंदिरा गांधी ने सरेंडर किया और पाकिस्तान के 93 हजार युद्ध बंदी सैनिकों के बदले 54 भारतीय युद्ध बंदी सैनिकों को पाकिस्तान से वापस नहीं ला पाई थीं।**
> - **जिस तरह की भाषा का उपयोग राहुल गांधी, पीएम नरेंद्र मोदी के लिए करते हैं वैसी भाषा तो शायद कोई जाहिल भी प्रधानमंत्री के लिए नहीं करता है, ये शायद उनके संस्कार हैं, क्योंकि एक विदेशी मां अपने बच्चों को भारतीय संस्कार कैसे दे सकती? इसलिए राहुल गांधी को न तो भाषा की परवाह और न ही मर्यादा की।**

भाजपा और आरएसएस पर जरा सा दबाव पड़ा तो ये जंग के मैदान से पीछे हट गए। जिस तरह की भाषा का उपयोग वो पीएम नरेंद्र मोदी के लिए करते हैं वैसी भाषा तो शायद कोई अनपढ़ भी प्रधानमंत्री के लिए नहीं करता है। ये शायद उनके संस्कार हैं, क्योंकि एक विदेशी मां अपने बच्चों को भारतीय संस्कार कैसे दे सकती। इसलिए राहुल गांधी को न तो भाषा की परवाह और न ही मर्यादा की।

## राहुल का वही पुराना राग

राहुल गांधी ने मध्य प्रदेश के भोपाल में पार्टी के कार्यक्रम में अपना पुराना घिसापिटा टेप चलाया यानी विचारधारा की लड़ाई चल रही है। एक तरफ कांग्रेस है, हमारा संविधान है। दूसरी तरफ भाजपा और आरएसएस है, जो संविधान को नहीं मानती है। इसको खत्म करना चाहती है। हिंदुस्तान की सारी संस्थाओं को उन्होंने पकड़ लिया है। हर संस्था में उन्होंने अपने लोग डाले हैं। धीरे-धीरे वो देश का गला घोंट रहे हैं। अडाणी और अंबानी चीन का माल भारत में बेच रहे हैं। देश का पूरा धन चुनिंदा लोगों के हाथ में सौंपा जा रहा है। चारों तरफ बस दो-तीन लोग दिखते हैं, जैसे इनके अलावा देश में कोई और बिजनेसमैन हैं ही नहीं। अमेरिका में अडाणी पर केस चल रहा है, लेकिन हिंदुस्तान में ये कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि ये नरेंद्र मोदी के दोस्त हैं। अडाणी-अंबानी चीन का माल भारत में बेचते हैं, खुद कमाई करते हैं और रोजगार चीन के युवाओं को मिलता है, जबकि यहां के युवा बेरोजगार घूम रहे हैं। ये हिंदुस्तान की सच्चाई है। इस देश के युवा को रोजगार नहीं मिल रहा है, इसे छिपाया नहीं जा सकता है। जातिगत जनगणना से पता चल जाएगा कि किसको फायदा मिल रहा है और किसके साथ अन्याय हो रहा है।

## भाजपा की प्रतिक्रिया

खैर राहुल गांधी ने सरेंडर की बात कही तो भाजपा सांसद संबित पात्रा ने पलटवार किया। पात्रा ने कहा कि राहुल गांधी ने ऑपरेशन सिंदूर का मजाक बनाकर हमारी सेना और देश का अपमान किया है। कोई भी 'सभ्य राजनेता' अपने देश के लिए इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता है। भारत ने कभी सरेंडर किया होगा, लेकिन नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए के डीएनए में सरेंडर करना नहीं है। फिर अगर कोई नेता इस तरह के 'सरेंडर' शब्द का इस्तेमाल कर रहा है तो वह राजनीति करने लायक ही नहीं है। पात्रा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने पहलगाम हमले का बदला लिया था, जिसमें पाकिस्तान में 9 आतंकवादी ठिकाने और 11 एयरबेस तबाह किए थे। पाकिस्तान सरकार ने अपने डोजियर में 28 ठिकानों पर भारतीय सेना के हमले का उल्लेख किया है। यानी भारत ने जितना पाकिस्तान को ठोका उतना बताया भी नहीं था, लेकिन पाकिस्तान ने अपनी बर्बादी के सारे सबूत दे दिए, इसलिए भारत में सबूत गैंग का मुंह बंद है। भाजपा के प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि कांग्रेस के ही कई नेता जैसे शशि थरूर, मनीष तिवारी और सलमान खुर्शीद ने साफ किया है कि ऑपरेशन सिंदूर को रोकने के लिए किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता नहीं हुई थी। किंतु लीडर ऑफ ऑपोजीशन तो लीडर ऑफ पाकिस्तान प्रोपेगंडा के तौर पर काम कर रहे हैं। पूनावाला ने राहुल पर विदेशी मंचों पर भारत को बदनाम करने और पाकिस्तान के पक्ष में मजबूती से बोलने का आरोप लगाया है। ●

खौफनाक

# हनीमून मर्डर मिस्ट्री

**23 मई से राजा के कत्ल की कहानी शुरू होती है, 2 जून को उसकी डेडबॉडी मिलती है और 8 जून को हनीमून पर साथ गई पत्नी सोनम शिलांग से करीब 1200 किलोमीटर दूर यूपी के गाजीपुर जिले में शिवा ढाबे पर बदहवास हालत में मिली, लेकिन ये सब पहले से बने प्लान का एक हिस्सा है।**

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

जगह मध्य प्रदेश का इंदौर शहर तारीख 11 मई राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी का परिवार बेहद खुश था, रिश्तेदारों व दोस्तों में उत्साह था। राजा और सोनम का यह साधारण विवाह था। लेकिन किसी को क्या पता था कि महज 11 दिनों में ही यह शादी देश की सुर्खियों में होगी। इंदौर से पहले गुवाहाटी और फिर मेघालय हनीमून के लिए गए राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की कहानी ने पूरे देश को झकझोर दिया। एक सपनों भरा हनीमून, जो खुशियों का प्रतीक होना चाहिए था, वो भयानक विपत्ति, दुर्भाग्य, आपदा, सर्वनाश और रहस्यमयी क्रूर हत्याकांड में बदल गया। इस मर्डर मिस्ट्री को सुलझाने के लिए मेघालय, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश पुलिस को जांच में शामिल होना पड़ा। रहस्य की बात ये है कि हनीमून की पूरी प्लानिंग बेरहम और शातिर सोनम ने की थी। शिलांग जाने के टिकट से लेकर होटल बुकिंग तक सब कुछ सोनम के नाम से हुआ था। जाने के टिकट तो बुक कराए, लेकिन लौटने के टिकट सोनम ने बुक नहीं कराए थे। यहीं से साजिश की नींव रखी गई थी। शादी के ठीक 11 दिन बाद 23 मई को राजा और सोनम मेघालय के शिलांग में डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज, नोंग्रियाट गांव घूमने गए। यही वही जगह है, जो इस हत्याकांड की साइलेंट गवाह है। 23 मई से दोनों का संपर्क अचानक परिवार से टूट गया। हालांकि शिलांग घूमने के लिए सोनम ने जो स्कूटी किराये पर ली थी वो अगले दिन 24 मई को सोहरा के पास एक सुनसान जगह पर लावारिस हालत में मिली। यही वो पहली कड़ी थी जिसने पुलिस को मामले की गंभीरता का अहसास कराया। लिहाजा लापता दंपती के संबंध में केस दर्ज किया गया। इसके बाद मेघालय पुलिस ने आपरेशन हनीमून शुरू किया। राजा और सोनम के परिवार भी इंदौर से शिलांग पहुंच गए।

### हत्या का प्लान ए और बी

मीडिया ने इस केस की लापता कपल के रोमांचक एंगल से कवरेज शुरू कर दी। फिर 2 जून को मेघालय पुलिस को वेईसावडॉन्ग वॉटरफॉल के पास गहरी खाई में एक अज्ञात शव मिला। शव की हालत खराब थी, पहचान करना मुश्किल था, लेकिन राजा के हाथ पर गुदे राजा टैटू ने उसकी पहचान पक्की कर दी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हत्या की पुष्टि हुई, यानी राजा की मौत सिर में गहरी चोट और खाई में गिरने से हुई थी। राजा रघुवंशी की लाश तो मिल गई, लेकिन सोनम गायब थी। पुलिस ने कई एंगल से इंवेस्टीगेशन शुरू किया। पुलिस सोनम की लोकेशन ट्रेस करने लगी। पुलिस ने राजा और सोनम के सोशल मीडिया अकाउंट खंगालने शुरू किए। कॉल डिटेल निकाली गई, इसके बाद पुलिस के शक की सुई सोनम पर घूमने लगी। पुलिस ने सोनम रघुवंशी और उनके प्रेमी राज कुशवाहा के इर्द-गिर्द इस सनसनीखेज हत्याकांड की साजिश, विश्वासघात और क्रूरता की परतें खोली तो हर कोई सन्न रह गया। राजा रघुवंशी मर्डर केस की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ी, रोज नए खुलासे हुए, खुलासे भी चौंकाने वाले। यीनी राजा के मर्डर की प्लानिंग, फिर भागने की स्क्रिप्ट ऐसे लिखी गई, जैसे किसी पेशेवर क्रिमिनल ने इसे तैयार किया हो। कब, कहां, क्या करना है? ये सब पहले से तय था, कैसे भागना है, भागकर कहां जाना है? ये भी इसी प्लान का हिस्सा था।

### कॉल डिटेल्स से हत्या का खुलासा

23 मई से राजा के कत्ल की कहानी की शुरुआत होती है। 2 जून को उसकी डेडबॉडी मिलती है और 8 जून को हनीमून पर साथ गई पत्नी सोनम शिलांग से करीब 1200 किलोमीटर दूर यूपी के गाजीपुर जिले में वाराणसी-गोरखपुर हाईवे के शिवा ढाबे पर डरी-सहमी बदहवास हालत में मिलती है, लेकिन उसका इस तरह से मिलना भी प्लान का एक हिस्सा था, जो उसने अपने आप को बेगुनाह साबित करने के लिए बनाया था।

**सोनम के दो प्लान थे प्लान ए में सुपारी किलर से राजा की हत्या कराना था, जबकि प्लान बी में सुपारी किलर मुकर जाते या चूक जाते तो सोनम खुद राजा को सेल्फी लेने के बहाने पहाड़ के किनारे ले जाती और मौका देखकर उसे धक्का दे देती, सोनम के दोनों प्लान ऐसे थे, जिनमें राजा रघुवंशी के बचने की कोई गुंजाइश नहीं थी।**

लेकिन शिलांग पुलिस ने इस केस की तह तक जाने के लिए पूरी ताकत लगा दी। सोनम के मिलने से पहले ही उसकी कॉल डिटेल्स के आधार पर शिलांग पुलिस ने 8 मई को दिन में उसके प्रेमी राज कुशवाह को गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस को काल डिटेल से ही पता चला कि राजा की हत्या और शव मिलने के बीच सोनम की राज से फोन पर लंबी बातचीत हुई थी। राज कुशवाह की गिरफ्तारी की खबर मिलने पर सोनम को अहसास हो गया कि अब उसका बचना मुस्किल है लिहाजा 8 मई की रात एक बजे वो काशी ढाबे पर पहुंची और स्क्रिप्ट के मुताबिक हनीमून से लेकर लूटपाट, हत्या व अपहरण की कहानी सुनाई। गाजीपुर पुलिस उसे अपने साथ ले गई। सोनम के मिलने के बाद राज कुशवाह और सोनम की वीडियो कॉल से बात करवाई गई। सोनम से कहा गया कि तुम्हारे प्रेमी राज ने हमें सब बता दिया है। अब तुम बताओ, इसके बाद सोनम ने सारी सच्चाई उगल दी। सोनम हर हाल में राजा रघुवंशी को मौत के घाट उतारना चाहती थी। इसलिए उसने हत्या के लिए दो प्लान बनाए थे। प्लान ए में सुपारी किलर से राजा की हत्या कराना था। जबकि प्लान बी में अगर हत्यारे राजा की हत्या करने से मुकर जाते या चूक जाते तो सोनम खुद इस हत्या को अंजाम देती। वह राजा को सेल्फी लेने के बहाने पहाड़ के किनारे लेकर जाती और मौका देखकर उसे धक्का दे देती। सोनम के दोनों प्लान ऐसे थे, जिनमें राजा रघुवंशी के बचने की कोई गुंजाइश नहीं थी। पति की हत्या के लिए शिलांग को इसलिए चुना गया क्योंकि एक साल पहले सोनम अपने परिवार के साथ यहां घूमने गई थी और यहां की पहाड़ियों से अच्छी तरह वाकिफ थी।

### सुपारी में राजा के पर्स से दिए 15 हजार

शिलांग पुलिस के हवाले से राजा रघुवंशी के भाई विपिन रघुवंशी ने मीडिया को बताया कि सोनम ने ऑनलाइन स्थानीय हथियार दाओ मंगवाया और फोटोशूट के बहाने राजा को एक सुनसान पहाड़ी पर ले गई जहां तीनों सुपारी किलर ने उस पर हमला कर दिया। राजा पर जब हमला किया, तो वो अकेले तीनों सुपारी किलर से भिड़ गया। तब सोनम जोर से चिल्लाई मार डालो इसे। फिर पीछे से विशाल ने धारदार हथियार से हमला किया और राजा की सांसे थम गई। लाश को ठिकाने लगाने के लिए तीनों सुपारी किलर राजा को खाई में फेंक नहीं पाए तो सोनम ने पति को खाई में फेंकने में मदद की। शिलांग पुलिस का दावा है कि सुपारी किलर पहाड़ चढ़ते-चढ़ते थक गए थे, लिहाजा उन्होंने हत्या से मना कर दिया था कि वो राजा की हत्या नहीं करेंगे, लेकिन सोनम ने उनको पैसों का लालच दिया, उसने वादा किया कि अगर वो राजा की हत्या करेंगे तो वो उन्हें तय रकम 50 हजार रुपये से 40 गुना राशि देगी। यानी सोनम ने कहा की मैं 20 लाख दूंगी, पर मारना तो पड़ेगा। सोनम ने राजा के ही पर्स से 15 हजार रुपये निकालकर सुपारी किलर को दिए भी। विपिन का कहना है कि सोनम अपने प्रेमी राज कुशवाह के गांव के करीब मिली इससे साफ है कि उसने राजा की हत्या के बाद राज के घर शरण ली थी। विपिन रघुवंशी का कहना है कि राजा की शादी से पहले उन्होंने सोनम के परिवार की पृष्ठभूमि की जांच की थी, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि सोनम ऐसी निकलेगी। विपिन ने सोनम की मां पर आरोप लगाया की उनसे सोनम के अफेयर बातें छिपाई, जबकि वो सोनम के अफेयर के बारे में सब जानती थी। सोनम ने अपनी मां से कहा था कि अगर शादी जबरन की तो इसका नतीजा बुरा होगा। राजा रघुवंशी की मां उमा रघुवंशी कहती है कि वो अपने घर में बहु नहीं बल्कि हैवान लाई, जिसने उनके बेटे की जान ले ली। जिस दिन राजा की हत्या की उसी दिन राजा की मां उमा रघुवंशी ने सोनम से बात की थी, तब सोनम ने बताया था की उसका एकादशी का व्रत है, घूमने के चक्कर में वो अपना व्रत नहीं छोड़ सकती। जब व्रत की बात कर रही थी तब वो राजा को हत्या के लिए पहाड़ी पर ले जा रही थी। हनीमून के लिए 20 मई को घर से निकलने के बाद राजा लगातार परिवार के संपर्क में था। जब एयरपोर्ट पहुंचा तो उसने अपनी एक तस्वीर मां उमा रघुवंशी को भेजी। तस्वीर में राजा के गले में सोने की चेन देखते ही मां ने राजा को फोन पर डांटते हुए पूछा कि वो सोने की चेन पहनकर क्यों गया है? इस पर राजा ने जवाब दिया कि सोनम ने उससे चेन पहनने के लिए कहा था। इसके बाद राजा की मां ने सोनम की मां को फोन लगाया और कहा कि बाहर जाते समय कीमती जेवर पहनकर जाना खतरनाक है। उन्हें डर लग रहा है, चेन पहनकर नहीं जाना चाहिए था। हत्या की परते खुली तो पता चला कि सोनम और राजा रघुवंशी के पास 10 लाख रुपये के सोने के जेवर थे। राजा ने हीरे की अंगूठी, एक चेन और एक ब्रेसलेट पहन रखा था। लेकिन 2 जून को जब राजा रघुवंशी की लाश खाई में मिली, तो सोने की यही चेन, हीरे की अंगूठी, ब्रेसलेट और उसका पर्स गायब था।

- **राज कुशवाह और सोनम की जाति अलग हैं, फिर राज उम्र में सोनम से पांच साल छोटा है, इसलिए पिता देवी सिंह रघुवंशी अपने नौकर राज के साथ सोनम की शादी के खिलाफ थे, लिहाजा सोनम का प्लान था कि विधवा होने के बाद उसके पिता राज से शादी के लिए मान जाएंगे।**
- **पुलिस ने राजा और सोनम के सोशल मीडिया अकाउंट खंगालने, कॉल डिटेल निकाली और शक की सुई सोनम रघुवंशी और उसके प्रेमी राज कुशवाहा के इर्द-गिर्द घूमने लगी और इस सनसनीखेज हत्याकांड की साजिश की परतें खुली तो हर कोई सन्न रह गया।**

### सोनम क्यों होना चाहती थी विधवा?

अगर सोनम-राजा से शादी नहीं करना चाहती थी तो, फिर उसने राजा से शादी क्यों की? सवाल ये भी कि क्या सोनम ने शादी से पहले तय कर लिया था कि उसे विधवा होना है और अपने पति की जान लेनी है? सवाल ये भी आखिर विधवा होने से सोनम को क्या फायदा था? सवाल ये भी कि जिस राज कुशवाह को सोनम का ब्वॉय फ्रेंड बताया जा रहा था, उससे सोनम का असली रिश्ता क्या है? राज, सोनम का प्रेमी है या भाई? क्योंकि वो तीन साल से राज कुशवाह को राखी भी बांध रही थी। सोनम जो भी कर रही थी वो सब उसकी लिखी स्क्रिप्ट का हिस्सा था। उसकी स्क्रिप्ट भी बॉलीवुड की किसी सस्पेंस थ्रिलर फिल्म की तरह है। यानी सोनम अपने पति राजा की मौत को हादसा दिखाकर विधवा बनती और फिर विधवा राज कुशवाह के साथ विधवा विवाह करना चाहती थी। ऐसे में हर किसी के जहन में सवाल उठेगा कि राज कुशवाहा से ही शादी करनी थी तो फिर विधवा होने की क्या जरूरत थी। इसका जवाब बड़ा आसान है सोनम जानती थी की उसका परिवार राज कुशवाह से शादी का विरोध कर रहा है। क्योंकि राज कुशवाह और सोनम रघुवंशी की जाति अलग हैं। फिर राज उम्र में सोनम से पांच साल छोटा है। सोनम के पिता देवी सिंह रघुवंशी अपने नौकर राज के साथ सोनम की शादी के खिलाफ थे। इसलिए सोनम का प्लान था कि विधवा होने के बाद उसके पिता राज से शादी करने के लिए मान जाएंगे। ●

# हनीमून या हनीखून

**2 जून को इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की लाश मेघालय में चेरापूंजी के पास सोहरारिम में एक खाई में मिली और उसकी पत्नी सोनम लापता थी, यानी शिलांग से दोनों गायब हो गए थे, इस घटना का खुलासा करने के लिए मध्य प्रदेश से लेकर मेघालय तक की पुलिस सक्रिय थी।**

पाकिस्तान के आतंकियों ने पहलगाम में भारत की 26 बेटियों के मांग का सिंदूर उजाड़ा तो हर देशवासी का खून खौल उठा, लेकिन इंदौर से शिलांग हनीमून मनाने गई सोनम रघुवंशी ने तो खुद सुपारी देकर अपनी मांग के सिंदूर को ऊंची पहाड़ी से खाई में फेंक दिया। उत्तर प्रदेश के मेरठ में सनसनीखेज सौरभ हत्याकांड को लोग अभी शायद भूले भी नहीं होंगे कि 2 जून को मेघालय के शिलांग में हनीमून मनाने गए ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की लाश खाई में मिलने और उसकी पत्नी सोनम रघुवंशी के गायब होने एक बार फिर सनसनी फैल गई। दरअसल 11 मई को ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी और सोनम की शादी इंदौर में बेहद खुशी के माहौल में हुई थी। शादी के 9 दिन बाद यानी 20 मई को यह नवविवाहित जोड़ा हनीमून के लिए मेघालय रवाना हुआ। 23 मई को दोनों को शिलांग के प्रसिद्ध नोंग्रियाट गांव में डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज देखने के दौरान आखिरी बार देखा गया था। इसके बाद से दोनों लापता हो गए। 2 जून को राजा रघुवंशी की लाश मेघालय में चेरापूंजी के पास सोहरारिम में एक खाई में मिली और सोनम लापता। इस घटना का खुलासा करने के लिए मेघालय से लेकर मध्य प्रदेश तक की पुलिस सक्रिय हुई। मध्य प्रदेश के सीएम मोहन यादव ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से राजा रघुवंशी हत्याकांड की सीबीआई जांच की सिफारिश कर दी। क्योंकि राजा रघुवंशी और सोनम का परिवार मेघालय पुलिस पर सवालिया निशान लगा रहा था। लेकिन पुलिस आरोपों की परवाह किए बिना अपने मिशन में लगी रही। 8 जून को इस हत्याकांड में नया मोड़ आया और सोनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में काशी ढाबे पर बदहवाली की हालत में पहुंची। ढाबे के संचालक साहिल यादव से मोबाइल फोन लेकर अपने भाई से बात की। ढाबा संचालक साहिल का कहना है कि सोनम ने जब उनके मोबाइल से बात कर रही थी तब वह फूट-फूट कर रोने लगी थी। सोनम के सामने आने के बाद जो खुलासा हुआ वो हकीकत में रोंगटे खड़े करने वाला है। जिस राजा रघुवंशी के नाम का सिंदूर सोनम ने अपनी मांग में भरा था उस राजा के खून से सोनम ने अपने हाथ रंग लिए। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि यदि राजा रघुवंशी उसे पसंद नहीं था तो उससे शादी क्यों की? यदि किसी दबाव में शादी की तो वो उसे तलाक क्यों नहीं दे दी? क्या सोनम एक क्रूर लड़की है जिसे अपने सुहाग की हत्या जरा भी दर्द नहीं हुआ? क्या वो शादी से पहले अपने प्रेमी के साथ घर से फरार नहीं हो सकती थी? ऐसा करने से जहां राजा रघुवंशी आज जिंदा होता वहीं सोनम को जेल की सलाखों के पीछे नहीं जाना पड़ता।

**सोनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से पकड़ी गई तो पुलिस के भी होश उड़ गए, क्योंकि हनीमून के लिए मेघालय गई सोनम ने ही खुद अपनी मांग का सिंदूर उजाड़ा था, मेघालय के डीजीपी के हवाले से कहा गया है कि सुपारी किलर के जरिए सोनम रघुवंशी ने अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या कराई है।**

### मेघालय पुलिस के रडार पर थी सोनम

सोनम को मेघालय पुलिस अपने साथ शिलांग ले गई है। मेघालय के डीजीपी के हवाले से कहा गया है कि सुपारी किलर के जरिए सोनम रघुवंशी ने अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या कराई है। डीजीपी आई नोंगरांग ने दावा किया कि पुलिस ने चर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड में बड़ी कामयाबी हासिल कर ली है। पुलिस ने इस मामले में राजा की पत्नी सोनम उसके प्रेमी यूपी के गाजीपुर निवासी राज कुशवाह, सुपारी किलर मध्य प्रदेश आकाश राजपूत और विशाल चौहान को गिरफ्तार कर लिया है। इनकी गिरफ्तारी के बाद जो तथ्य सामने उससे साफ होता है कि सोनम ही पति के मर्डर की मास्टरमाइंड है उसने ही भाड़े के हत्यारे बुलाए थे। इससे पहले शिलांग पुलिस ने मावलखियात के एक टूरिस्ट गाइड अल्बर्ट पीडी से पूछताछ करने के बाद कहा था कि इंदौर निवासी राजा रघुवंशी और सोनम यहां हनीमून मनाने आए थे, उनके साथ तीन अन्य पुरुष भी दिखाई दिए थे। गाइड ने पुलिस को बताया था कि 23 मई की सुबह करीब 10 बजे सोनम और राजा को तीन अन्य पुरुषों के साथ नोंग्रियात से मावलखियात तक 3000 से अधिक सीढ़ियां चढ़ते हुए उसने देखा था। चारों पुरुष आगे चल रहे थे, जबकि महिला पीछे थी। चारों पुरुष हिंदी में बातचीत कर रहे थे, लेकिन मैं समझ नहीं पाया कि वे क्या बोल रहे थे, क्योंकि मैं केवल खासी और अंग्रेजी ही जानता हूं। उसने कपल को पहचानते हुए पुलिस को बताया था कि पिछले दिन उन्हें नोंग्रियात तक उतरने के लिए उसने अपनी सेवाएं देने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया था और एक अन्य गाइड को काम पर रखा था। इसके बाद मेघालय पुलिस के रडार पर सोनम रघुवशी थी, लेकिन वह मेघालय छोड़ कर अपने प्रेमी राज कुशवाह के घर गाजीपुर पहुंच गई थी, लिहाजा हत्या की गुत्थी सुलझनी मुश्किल हो रही थी। 17 दिनों से फरार चल रही सोनम शातिर अंदाज में सामने आई। उसने गाजीपुर से अपने भाई से तब संपर्क किया जब उसका प्रेमी राज कुशवाह को इंदौर पुलिस ने पकड़ लिया। जैसे ही सोनम यूपी के गाजीपुर में मिली राजा हत्याकांड से पर्दा उठ गया। पूछताछ करने पर पता चला है कि सोनम ने ही अपने पति की हत्या की साजिश रची थी। उसने हत्या के लिए मेघालय के स्थानीय लोगों द्वारा रखे जाने वाला धारदार हथियार का इस्तेमाल कराया ताकि पुलिस को गुमराह किया जा सके। हत्या में स्थानीय लुटेरों या बदमाशों का हाथ साबित किया जा सके। इस पर भी हालांकि सोनम के पिता देवी सिंह रघुवंशी का कहना है कि पुलिस गलत दावे कर रही है। इस मामले की सीबीआई जांच होनी चाहिए।

### बड़ी शातिर निकली सोनम रघुवंशी

पुलिस की थ्योरी के मुताबिक सोनम रघुवंशी का राज नाम के शख्स के साथ अफेयर था। ऐसे में सोनम ने राज के साथ मिलकर हत्यारों को सुपारी दी और राजा रघुवंशी की हत्या करवा दी। लेकिन सोनम ने एक नई स्क्रिप्ट पहले से ही तैयार कर रखी थी जो उसने अपने भाई गोविंद तथा काशी ढाबे के संचालक साहिल यादव से साझा की। उसने गिरफ्तारी से पहले ढाबे वाले को अपनी कहानी बयां करते हुए बताया कि मई में उसकी शादी हुई थी। इसके कुछ दिन बाद ही वह अपने पति के साथ मेघालय घूमने गई थी। वहां पर उसके जेवर लूटने की कोशिश की गई। सोनम ने ढाबे वाले को रोते हुए बताया कि जो लुटेरे उनके पास आए थे उन्होंने पहले जेवर लूट लिए। इसके बाद मेरे सामने ही राजा की बेरहमी से हत्या कर दी। हत्या के दौरान मैं बेहोश हो गई। मुझे अज्ञात हत्यारे उठाकर ले गए और उसे एक कमरे में कई दिनों तक बंद रखा। अपहरण करने के बाद मुझे हत्यारे गाजीपुर लाए और यहां छोड़कर चले गए। जब ढाबे वाले ने उससे पूछा कि वह ढाबे तक कैसे पहुंची तो वो कोई उत्तर नहीं दे पाई। इसके बाद आधी रात के बाद गाजीपुर पुलिस काशी ढाबे पर पहुंची और सोनम को अपने साथ थाने ले गई। 8 जून की देर रात गाजीपुर पुलिस ने ही सोनम के भाई गोविंद को सूचना दी, कि आपकी बहन ढाबे पर मिली है। हैरानी की बात ये है कि जिस काशी ढाबे पर सोनम मिली उससे 20 किलोमीटर दूर ही सोनम के प्रेमी राज कुशवाह का गांव है। सोनम के सामने आने पर पुलिस ने राज कुशवाह और सोनम के बीच हुई चैट को खंगाला तो राजा की हत्या की साजिश की परते खुलने लगी। चैट से खुलासा हुआ है कि सोनम ने शादी के 3 दिन बाद ही अपने प्रेमी राज से मिलकर पति राजा की हत्या की योजना बनाई थी। राज और सोनम ने इसको लेकर काफी चैट्स की थीं। शादी के 3 दिन बाद ही सोनम ने प्रेमी राज से कह दिया था कि वह उसके पति राजा को मार दें। सोनम ने राज कुशवाहा के साथ चैट में लिखा था कि उसका पति राजा उसके करीब आ रहा है, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं आ रहा है। शादी से पहले ही सोनम ने राजा से दूरी बनानी शुरू कर दी थी। ऐसे में जब शादी हुई तो राजा का उसके करीब आना, सोनम को बिल्कुल पसंद नहीं आया। इसके बाद ही सोनम अपने पति राजा रघुवंशी के खिलाफ योजना बनाने लगी और उसकी हत्या की साजिश रच डाली।

### शादी से पहले मर्डर का प्लान

इंदौर पुलिस का कहना है कि इंदौर में सोनम के पिता देवी सिंह रघुवंशी का प्लाईवुड का बिजनेस है। यहीं पर सोनम एचआर हेड थी और राज कुशवाह मैनेजर था, जो उम्र में सोनम से पांच साल छोटा है। काम के दौरान सोनम और राज का मिलना होता था। खूब बातें होती थीं, फिर दोनों में प्रेम हो गया। ये सब देवी सिंह को पता चला तो उसने सोनम की शादी राजा रघुवंशी के साथ फिक्स कर दी। दोनों परिवारों की सहमति से राजा और सोनम की शादी 11 मई को इंदौर में धूमधाम से हुई। शातिर सोनम अपने पिता से बगावत करने के बजाये राजा रघुवंशी के मर्डर का षडयंत्र रचना शुरू कर दिया। सोनम ने राजा के मर्डर की ऐसी साजिश रची कि किसी को भी उन पर शक न हो, इसलिए उसने राजा का मर्डर कराने के लिए सुपारी किलर हायर किए। सोनम ने वारदात की जगह ऐसी चुनी कि राजा की लाश तक किसी को न मिले। उसने खुद शिलांग जाने के लिए टिकट बुक किए, लेकिन वापसी के टिकट बुक नहीं किए। राजा रघुवंशी को न चाहते हुए भी हनीमून के लिए शिलांग जाना पड़ा जहां मौत उसका इंतजार कर रही थी। सोनम साजिश के तहत राजा को शिलांग के पहाड़ों पर ले गई। यहीं पर सुपारी किलर्स ने राजा की गर्दन रेत कर हत्या कर लाश खाई में फेंक दी और सोनम व सुपारी किलर फरार हो गए। 2 जून को मेघालय पुलिस को राजा की लाश सड़ी-गली हालत में मिली थी। पुलिस ने शव की शिनाख्त कराकर इंदौर पुलिस के माध्यम से राजा और सोनम के परिजनों को घटना की जानकारी दी। जिसके बाद दोनों के परिजन शिलांग पहुंच गए और लापता सोनम की तलाश में जुट गए। शैतान सोनम ने साजिश के तहत राज कुशवाह को शिलांग नहीं बुलाया, वो इंदौर में ही रहा और राजा रघुवंशी के अंतिम संस्कार तक में शामिल हुआ। वो इंदौर के एक-एक घटनाक्रम की जानकारी सोनम तक पहुंचाता रहा। लेकिन दोनों की प्रेम कहानी सामने आई तो रहस्यमयी घटना से पर्दा उठ गया। ●

- **इंदौर में सोनम के पिता का प्लाईवुड का बिजनेस है, यहीं पर राज कुशवाह जॉब करता है, जो उम्र में सोनम से पांच साल छोटा है, काम के दौरान सोनम और राज का अक्सर आमना-सामना होता था, खूब बातें भी होती थीं, फिर दोनों में प्रेम हो गया।**
- **सोनम ने वारदात की जगह ऐसी चुनी कि राजा की लाश तक किसी को न मिले, इसके लिए उसने राजा की इच्छा के विरुद्ध हनीमून डेस्टिनेशन शिलांग चुना, वह साजिश के तहत राजा को शिलांग के पहाड़ों पर ले गई, जहां सुपारी किलर्स ने राजा की हत्या कर लाश को खाई में फेंक दिया।**

सिस्टम

# सच में ये अंधा कानून है...?

**104 वर्षीय लखन सरोज की कहानी हमारी न्यायिक व्यवस्था पर सवाल है, जिसने लखन सरोद को ऐसा जीवन जीने को विवश किया जो 48 साल में कई बार जेल गया और कोर्ट में धक्के खाता रहा, मगर उसने न हिम्मत हारी, न उम्मीद छोड़ी, जब वो सौ वर्ष की आयु पार कर चुका तब प्रयागराज हाईकोर्ट ने उसे हत्या के आरोप से बाइज्जत बरी किया।**

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

1983 में हिंदी फिल्म अंधा कानून आई थी। जिसका निर्देशन रामाराव तातिनैनी ने किया था और फिल्म की कहानी जाननिसार अख्तर खान ने लिखी थी। फिल्म अंधा कानून में महानायक अमिताभ बच्चन की कहानी भी थी, जो एक वन अधिकारी की भूमिका में थे, जो एक ऐसी हत्या के लिए जेल में बंद हो जाते हैं, जो उन्होंने की ही नहीं थी। अपनी पत्नी (माधवी) और छोटी बेटी को खोने के बाद, वह अपनी जेल की सजा पूरी करते हैं और बाहर आकर पाते हैं कि खतरनाक अपराधी (अमरीश पुरी) राजनीतिज्ञ बन गया है। एक खौफनाक दृश्य में, अमिताभ बच्चन भरी अदालत में उस अपराधी (अमरीश पुरी) की बेरहमी से हत्या कर देते हैं और हैरान जज से कहते हैं कि उन्हें एक ही अपराध के लिए दो बार फांसी नहीं दी जा सकती। यानी इस फिल्म में भी एक बेकसूर किरदार को हत्या के आरोप में जेल की सजा काटनी पड़ती है, लेकिन यह सिर्फ बॉलीवुड द्वारा दिखाई गई न्यायिक व्यवस्था नहीं थी, बल्कि न्यायिक व्यवस्था को दिखाया गया आइना था। न्यायिक व्यवस्था पर आम तौर पर सवाल उठाने से लोग बचते हैं। कहावत है कि समय कभी रुकता नहीं, लेकिन इंसाफ अगर रुक जाए, तो जिंदगियां थम जाती हैं। उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले के गौराय गांव में रहने वाले 104 वर्षीय लखन सरोज की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। जिसे हमारी न्यायिक व्यवस्था ने एक ऐसा जीवन जीने को विवश किया जो 48 साल में कई बार जेल की सलाखों के पीछे गया और अदालतों में धक्के खाता रहा। मगर लखन सरोज ने न हिम्मत हारी, न उम्मीद छोड़ी। जब वो अपने जीवन के सौ वर्ष पार कर चुका तब प्रयागराज हाईकोर्ट ने उसे हत्या के आरोप से बाइज्जत बरी कर दिया। इससे न्यायपालिका पर सवाल तो उठेंगे ही। क्योंकि आतंकवादियों की सुनवाई के लिए आधी रात को भी देश की सबसे बड़ी अदालत सुनवाई करती है, लेकिन एक बेकसूर को यही अदालत 48 साल तक अदालतों और पुलिस स्टेशनों के धक्के खाने तथा जेल जाने के लिए विवश करती है। आखिर ये कैसा न्याय और न्यायपालिका है?

### क्या इसे इंसाफ कह सकते हैं?

यूपी के कौशांबी जिले के गौराय गांव में रहने वाले लखन सरोज का 1977 में गांव में हुए एक मामूली झगड़े में चोट लगने से गांव के ही प्रभु सरोज की मौत हो गई थी। पीड़ित पक्ष ने लखन सरोज के अलावा गांव के ही कलेसर, देशराज और कल्लू को आरोपी बनाते हुए सराय अकिल थाने में एफआईआर कराई। पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस ने विवेचना कर कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल किया। कुछ दिनों बाद उन्हें जमानत मिल गई, लेकिन मुकदमा चलता रहा। पांच साल बाद 1982 में प्रयागराज की सेशन कोर्ट ने सभी को उम्रकैद की सजा सुना दी। हालांकि लखन सरोज खुद को अदालत के सामने बेकसूर साबित करने के सारे सबूत पेश करता रहा था, लेकिन जिला अदालत ने चारों को हत्या का दोषी पाया। खैर जिला अदालत के आदेश के खिलाफ लखन सरोज प्रयागराज हाईकोर्ट गया और सेशन कोर्ट के फैसले को चुनौती दी। बस यही उससे सबसे बड़ा गुनाह हो गया।

**लखन सरोज को 48 साल बाद इंसाफ देने वाली हाईकोर्ट को क्या न्यायिक प्रक्रिया पर विचार नहीं करना चाहिए? क्योंकि लखन ने जीवन की आधी उम्र तो मुकदमे और जेल में बिताई है, उसने व उसके परिवार ने मुकदमेबाजी में आर्थिक, मानसिक व शारीरिक तथा सामाजिक पीड़ा भी उठाई।**

प्रयागराज हाईकोर्ट से 48 साल तक उसे तारीखइसके बाद लखन प्रयागराज की नैनी और फिर कौशांबी की मंझनपुर जेल में रहा। पर तारीख मिलती रही। लखन सरोज के खिलाफ जिस समय मुकदमा लिखा गया था उस वक्त वो 56 वर्ष का था। 48 साल बाद हाईकोर्ट ने जब उसे बाइज्जत बरी किया तो वह 104 वर्ष का हो चुका है। इससे सवाल उठता है कि क्या यही हमारी न्याय व्यवस्था है? क्योंकि इस तरह की न्याय व्यवस्था से तो दोनों ही पक्ष को इंसाफ पाने में दो पीढ़िया खप गई। क्या न्याय मिला? इसे क्या इंसाफ कहा जा सकता है? लखन सरोज को 48 साल बाद इंसाफ देने वाली हाईकोर्ट को क्या न्यायिक व्यवस्था पर गहन विचार करने की आवश्यकता नहीं है? क्योंकि लखन सरोज ने अपने जीवन की आधी उम्र तो मुकदमे और जेल में बिताई है। उसे व उसके परिवार को मुकदमेबाजी में आर्थिक नुकसान भी हुआ है, उसका परिवार और वो खुद मानसिक व शारीरिक तथा सामाजिक पीड़ा से ग्रस्त भी रहे हैं। इस पर भी मीडिया में खबरें आ रही है कि न्यायपालिका ने 48 साल बाद हत्यारोपी को बाइज्जत बरी किया है। इस हिसाब से तो न्यायपालिका के इस फैसले को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज कराया जाना चाहिए। क्योंकि इससे बड़ी शर्म की बात हमारे सिस्टम के लिए कोई और नहीं हो सकती। शायद ही दुनिया के किसी देश में मामूली से झगड़े में एक व्यक्ति की मौत होने पर किसी बेकसूर को 48 साल तक प्रताड़ित किए जाने का उदहारण मिलेगा। वो भी तब जब वादी पक्ष ने सेशन कोर्ट के फैसले के बाद मुकदमे की पैरवी ही छोड़ दी थी। यानी हाईकोर्ट में वादी पक्ष नहीं गया था। यही कोर्ट है जो कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी की वक्फ कानून संबंधी याचिका पर तत्काल सुनवाई करने और फैसला देने के लिए तैयार रहता है। इसके बावजूद सरकारी नारा है कि गरीबों को त्वरित न्याय दिया जा रहा है।

### आखिर झगड़ा क्या था?

अब हर किसी के जहन में एक सवाल उठ रहा होगा कि आखिर 48 साल तक यह केस कैसे और क्यों खिंचा? विवाद क्या था, जिसमें हत्या तक हो गई? लखन ही क्यों आरोपी बनाए गए? जिनके परिवार से विवाद था, अब उनका क्या हाल है? ऐसे सवालों के जवाब मीडिया रिपोर्ट से मिल रहे हैं। दरअसल 1977 में गांव के दो पक्षों में मारपीट में हुई थी। जिसमें प्रभु सरोज को चोट लगी थी और बाद में उसकी मौत हो गई थी। 1977 में जिस समय यह झगड़ा हुआ था, उस वक्त कौशांबी जिला नहीं बना था। 4 अप्रैल, 1997 को यह जिला बना। लखन सरोज का घर इसी कौशांबी जिले के गौराय गांव में है और कौशांबी थाना क्षेत्र में आता है। लखन सरोज अब इस गांव में नहीं रहता। उसने दो शादियां की थी पहली पत्नी से उसका एक बेटा है और दूसरी पत्नी से 5 बेटियां है। बेटा लखन सरोज से संबंध नहीं रखता, लिहाजा लखन बारी-बारी से बेटियों के घर रहता हैं। 104 साल के लखन के पैर में अब हमेशा दर्द रहता है। फिलहाल वह चौथे नंबर की बेटी आशा के पास है। मीडिया से मुलाकात होने पर सबसे पहले यही सवाल किया कि आखिर 1977 में ऐसा क्या झगड़ा हुआ था? इस पर लखन सरोज ने मीडिया को बताया कि गांव में हमारी बिरादरी के जगन और प्रभु सरोज से झगड़ा था। एक बार झगड़ा हुआ, तो उन लोगों ने हमारी चाची का हाथ तोड़ दिया था। इसके बाद फिर झगड़ा हुआ, तो चाचा का पैर तोड़ दिया। हम लोगों को गांव वालों ने झगड़े से रोक दिया था। 6 अगस्त, 1977 को प्रभु सरोज सहित 10-12 लोग शराब पीकर हमारे घर में आ गए। सबके हाथ में लाठी-डंडे थे। मारपीट हुई तो हमारी तरफ से भी लाठी चली। इसी मारपीट में प्रभु सरोज को चोट लगी और बाद में उसकी मौत हो गई। इस मामले में मेरे साथ कलेसर, देशराज और कल्लू को आरोपी बनाया गया। सराय अकिल थाने की पुलिस ने चारों को जेल भेज दिया था। खैर मुकदमा शुरू हो गया जमानत भी मिल गई। लखन सरोज साफ कहता है कि वह पढ़ा लिखा नहीं है इसलिए कोर्ट कचहरी के बारे में ज्यादा नहीं जानता है। मुकदमे की तारीख के बारे में जब भी पुलिस से पूछता तो वो कह देते कुछ नहीं होगा। फिर प्रयागराज सेशन कोर्ट ने उन चारों को आजीवन कारावास की सजा सुना दी। सेशन कोर्ट के फैसले को हाईकोर्ट में चैलेंज किया। वहां केस शुरू हुआ। हमने अलग-अलग समय पर 3-4 वकील किए, लेकिन ज्यादातर पैसा लेकर अलग हो गए। हम जमानत पर बाहर थे। थाने जाकर पुलिसवालों से तारीख के बारे में पूछते तो वो कहते कि अब इस मामले में कुछ नहीं होगा, घर जाओ। हमे कुछ जानकारी नहीं थी इसलिए हर बार घर चले आते और अपनी बेटियों के घर पर रहने लगते। लखन के बेटे ने मुकदमे में उसकी कोई मदद नहीं की, तो बेटियों ने मिलकर मुकदमे की पैरवी की।

ऐसे बेटे से तो बेटियां अच्छी

लखन ने अपनी छोटी बेटी आशा की शादी 2014 में लवकुश से की थी। लवकुश ने मीडिया से कहा कि शादी के बाद ही इस केस के बारे में पता चला। उस समय पुलिस वाले पूछताछ करने घर आते थे, लेकिन ये उन्हें मिलते नहीं थे। पुलिस भी इन्हें पहचानती नहीं थी। इसलिए वह ढूंढ नहीं पाती थी। 2014 में इनके तीसरे नंबर वाले दामाद राजेंद्र कुमार को पुलिस उठाकर ले गई थी। पुलिस ने कहा था कि जब तक लखन सरोज को हाजिर नहीं करोगे, तब तक इन्हें नहीं छोड़ा जाएगा। मजबूरी में लखन सरोज को पुलिस के सामने पेश होना पड़ा और फिर तीन साल जेल की सलाखों के पीछे कटे। लखन ने मीडिया को बताया कि जेल में बुजुर्गों से कोई काम नहीं करवाते थे। 2014 में लखन जब जेल गया था तब वह बूढ़ा था। जेल में वह सबके

**2014 में लखन सरोज के तीसरे नंबर के दामाद राजेंद्र कुमार को पुलिस उठाकर ले गई, पुलिस ने कहा था कि जब तक लखन को हाजिर नहीं करोगे, तब तक इन्हें नहीं छोड़ा जाएगा, मजबूरी में लखन सरोज को पुलिस के सामने पेश होना पड़ा और फिर तीन साल जेल में कटे।**

साथ मिल-जुलकर रहता था। 3 साल तक नैनी जेल में बंद रहा, लेकिन बेटे सूरजबली ने जमानत कराने का कोई प्रयास नहीं किया। बेटियों ने वकील किया तो उसकी जमानत हुई। लखन सरोज से बातचीत से मीडिया को पता चला कि उसे कोर्ट-कचहरी के बारे में वाकई कोई खास जानकारी नहीं थी। इसलिए जब भी उनकी तारीख लगती, वह पहुंच ही नहीं पाता था, इसलिए उनके खिलाफ अलग-अलग समय पर गिरफ्तारी वारंट जारी हो जाते थे। पुलिस उन्हें खोजती थी, लेकिन जो उसका पता था, वहां वह रहते नहीं थे। इसलिए कभी पुलिस उन्हें पकड़ नहीं पाई। दिसंबर, 2024 में हाईकोर्ट के आदेश पर पुलिस ने एक बार फिर से लखन को गिरफ्तार कर मंझनपुर जेल भेजा था। लखन का कहना था कि जिनसे मुकदमेबाजी थी, उन्होंने सेशन कोर्ट तक केस लड़ा। उसके बाद से केस में पैरवी छोड़ दी। इसके बाद यह मुकदमा लखन बनाम स्टेट हो गया। दूसरी तरफ जिन लोगों ने एफआईआर करवाई थी, उन सबकी मौत हो गई। कल्लू और कलेशर की भी मौत हो गई। देशराज की स्थिति ऐसी है कि वह अब बिस्तर से उठ नहीं पाता। इकलौता बेटा पिता का ख्याल नहीं रखता था, इसलिए बेटियों ने पिता का केस लड़ा। अब जब उसे प्रयागराज हाईकोर्ट ने बरी किया तो भी बेटा अपने पिता को लेने के लिए जेल तक नहीं गया। सबसे छोटी बेटी आशा ने ही कोर्ट के कागज तैयार कराए और पिता को जेल से घर ले लाई।

# उत्तराखंड का लद्दाख

**नेलांग घाटी की यात्रा के दौरान सैलानी विश्वनाथ मंदिर, डोडीताल झील, नचिकेता झील, हर की दूं गौमुखी, नेहरु पर्वतारोहण संस्थान, केदार ताली, जलमंगा शिवलिंग, हरसिलो, मनेरी दामो, कंदर देवता मंदिर, जोशीयारा, दयारा बुग्याल, कुट्टी देवी मंदिर, शक्ति मंदिर, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा भी कर सकते हैं।**

अफजल फौजी
नैनीताल

उत्तराखंड की हसीन वादियां आखिर किसे पसंद नहीं है। उत्तराखंड में ऐसे बहुत से इलाके हैं, जो बेहद खूबसूरत हैं। ये सभी जगह वक्त के साथ पर्यटकों के ड्रीम डेस्टिनेशन बनते जा रहे हैं। इनमें से एक है नेलांग घाटी है। अगर गर्मियों के सीजन में कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो नेलांग घाटी जा सकते हैं। यह घाटी कुदरत की खूबसूरती का नायाब नमूना है। कुछ सैलानी तो इसे उत्तराखंड का लद्दाख भी कह देते हैं, तो कुछ बर्फ का रेगिस्तान कहते हैं। 1962 में हुए भारत-चीन युद्ध के बाद इसे आम जनता के लिए बंद कर सेना और आईटीबीपी के हवाले कर दिया गया था। लेकिन दस साल पहले जब देश में मोदी सरकार आई तो पर्यटन को बढ़ावा देने के मकदस से 2015 में पर्यटकों के लिए इसे फिर से खोल दिया गया। यानी 53 साल तक ये खूबसूरत डेस्टिनेशन पर्यटकों के लिए बंद रहा। लेकिन अब यह घाटी पर्यटकों की पहली पसंद बन गई है। चीन से सटे होने के कारण यह चट्टानी इलाका बिल्कुल लद्दाख, स्पीति और तिब्बत जैसा दिखता है। जहां मौसम तो एक जैसा है ही साथ में ऊंची-ऊंची चोटियां भी हैं। इन्हीं खूबियों की वजह से यह घाटी पर्यटकों का ड्रीम डेस्टिनेशन बन चुका है। उत्तरकाशी जिले में नेलांग गांव के पास की जगह को ही नेलांग घाटी कहा जाता है। नदियों का पानी नीला है जिसकी वजह से इस घाटी का नाम नेलांग घाटी रखा गया है। यहां के नेलांग गांव में पोड़िया जाति के लोग रहते हैं, जो आज भी विकास की बयार से दूर हैं। हालांकि यह घाटी गंगोत्री नेशनल पार्क का हिस्सा है। चारों तरफ पहाड़ियों के बीच से हिमालय का दीदार लोगों में एक अलग ही उत्साह और रोमांच पैदा करता हैं। किंतु नेलांग घाटी का रास्ता तमाम खतरों वाला भी है। क्योंकि गहरी खाई और बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच सावधानी से वाहन चलाने की पहली शर्त है। वरना कभी भी सड़क पर पहाड़ की चट्टान से कोई भी पत्थर लुढ़ता हुआ आकर वाहन को नुकसान पहुंचा सकता है। नेलांग घाटी की यात्रा के दौरान सैलानी विश्वनाथ मंदिर, डोडीताल झील, नचिकेता झील, हर की दूं गौमुखी, नेहरू पर्वतारोहण संस्थान, केदार ताली, जलमंगा शिवलिंग, हरसिलो, मनेरी दामो, कंदर देवता मंदिर, जोशीयारा, दयारा बुग्याल, कुट्टी देवी मंदिर, शक्ति मंदिर, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा भी कर सकते हैं।

## नेलांग घाटी टेंट सिटी में रुकें

नेलांग घाटी भारत-तिब्बत सीमा से महज 45 किलोमीटर दूर गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में समुद्र तल से 11,009 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जो उत्तराखंड में उत्तरकाशी का छिपा हुआ खजाना है। इस घाटी के बारे में सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जलवायु के साथ ही नेलोंग घाटी का परिदृश्य लद्दाख के ठंडे रेगिस्तान के समान है। चीन सीमा से लगी इस घाटी में जाड़ गंगा समेत दो नदियां बहती हैं। गंगा, भागीरथी से संगम स्थल भैरव घाट पर मिलती है। पहले सुरक्षा कारणों से यहां आने वाले पर्यटकों को सिर्फ नेलांग चेकपोस्ट तक ही जाने की इजाजत थी। इसके लिए भी पर्यटकों को 150 रुपये फीस देकर प्रशासन से परमिशन लेनी पड़ती थी। 2023 से पहले तक शर्त ये थी कि पर्यटक रात में यहां रुक नहीं सकते थे। लेकिन केंद्र सरकार ने जून 2023 में वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत फैसला किया कि अब रात में नेलांग घाटी में पर्यटक रूक सकेंगे। पहले इनरलाइन बाध्यताओं के कारण यहां रात को रूकने की मनाही थी। सरकार का इरादा साफ है कि वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत नेलांग घाटी में पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए। रात में नेलांग घाटी में रूकने वाले पर्यटकों को इलाके के एसडीएम सहित गंगोत्री नेशनल पार्क की शर्तों के अनुरूप रहने की अनुमति दी जाएगी। सरकार के इस कदम के बाद नेलांग घाटी में पर्यटन का विस्तार होगा। साथ ही गंगोत्री नेशनल पार्क प्रशासन को आय का एक और जरिया मिल गया। गंगोत्री नेशनल पार्क ने भैरो घाटी और नेलांग के बीच दो स्थानों कारछा और चोरगाड़ में टेंट कॉलोनी बनाई है। इस पर 20 लाख रुपये की लागत आई है। हालांकि विदेशी पर्यटकों को पहले यहां जाने की इजाजत नहीं थी लेकिन अब विदेशी सैलानी भी नेलांग घाटी जा सकते हैं। यहां एक दिन में सिर्फ 6 गाड़ियां ही जा सकती हैं। भैरव घाटी से नेलांग घाटी तक की सड़क बहुत खतरनाक है। अगर यहां जाने की सोच रहे हैं, तो आपके पास अच्छे ग्राउंड क्लीयरेंस वाले व्हीकल और अच्छा ड्राइवर होना चाहिए। यहां 8 सीटर टाटा सूमो बुक करेंगे, तो भैरों घाटी से नेलांग घाटी और वापस भैरों घाटी लौटने तक की यह ट्रिप 4000 रुपये से ज्यादा पड़ेगी। जिसमें खाना पीना भी शामिल है। ध्यान रखें यहां कोई शेयरिंग टैक्सी नहीं मिलती। साथ ही यहां टू व्हीलर ले जाने की परमिशन नहीं है। नेलांग घाटी की यात्रा के दौरान भैरवी मंदिर, हरसिल घाटी, गंगोत्री धाम, गोमुख ट्रैक, मुखबा विलेज और गंगनानी भी जा सकते हैं।

- **चीन सीमा से लगी इस नेलांग घाटी में जाड़ गंगा समेत दो नदियां बहती हैं, गंगा, भागीरथी से संगम स्थल भैरव घाट पर मिलती है, पहले सुरक्षा कारणों से यहां आने वाले पर्यटकों को सिर्फ नेलांग चेकपोस्ट तक ही जाने की इजाजत थी, अब नेलांग घाटी तक जा सकते हैं।**
- **केंद्र सरकार ने जून 2023 में वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत फैसला किया कि अब रात में नेलांग घाटी में पर्यटक रुक सकेंगे, पहले इनरलाइन बाध्यताओं के कारण यहां रात को रुकने की मनाही थी, सरकार का इरादा साफ है कि वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत नेलांग घाटी में पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए।**

## भारत-तिब्बत व्यापार की साक्षी

यह नेलांग घाटी न केवल सुंदर जगह है बल्कि एक समय में भारत-चीन के बीच बहुत बड़ा व्यापारिक मार्ग होता था। पर्यटकों को इसकी खूबसूरती आकर्षित करती है इसलिए सैलानी दूर-दूर से यहां आते हैं। यहां आने के बाद पर्यटकों को नेलांग घाटी में बना वुडन ब्रिज देखने को मिलता है। इस ब्रिज की सबसे खास बात है कि यह कभी भारत-तिब्बत के बीच व्यापार का केंद्र रहा था। 17वीं शताब्दी में पेशावर के पठानों ने समुद्रतल से 11 हजार फीट से अधिक की ऊंचाई पर उत्तरकाशी जिले की नेलांग घाटी में हिमालय की खड़ी पहाड़ी को काटकर दुनिया का सबसे खतरनाक रास्ता तैयार किया था। पांच सौ मीटर लंबा लकड़ी से तैयार यह सीढ़ीनुमा मार्ग (गर्तांगली) भारत-तिब्बत व्यापार का साक्षी रहा है। 1962 से पहले भारत-तिब्बत के व्यापारी याक, घोड़ा-खच्चर व भेड़-बकरियों पर सामान लादकर इसी रास्ते से आवागमन करते थे। यह घाटी भारत-तिब्बत के व्यापारियों से गुलजार रहा करती थी। दोरजी यानी तिब्बत के व्यापारी ऊन, चमड़े से बने वस्त्र व नमक लेकर सुमला, मंडी, नेलांग की गर्तांगली से होते हुए उत्तरकाशी पहुंचते थे। तब उत्तरकाशी में हाट (स्थानीय बाजार) लगा करते थे। इसी कारण उत्तरकाशी को बड़ाहाट (बड़ा बाजार) भी कहा जाता है। सामान बेचने के बाद दोरजी यहां से तेल, मसाले, दालें, गुड़, तम्बाकू आदि वस्तुएं लेकर लौटते थे। तब व्यापार में कोई पैसा शामिल नहीं होता था एक कप चीनी के बदले एक कप नमक का व्यापार किया जाता था, कपास के बदले में जाध लोग उन भेड़ों के बाल काटते थे जिन्हें व्यापारी अपने साथ लाते थे, और उसे तराश कर सुंदर कपड़े बनाते थे। व्यापार का एक सफल मौसम भारतीय हारमोनियम और वायलिन पर बजाए गए संगीत के साथ समाप्त होता था। यह वर्ष का एकमात्र समय था जब जाध लोग अपने साथ लाए एक बकरे की बलि एक पहाड़ी वेदी पर देते थे।

**1962 से पहले भारत-तिब्बत के व्यापारी याक, घोड़ा-खच्चर व भेड़-बकरियों पर सामान लादकर इसी रास्ते से आवागमन करते थे, यह घाटी भारत-तिब्बत के व्यापारियों से गुलजार रहती थी, दोरजी (तिब्बत के व्यापारी) ऊन, चमड़े से बने वस्त्र व नमक लेकर सुमला, मंडी, नेलांग की गर्तांगली से होते हुए उत्तरकाशी पहुंचते थे।**

## जाध गंगा भारत और चीन के बीच विवाद

उत्तरकाशी के सुदूर सीमावर्ती जिले में छिपी यह खूबसूरत घाटी ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध भारत-चीन सीमा पर समुद्र तल से 11,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर है। यहां भागीरथी नदी की सबसे बड़ी सहायक नदियों में से एक जाध गंगा का उद्गम स्थल है। जाध गंगा भारत और चीन के बीच विवाद का विषय भी है। इस घाटी पर चीन का दावा है और भारत का नियंत्रण है। जाध गंगा का मूल नाम जाह्नवी था। किंवदंती है कि ऋषि जह्नु एक दिन बहुत क्रोधित थे क्योंकि गंगा नदी लगातार उनके आश्रम को नुकसान पहुंचा रही थी। अपने क्रोध में उन्होंने एक ही घूंट में पूरी नदी पी ली थी। बाद में जब उनका गुस्सा शांत हुआ, तो उन्होंने नदी को छोड़ दिया, जो सैद्धांतिक रूप से उनकी बेटी बन गई। इसलिए नदी को जाह्नवी के नाम से जाना जाने लगा। यह घाटी जाध गंगा के बहते पानी के उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह वही क्षेत्र है जिसका उल्लेख ऑस्ट्रियाई पर्वतारोही हेनरिक हैरर ने अपने संस्मरण में किया है कि 1940 के दशक में देहरादून के एक ब्रिटिश नजरबंदी शिविर से वह भागे थे। अपने भागने के बारे में लिखा कि वह तिब्बत में ल्हासा तक पैदल चले, जाध गंगा के ऊपर एक खतरनाक लकड़ी के पुल के रास्ते को पार करते हुए, फिरोजा नदी तक पहुंचे। यह वही घाटी है जहां प्रसिद्ध ब्रिटिश खोजकर्ता जेबी ऑडेन (प्रसिद्ध कवि डब्ल्यूएच ऑडेन के छोटे भाई) भागीरथी की सहायक नदियों की खोज करते हुए पहुंचे थे। लिहाजा इसका नाम ऑडेन कोल इसलिए रखा गया, क्योंकि ऑडेन इसे पार करने वाले पहले व्यक्ति थे। कहा जाता है कि नेलांग के रास्ते से अलकनंदा घाटी तक जाने के लिए अरवा कोल एक मार्ग खोजना चाहते थे, लेकिन वो अपने प्रयास में विफल रहे। क्योंकि 1962 के युद्ध ने यह तय हो गया था कि इस क्षेत्र में अब और खोज संभव नहीं है। लेकिन जब किसी चीज पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है, तो उसके रोमांच और खोज की बारी आती है। तब से घाटी का पता लगाने के लिए पर्यटकों द्वारा कई प्रयास किए गए। 2011 की गर्मियों में बेंग्लुरु के जेपी गुप्ता ने अलकनंदा घाटी से नेलांग घाटी में अरवा कोल को पार करने के चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए एक टीम का नेतृत्व किया था। हालांकि मौसम ने उनके प्रयास को काफी नुकसान पहुंचाया था। 2012 में दिल्ली के ट्रैकर आशुतोष मिश्रा ने अपनी टीम के साथ नेलांग से ऊपर सरस्वती घाटी तक पहली सफल यात्रा की थी। अब नेलांग घाटी और इसके प्राचीन मार्गों की खोज करना थोड़ा आसान हो गया है।

## कैसे पहुंचे नेलांग घाटी

नेलांग घाटी जाने के लिए सबसे पहले देहरादून पहुंचना होगा। फिर वहां से उत्तरकाशी जाएं, जो देहरादून  से 144 किलोमीटर दूर है। उत्तरकाशी के जिला मैजिस्ट्रेट से परमिशन लेनी होगी और इसके बाद भैरों घाटी की यात्रा कर पाएंगे। भैरों घाटी के फॉरेस्ट ऑफिस में परमिट दिखाएं और 200 रुपये परमिट फीस जमा करें। इसके बाद 25 किलोमीटर ड्राइव करके नेलांग घाटी पहुंच सकते हैं। भैरों घाटी से नेलांग घाटी तक की सड़क बहुत खतरनाक है। अगर यहां जाने की सोच रहे हैं, तो आपके पास अच्छे ग्राऊंड क्लीयरैंस वाले वाहन और अच्छा ड्राइवर होना चाहिए। यहां टू व्हीलर ले जाने की इजाजत नहीं है। नेलांग घाटी की यात्रा करने वालों को ऑनलाइन परमिट की सुविधा भी है। इसके लिए अटैच आईडी कार्ड और स्कैन की गई पीडीएफ फाइल के साथ फॉर्म भरें और प्रिंट आउट ले जाएं। जिला मजिस्ट्रेट के पास जाकर मोहर लगवाएं और नेलांग घाटी जाने के लिए तैयार हो जाएं। लेकिन यहां पर्यटकों को कुछ तारीखें के विकल्प बताए जाएंगे। इनमें से सैलानी अपनी सुविधानुसार कोई भी तारीख चुन सकते हैं।

# मीडिया से भरोसा उठा?

**किसी भी व्यक्ति, संस्थान, राजनेता, को विश्वसनीयता बनाने में जीवन खपाना पड़ता है, पर विश्वसनीयता समाप्त करने में सिर्फ पल भर का समय लगता है, एक बार किसी से भरोसा उठता है तो फिर उसे भरोसे में लेना मुश्किल होता है। इसलिए तथ्यों पर आधारित पत्रकारिता की हर तरफ स्वीकार्यता है और फेक खबरों की कलई खुल जाती है।**

**केके चौहान**

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच जो संघर्ष हुआ उसे भारत के न्यूज चैनलों ने मजाक बना दिया। काल्पनिक दृश्यों, साउंड इफेक्ट और एंकर के चीखने चिल्लाने से दर्शक तंग आ गए। बुर्जुगों से कहावत सुनते आ रहे है, कि 'तिल का पहाड़ बनाना' इस मुहावरे को भारत के मीडिया ने शिद्दत से बरकरार रखा हुआ है। यानी छोटी-छोटी बात को कैसे सनसनीखेज बनाकर पेश करना है, इस महारथ पर सिर्फ और सिर्फ टीवी न्यूज चैनल का कॉपीराइट है। इसलिए इलैक्ट्रोनिक मीडिया की विश्वसनीयता समाप्त होने के कगार पर है। इसके विपरीत प्रिंट मीडिया पर अभी भी लोगों को भरोसा है, हालांकि प्रिंट मीडिया में भी अब व्हाट्सएप पर ज्यादा निर्भर हो गया है। रिपोर्टर आलसी हो गए हैं, बहुत कम रिपोर्टर अब घटनास्थल पर जाकर रिपोर्टिंग करते हैं। ज्यादातर रिपोर्टर किसी भी घटना की जानकारी व्हाट्सएप के माध्यम से जुटाते हैं और अखबारों में छाप देते हैं। लिहाजा मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अब एआई के दौर में इलैक्ट्रोनिक मीडिया, सोशल मीडिया और प्रिंट मीडिया भरोसे लायक नहीं रहा। हाल ही में जब 22 अप्रैल को पहलगाम में 27 हिंदुओं की धर्म पूछकर हत्या की तभी से ज्यादातर टीवी न्यूज चैनलस ने चिखना चिल्लाना शुरू कर दिया था। इसके बाद जब पाकिस्तान और पीओके के आतंकी ठिकानों पर भारतीय सेना ने स्ट्राइक की तो टीवी न्यूज चैनलस पर कान फोड़ू धमाकेदार साउंड इफेक्ट्स और आग के शोले दिखाने शुरू हो गए, आतंकियों के ठिकानों पर इतने धमाके नहीं हुए होंगे जितने न्यूज चैनलों के स्टूडियो में होने लगे। बैकग्राउंड में मिसाइल, लेकर उड़ते फाइटर जेट दिखाकर खबरों को ज्यादा रोचक बनाने के चक्कर में दर्शकों में न सिर्फ तनाव पैदा किया बल्कि असहज भी किया। भारत-पाक संघर्ष के दौरान टीवी न्यूज चैनलों पर दिखाई जा रही खबरों पर फिल्म अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने कहा कि 'मीडिया ने युद्ध का मजाक बना दिया। कुछ टीवी चैनलों पर युद्ध को लेकर मजाकिया या हल्के में लेने वाली खबरें दिखाई गई हैं, जो अक्सर विवादास्पद होती हैं। इन खबरों में युद्ध के गंभीर पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है। यह सिर्फ रेटिंग पर ध्यान केंद्रित करने के लिए किया जाता है। तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर न दिखाओ। जैसा है, वैसा दिखाओ। ऊपर वाले के लिए युद्ध को सनसनीखेज बनाना और लोगों में दहशत फैलना बंद करो, जो पहले से चिंतित हैं। आप अपने लिए एक भरोसेमंद न्यूज सोर्स खोजें। खबरों के नाम पर इस कचरे को देखना बंद करिए। टीवी पर समाचार के नाम पर पागलपन की खबरें दिखाना बंद करिए।

## न्यूज ब्रेकिंग का युद्ध

दरअसल 6 मई की आधी रात को भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाते हुए ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया था। बदले में पाकिस्तान ने सीमा पार से गोलाबारी और ड्रोन हमलों से जवाब दिया जिन्हें सेना ने निष्क्रय कर दिया। भारत-पाक टेंशन के बीच भारतीय टीवी चैनलों की इंट्री होती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही कह चुके थे कि आतंकवाद पर कड़ा प्रहार होगा। पहलगाम में जिन्होंने 22 अप्रैल को नरसंहार किया है उन्हें तथा उनको पालने वालों को उनकी कल्पना से बड़ी सजा दी जाएगी। लिहाजा 7 तारीख को जब टेंशन बढ़ी तो बार्डर से ज्यादा घमासान, टीवी न्यूज चैनलों पर हो रहा था। खबरें ब्रेक करने का युद्ध छिड़ गया था। लिहाजा खबरें ब्रेक करने की होड़ में अनाप-सनाप, दांये-बांये-सांय कुछ भी बता दिया जा रहा था। एक टीवी चैनल ने खबर ब्रेक की कि 'पाकिस्तान के आर्मी चीफ आसीम मुनीर को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस ब्रेकिंग न्यूज के बाद कई चैनलों ने मुनीर की गिरफ्तारी की खबर तो दिखाई, लेकिन किसी ने ये नहीं बताया कि मुनीर को गिरफ्तार किसने किया है? कहां किया है? तो दूसरे चैनल पर खबर आ गई कि भारत ने पाकिस्तान के आर्मी चीफ आसीम मुनीर को गिरफ्तार किया।' ये चैनल यहीं नहीं रुके बल्कि जनरल साहिर शमशाद मिर्जा को पाकिस्तान का नया आर्मी चीफ तक बना दिया था। अब सवाल उठता है कि जब भारतीय फौज और भारतीय मीडिया जब पाकिस्तान में घुसा ही नहीं तो फिर उसकी गिरफ्तारी की खबर कहां से और किस सोर्स से आई, कुछ पता नहीं। एआई के जमाने में आसीम मुनीर को भारत की गिरफ्त में दिखा भी दिया जाता, लेकिन यह भारतीय न्यूज चैनलों का दर्शकों पर आहसान रहा कि उसने ऐसा नहीं किया।

**भारतीय फौज और मीडिया जब पाकिस्तान में घुसा ही नहीं तो फिर पाक आर्मी चीफ आसीम मुनीर की गिरफ्तारी की खबर किस सोर्स से आई, कुछ पता नहीं, एआई के जमाने में मुनीर को भारत की गिरफ्त में दिखा भी दिया जाता, लेकिन यह भारतीय न्यूज चैनलों का दर्शकों पर आहसान रहा कि उसने ऐसा नहीं किया।**

## टीवी पत्रकारिता का स्तर गिरा

एक चैनल ने खबर ब्रेक की कि 'आज रात को इस्लामाबाद पर भारत का कब्जा हो जाएगा?' इस चैनल से आगे निकलने की होड़ में दूसरे चैनल ने 'पाकिस्तान के तीन बड़े शहरों पर ही भारत के कब्जे' की खबर ब्रेक कर दी। इस चैनल से आगे निकलने के लिए एक और चैनल ने 'पाकिस्तान के 7 शहरों पर कब्जे' की खबर सुनाकर पैनिक फैला दिया। अगली सनसनीखेज खबर ब्रेक हुई 'पूरे पाकिस्तान में बवाल पीओके हो रहा खाली।' टीआरपी के लिए दूसरे चैनल ने ब्रेकिंग खबर दी कि 'भारत का पाकिस्तान की राजधानी पर कब्जा।' भारत के प्रतिष्ठित चैनल ने 'पीओके बिग ब्रेकिंग में खबर दी कि भारत की जीत पीओके से हटा पाकिस्तान' हमारे चैनल ने फिदायीन हमले की जो घटना हुई ही नहीं वो भी दिखा दी। कराची पर आक्रमण से लेकर पाकिस्तान में तख्तापलट तक की खबरें एंकरों ने चीख-चीख कर बताई। न्यूज चैनलों ने अपनी कल्पना को तथ्य के रूप में प्रस्तुत कर समाज में भ्रम फैलाने का काम किया, जिससे संवेदनशील क्षणों में दहशत फैलना स्वभाविक ही था। जब सीमावर्ती जिलों में नागरिकों की जानें जा रही थीं, टीवी न्यूज चैनलों पर मिसाइल हमलों का जश्न मनाया जा रहा था, मृतकों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताई जा रही थी। यहां तक कि मजाक भी किया जा रहा था कि देखिए पाकिस्तानी हमला कितना मजेदार होगा। इससे उजागर हुआ कि टीवी पत्रकारिता का स्तर कितना गिर गया है। इससे सवाल तो उठेगा ही कि भारत को एक विश्वसनीय मीडिया की आवश्यकता क्यों है? भारत के मुख्यधारा के मीडिया ने भारत-पाकिस्तान के बीच उपजे तनाव पर जिस किस्म की खबरें अपने दर्शकों को परोसी हैं, वो न केवल भारत में दिनभर चर्चाएं और मजाक का विषय बनी रही, बल्कि पाकिस्तान में भी भारतीय मीडिया का मजाक उड़ाते हुए मीडिया में लेख लिखे गए हैं। पाकिस्तान के प्रमुख अखबार 'डॉन' में शाहजेब अहमद ने लिखा है 'युद्ध में सबसे पहले सत्य मरता है।' और भारतीय मीडिया को देख कर लगता है कि 'वो सिर्फ सत्य की हत्या करने से संतुष्ट नहीं है।' पिछले कुछ दिनों में, टीवी चैनलों के युद्धोन्मादी एंकरों ने सोशल मीडिया के ट्रोल्स और कथित विशेषज्ञों के साथ मिलकर, सच्चाई को कुचलने, रौंदने, चीरने, जला देने और उसकी राख को हिंद महासागर में बहा देने तक का काम किया। भारतीय सूचना परिदृश्य से जो झूठ और दुष्प्रचार बाहर आया, वह चौंकाने से लेकर पागलपन की हद तक गया।

## दर्शकों का भरोसा टूटा

खुद को भरोसेमंद कहने वाले न्यूज चैनलों ने जिस तरह की खबरें परोसी उससे दर्शकों का भरोसा टूटा है। क्योंकि खुद को प्रतिष्ठित न्यूज चैनल कहने वालों ने

- **जब 22 अप्रैल को पहलगाम में 27 हिंदुओं की धर्म पूछकर हत्या की तभी से देश के टीवी न्यूज चैनलस ने चिखना चिल्लाना शुरु कर दिया, इसके बाद जब पाकिस्तान व पीओके के आतंकी ठिकानों पर भारतीय सेना ने स्ट्राइक की तो टीवी न्यूज चैनलस ने कान फोड़ू धमाकेदार साउंड इफेक्ट्स और आग के शोले दिखाने शुरु कर दिए।**
- **न्यूज चैनलों ने अपनी कल्पना को तथ्य के रूप में पेश कर समाज में भ्रम फैलाने का काम किया, जिससे संवेदनशील क्षणों में दहशत फैलना स्वभाविक ही था, जब सीमावर्ती जिलों में लोगों की जानें जा रही थीं, टीवी न्यूज चैनलों पर मिसाइल हमलों का जश्न मनाया जा रहा था, मृतकों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताई जा रही थी।**

न सिर्फ भारतीय फौजों को पाकिस्तान के भीतर इस्लामाबाद तक दाखिल कर दिया, बल्कि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से हवा में घुटने भी टिकवा दिए। हमारे गैरजिम्मेदार न्यूज चैनलों ने जिम्मेदारी दर्शाते हुए कराची पोर्ट पर हमला और विनाश की फेक न्यूज भी दिखाई और एक पुराना अमेरिकी विमान दुर्घटना का वीडियो दिखाया कर झूठ को सच बनाने की कोशिश की। 'आज तक' की एंकर जो कभी 2000 रुपये के नोट में चिप लगा चुकी थी उसने दावा किया कि राजौरी में भारतीय सेना पर फिदायीन हमला हुआ है। यह दावा बिना किसी आधिकारिक स्रोत के किया गया, लिहाजा सेना ने न्यूज एजेंसी एएनआई को बताया कि यह खबर पूरी तरह फेक है। राजौरी में ऐसा कोई हमला नहीं हुआ है। हमारे मीडिया का एक और कारनामा जानिए, जिसने पाकिस्तानी शहरों के विनाश और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के बंकर में छिपने की फेक न्यूज दिखाई। चैनलों ने दावा किया कि भारत ने पाकिस्तान के 12 शहर नष्ट कर दिए और पीएम शाहबाज़ शरीफ बंकर में छिप गए हैं। इस्लामाबाद पर भारत के कब्जे की खबर भी हमने टीवी पर देखी, पाकिस्तान सेना के भारत के सामने आत्मसमर्पण की खबर भी चीख-चीख कर दिखाई गई। दावा तो यह भी किया गया कि पाकिस्तानी के टैंक राजस्थान की ओर बढ़ रहे हैं। इन्हीं बड़े न्यूज चैनलों ने पाकिस्तान के फाइटर जेट जीएफ-17 और एफ-16 मार गिराने और कभी एक तो कभी दो पायलट पकड़ने की खबर भी दिखाई। एक चैनल ने तो एआई से बना हुआ फर्जी वीडियो ट्वीट किया जिसमें एक पाक जनरल यह स्वीकार करता है कि एक पाकिस्तानी पायलट को जम्मू-कश्मीर के अखनूर में पकड़ा गया है। लेकिन आखिर में इस खबर का भी वही हाल हुआ तो अमूमन दूसरी खबरों का हुआ, क्योंकि ये खबरें भी सत्यता से कोसो दूर थी। आज तक भारत या पाकिस्तान में से किसी ने इस तरह की खबरों की कोई पुष्टि नहीं की। बल्कि पाकिस्तान सरकार के सूचना मंत्री ने भारतीय मीडिया के इन सभी दावों को पूरी तरह झूठा और मनगढ़ंत बता दिया। इस तरह हमारे मीडिया ने न सिर्फ अपनी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करने का हर किसी को मौका दिया, बल्कि दुश्मन देश के मीडिया को मजाक उड़ाने का पूरा अवसर दिया है। पाकिस्तान का मीडिया कह रहा है कि कराची से इस्लामाबाद तक कब्जे की परम मूर्खतापूर्ण खबरे चलाकर इन्हें लगा की झूठ  परोसने से भारतीय मीडिया की प्रसंशा होगी। बिल्कुल नहीं बल्कि उसकी उसी के मुल्क में आज बेइज्जती हो रही है। वैसे मेरा मानना है कि किसी भी व्यक्ति, संस्थान, राजनेता, को विश्वसनीयता बनाने में जीवन खपाना पड़ता है, लेकिन विश्वसनीयता को समाप्त करने में सिर्फ पल भर का समय काफी होता है। जब एक बार किसी से भरोसा उठता है तो फिर उसे भरोसे में लेना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन होता है। इसलिए तथ्यों पर आधारित पत्रकारिता की हर तरफ स्वीकार्यता है और फेक खबरों की कलई खुल रही है। फेक न्यूज परोस कर तात्कालिक टीआरपी तो मिल सकती है, लेकिन यह दीर्घकालिक टीआरपी नहीं हो सकती।

# जौनसार में बाहरी लोगों की घुसपैठ

**कुछ वन गुर्जर फर्जी तरह से परमिट लेकर उनका दुरूपयोग कर रहे हैं, ये परमिट वो उत्तर प्रदेश व हरियाणा के मुस्लिम परिवारों को दे रहे हैं जिसकी मजिस्ट्रेट जांच होनी चाहिए, यदि जंगल के अंदर परमिट धारी व्यक्ति नहीं मिलाता है या उसके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति भेंस चराता मिलता है तो सख्त ऐक्शन होना चाहिए।**

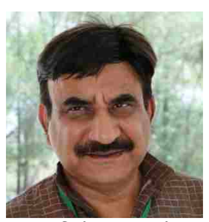

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड में कांग्रेस की सरकारों ने वोट बैंक के लिए पूरे प्रदेश की डेमोग्राफी बदलने का काम किया है। जहां और जिस बस्ती में सिर्फ हिंदू रहते थे वहां अब मजारे बन गई, मस्जिद बन गई, मदरसे खुल गए। हालांकि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अवैध मदरसों, मजारों और मस्जिदों को ध्वस्त और सील करने की कार्रवाई की है। फिर भी मुस्लिम समाज जौनसार तक पहुंच गया। हल्द्वानी की गोला नदी में और गोला पार वन विभाग की जमीन पर मुसलमानों ने अवैध कब्जे कर घर बना लिए हैं। जौनसार बावर जनजाति क्षेत्र में बड़े पैमाने पर मुस्लिम समुदाय के बसने के विरोध में देवभूमि उत्तराखंड की रुद्रसेना ने बाहरी लोगों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है। उत्तराखंड के कई जिलों में अवैध रूप से तैयार कराए गए फर्जी दस्तावेजों को अमान्य कराने की मांग भी उठ रही है। बंगाण में एक बड़ी पंचायत किरोली थप्पड़ मोरी उत्तरकाशी में की गई। जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों के साथ क्षेत्र के जनप्रतिनिधि मौजूद थे। रुद्र सेना के संयोजक राकेश उत्तराखंडी ने कहा कि वन गुर्जर परमिट पर नीचे ओर ऊपर आते जाते थे, लेकिन उनकी आड़ में बाहरी लोगों ने क्षेत्र के किसानों और वन विभाग की जमीन पर अवैध डेरे डाल लिए हैं, जिससे क्षेत्र की डेमोग्राफी चेंज हो रही है। डेरा डालने वाले अझिकांश परिवार उत्तराखंड के मूल निवासी नहीं है। उत्तराखंड के वन गुर्जरों को परमिट इसलिए दिया जाता था कि वो खानाबदोश हैं परंतु अब इनके मकान बन गए हैं। आधार कार्ड जंगल से बाहर बन चुके हैं। फर्जी आधार दिखाकर ये वन प्रभाग से फर्जी परमिट ले रहे हैं। सवाल ये है कि जब यह रूट प्रतिबंधित था तो ये फर्जी वन गुर्जर किस रास्ते से इस क्षेत्र में घुसे। ये तो सीधे-सीधे घूसखोरी और घुसपैठ का मामला है। इसमें वन विभाग की भी बड़ी साजिश अथवा लापरवाही है जिससे क्षेत्र की डेमोग्राफी चेंज हो रही है। जिन लोगों के परमिट थे उनको नीचे और ऊपर जाते समय वन विभाग को चेक करना चाहिए था परंतु वन विभाग की लापरवाही अथवा स्वार्थ के कारण, इन बाहरी लोगों ने वन विभाग की सरकारी और गैर सरकारी जमीनों पर कब्जा कर लिया है।

## हजारों में पहुंची मुस्लिम आबादी

उत्तरकाशी के बंगाण क्षेत्र के 1996 के आंकड़े गवाह है कि यहां सिर्फ मुस्लिम गुर्जर परिवारों की संख्या 78 थी। इनमें गोरीयाना गांव में 15 परिवारों के 118 सदस्य थे। बेगली गांव में 7 परिवारों के 34 सदस्य थे। इसी तरह अलाई गांव में 7 परिवारों के 45, रूनसून में 10 परिवारों के 74, सटोरी गांव के 8 परिवारों के 33, भंकवाड गांव में 12 परिवारों के 92 सदस्य, मोरा में 3 परिवार में 17, णुगागाड गांव में 4 परिवारों के 18, कैरावली तप्पड़ में 3 परिवारों में 22, शांद्रा में 6 परिवारों में 32 और छपाई गांव के 3 परिवारों के 19 सदस्य रहते थे। इस क्षेत्र के नानई, नितोशा, अंकनींनाशना आदि गांवों में एक भी वन गुर्जर नहीं था, लेकिन इन गांवों में भी 45 परिवार के 435 मुस्लिम सदस्य हो गए हैं। जिन गांवों में मुस्लिम आबादी सैकड़ों में थी वहां अब 5000 से अधिक जनसंख्या हो गई है। इस हिसाब से अगले 30 वर्ष में इस क्षेत्र में उनकी जनसंख्या 50000 हो जाएगी, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। वन गुर्जर पुनर्वास योजना के तहत कई परिवारों को गैंडीखाता हरिद्वार में जमीन मिल चुकी है। कई परिवारों को बंदोबस्त में वैध पट्टे मिल चुके है खानाबदोश न होकर अब ये जमीदार हो गए हैं। फिर किस नियम के तहत इनको वन विभाग परमिट दे रहा है। जो मुस्लिम वन गुर्जर हमारे क्षेत्र में रहते है उनके पास घर पर एक या दो भैंस है। लेकिन कुछ वन गुर्जर फर्जी तरह से परमिट लेकर उनका दुरूपयोग कर रहे हैं। ये परमिट वो उत्तर प्रदेश व हरियाणा के मुस्लिम परिवारों को दे रहे हैं जिसकी मजिस्ट्रेट जांच होनी चाहिए। यदि जंगल के अंदर परमिट धारी व्यक्ति नहीं मिलाता है या उसके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति भेंस चराता मिलता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। परमिट से अधिक भैंसे मिलती हैं तो उस व्यक्ति के साथ परमिट जारी करने वाले संबंधित रेंजर, डिप्टी रेंजर फॉरेस्टर तथा फॉरेस्ट गार्ड, के विरूद्ध एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए। कुछ स्थानों पर इन लोगों द्वारा बढ़ती जनसंख्या के कारण अपने परिवार अलग कर लिए हैं जिसमें निजी जमीन के बाहर बंजर और सरकारी जमीन पर भवन बना लिए है। अवैध रूप से बिजली व पानी के कनेक्शन ले लिए हैं। कुछ समय पहले क्षेत्र में आए मुस्लिम परिवारों ने फर्जी तरीके से अपने सभी दस्तावेज भी तैयार करा लिए हैं। लिहाजा इनके सभी दस्तावेजों की जांच कर तत्काल इन पर मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए। साथ ही सभी फर्जी दस्तावेज रद्द किए जाए, क्योंकि इन लोगों के बीच बाहरी राज्य से जमात के नाम पर कट्टरपंथी पहुंचकर वन गुर्जरों के बीच कट्टरता का जहर घोल रहे हैं।

**पहाड़ पर जो अवैध मदरसे, मजार व अवैध मस्जिदें बनाई गई हैं उन्हें तुरंत हटाया जाए, क्योंकि इन्हीं अवैध मदरसों व मस्जिदों में बाहर से हाफिज, मुल्ला व मौलवी घुसपैठ कर रहे हैं और बहुसंख्यकों के खिलाफ जहर उगल रहे हैं, इन मौलवियों और जमात का पुलिस वैरिफिकेशन भी नहीं होता है।**

## प्रशासन व वन विभाग सक्रिय

किरोली थप्पड़ मोरी में हुई बड़ी पंचायत डा.राजेंद्र राणा का कहना था कि आम तौर पर शांत रहने वाला हमारा पहाड़ी क्षेत्र डर के साए में जी रहा है। क्योंकि डेमोग्राफी चेंज होने से यहां कभी भी कोई बड़ी घटना घट सकती है। लैंड जिहाद के साथ लव जिहाद और धर्मांतरण का खतरा हमारे परिवारों पर मंडरा रहा है। इसलिए तत्काल बाहर से आने वाली सभी गाड़ियों की जिम्मेदारी के साथ चैकिंग होनी चाहिए। यदि जमाती मिलते हैं तो उन्हें लौटाया जाए या फिर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। सरकार यदि कोई कार्रवाई नहीं करती है और क्षेत्र में जमात के नाम पर कोई जमावड़ा होता है तो उसका ग्रामीण सीधा मुकाबला करेंगे। इसके लिए पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी। पहाड़ पर जो भी अवैध मदरसे, मजार व अवैध मस्जिदें बनाई गई हैं उन्हें तुरंत हटाया जाए। क्योंकि इन्हीं अवैध मदरसों व मस्जिदों में बाहर से हाफिज, मुल्ला व मौलवी घुसपैठ कर रहे हैं और बहुसंख्यकों के खिलाफ जहर उगल रहे हैं। इन मौलवियों और जमात का पुलिस वैरिफिकेशन भी नहीं होता है। लिहाजा सरकार को चाहिए कि वो तत्काल बाहरी लोगों की पहचान कर उत्तराखंड से बाहर निकाले। डा.राणा का कहना था कि दुर्भाग्य की बात है कि दो वर्ष पहले इस संबंध में एक शिकायत पुरोला के उप जिलाधिकारी कार्यालय में दी गई थी। परंतु अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई न अवैध कब्जे हटाए गए। इससे क्षेत्र में आक्रोश पनप रहा है, प्रशासन को चाहिए कि लोगों का आक्रोश विस्फोटक बने उससे पहले वन गुर्जरों के नाम पर हो रहे अवैध कृत्य, अवैध निर्माण, सरकारी, गैर सरकारी जमीन से कब्जे हटाए जाएं। अगर ऐसा नहीं होता है तो फिर किरोली थप में धर्मसभा बुलाई जाएगी जिसमें भारत के विभिन्न अखाडों के संत महात्मा तथा हिंदू संगठनों को आमंत्रित किया जाएगा। क्षेत्र में पनप रहे आक्रोश को देखते हुए पुरोला के उप जिलधिकारी डॉ.मुकेश रमोला ने कहा की जल्द ही अवैध कब्जे की सभी शिकायतों का निस्तारण किया जाएगा तथा एक टीम बनाई जाएगी जो एक-एक पहलू पर बारीकी से काम करेगी। वन प्रभाग पुरोला के एसडीओ का कहना है कि अवैध रूप से जंगल में रह रहे परिवारों को नोटिस दे दिए गए हैं। इन सभी को जंगलों से हटा दिया जाएगा तथा अवैध रूप से कोई भी व्यक्ति जंगल में नहीं जाएगा जिनके पास परमिट नहीं है उनको जंगल में जाना प्रतिबंधित कर दिया गया है।

## हल्द्वानी में 150 अवैध प्लॉट काट दिए

ऐसा नहीं है कि जौनसार में ही डेमोग्राफी चेंज हो रही है, कुमाऊं के प्रवेश द्वार कहे जाने वाले हल्द्वानी शहर में भी डेमोग्राफी तेजी से चेंज हो रही है। यहां भूमाफिया ने गौला पार देवला तल्ला पजाया क्षेत्र में लगभग तीन हेक्टेयर भूमि पर बिना अनुमति के प्लॉटिंग कर दी। शहर के कई क्षेत्रों में अवैध प्लाटिंग के नाम पर डेमोग्राफी चेंज करने की

- **वन गुर्जर पुनर्वास योजना के तहत कई परिवारों को गैंडीखाता हरिद्वार में जमीन मिल चुकी है, कई परिवारों को बंदोबस्त में वैध पट्टे मिल चुके है खानाबदोश न होकर अब ये जमीदार हो गए हैं, फिर किस नियम के तहत इनको वन विभाग परमिट दे रहा है।**
- **कुछ समय पहले क्षेत्र में आए मुस्लिम परिवारों ने फर्जी तरीके से सभी दस्तावेज बनवा लिए हैं, जिनकी जांच कर तत्काल मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए, साथ ही फर्जी दस्तावेज रद्द किए जाए, क्योंकि इन लोगों के बीच बाहरी राज्य से जमात के नाम पर कट्टरपंथी आकर कट्टरता का जहर घोल रहे हैं।**

शिकायत प्रशासन को लगातार मिल रही थी। इन शिकायतों के आधार पर प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई शुरू की गई। सिटी मजिस्ट्रेट एवं जिला विकास प्राधिकरण के संयुक्त सचिव एपी वाजपेई के नेतृत्व में हल्द्वानी के गौलापार स्थित देवला तल्ला पजाया क्षेत्र में अवैध रूप से काटे गए प्लॉटों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई। इस क्षेत्र में लगभग तीन हेक्टेयर भूमि पर बिना अनुमति के डेढ़ सौ से ज्यादा प्लॉट काट दिए गए। जिन्हें जेसीबी चलाकर ध्वस्त कर दिया गया। जिला विकास प्राधिकरण के संयुक्त सचिव एवं सिटी मजिस्ट्रेट एपी वाजपेई का कहना है कि इस मामले में पहले ही कॉलोनी विकसित करने वालों के खिलाफ प्राधिकरण द्वारा चालान कर नोटिस जारी किए गए थे। लेकिन इसके बावजूद भी अवैध कॉलोनी विकसित करने का काम जारी था। जिस समय अवैध प्लाटों पर जेसीबी चली तब बहुत से लोग पहुंचे और दावा किया कि उन्होंने तो यह जमीन खरीदी है। जिसमें वो प्लाट विकसित कर रहे हैं। एपी वाजपेई का साफ कहना है कि अवैध निर्माण या प्लॉटिंग किसी भी परिस्थिति में सहन नहीं की जाएगी। यदि कोई व्यक्ति या बिल्डर बिना अनुमति के कॉलोनी विकसित करता है, तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि ऐसी गैरकानूनी गतिविधियों के खिलाफ आगे भी लगातार कार्रवाई जारी रहेगी। गौला पार में जहां यह कालोनी विकसित की जा रही थी उसके पास ही हाईकोर्ट के लिए प्रस्तावित भूमि परिसर है। इस कालोनी में मुस्लिम समुदाय की पूरी बस्ती बसा दिए जाने की शिकायतें सीएम हेल्पलाइन पर भी की गई थी। इस संबंध में नैनीताल की जिलाधिकारी वंदना सिंह के निर्देश पर हल्द्वानी के उपजिलाधिकारी व तहसीलदार ने जांच भी की थी। जांच में पाया गया कि 111 प्लाट की रजिस्ट्री भी करा दी गई थी। जिसमें से 109 रजिस्ट्री मुस्लिम समुदाय के लोगों के नाम कराई गई थी। इनमें से ज्यादातर बाहरी राज्यों के मुस्लिम बताए गए हैं।

## वोटखोर नेताओं की साजिश

हैरान करने वाली बात ये है कि पहाड़ के कस्बाई क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय के लोग बसने में विशेष रुचि ले रहे हैं। पौड़ी गढ़वाल, चमोली, नैनीताल, उत्तरकाशी में बसने वालों में विदेशी हैं। सवाल उठता है कि मुस्लिम समुदाय बसावट को रोका जाना क्यों जरूरी है? इसके तीन ठोस आधार हैं। सबसे पहले देवभूमि के मूल स्वरूप को बचाना आवश्यक है। देवभूमि के मूल चरित्र के कारण जो कभी यहां आए भी नहीं, वे भी इस स्वरूप को संरक्षित रखना चाहते हैं। वहीं जो भौतिकवादी सोच के लोग हैं, वे भी राज्य की आर्थिकी के लिए इस स्वरूप को कायम रखना चाहते हैं। सब जानते हैं कि उत्तराखंड के पर्यटन उद्योग की रीढ़ तीर्थाटन ही है। सरकार के इस कदम का एक और ठोस आधार देश की सीमाओं की सुरक्षा भी है। नेपाल व चीन की सीमा से लगने वाले इस राज्य की सीमाओं में मूल निवासियों के पलायन को रोकना जितना जरूरी है उतना ही तर्कसंगत बाहर से आकर बसने वालों की स्क्रीनिंग करना भी आवश्यक है। इस राज्य के सीमांत जिलों के हर गांव-परिवार के सदस्य सीमाओं पर सैनिक के रूप में तैनात है। जो गांवों में हैं वे बिना वर्दी के समर्पित सैनिक हैं। इनकी भूमिका को सेना द्वारा सराहा जाता रहा है। इन क्षेत्रों में सुनियोजित बाहरी बसावट की तरफ से यूं ही आंख मूंद कर नहीं बैठा जा सकता है। चंद वोटों के लालच में ऐसा होते रहने दिया गया तो सीमा पर संकट खड़ा हो जाएगा। लिहाजा आने वाली पीढ़ियां वोटखोर नेताओं को कभी माफ नहीं करेंगी।

**पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में सीआरपीएफ के बर्खास्त एएसआई मोतीराम जाट की गिरफ्तारी के बाद 8 राज्यों दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, यूपी, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम, पश्चिम बंगाल में 15 स्थानों पर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों से जुड़े संदिग्धों के ठिकानों पर छापे मारे गए।**

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

ऑपरेशन सिंदूर के बाद खुफिया एजेंसियों को पता चला कि भारत में गद्दारों की कोई कमी नहीं है। चंद पैसों की खातिर भारतीय नागरिक पाकिस्तान के लिए जासूसी का काम कर रहे हैं। जासूसी कांड को लेकर एक नहीं कई बड़े खुलासे हुए हैं। पकड़े गए जासूसों से पूछताछ में बार-बार मैडम-एन का नाम सामने आया है। अब इस मैडम एन को लेकर सभी जानकारी सामने आ गई है। मैडम एन का पूरा नाम नौशाबा शहजाद मसूद है और ये महिला पाकिस्तान के लाहौर की रहने वाली है। इसी महिला ने जासूसी के मामले में गिरफ्तार इंफ्लुएंसर्स को पाकिस्तान घुमाया था। मैडम एन ही भारत में आईएसआई के लिए स्लीपर सेल का नेक्सस तैयार करने की साजिश रच रही थी। पाकिस्तानी आर्मी और आईएसआई के इशारे पर नौशाबा शहजाद मसूद भारत में 500 जासूसों का नेटवर्क खड़ा करने में जुटी थी। करतारपुर कॉरिडोर खुलने के बाद से नौशाबा ज्यादा एक्टिव थी। पाकिस्तान घुमाने के बहाने नौशाबा ही ज्योति मल्होत्रा जैसे तमाम यूट्यूबर्स और सोशल मीडिया इंफ्लुएन्सर्स को झांसे में लेने का काम कर रही थी। नौशाबा ही इन यूट्यूबर्स और सोशल मीडिया इंफ्लुएन्सर्स को पाकिस्तानी आर्मी और आईएसआई अधिकारियों से मिलवाती थी। पाकिस्तान आर्मी और आईएसआई के इशारे पर नौशबा भारत में रह रहे हिंदू और सिखों को विशेष तौर पर टारगेट करती थी। नौशाबा 6 महीनों में करीब 3000 भारतीय और 1500 के करीब विदेशों में रह रहे भारतीयों को पाकिस्तान में फैसिलिटेट दे चुकी है। नौशाबा के दिल्ली स्थित पाकिस्तानी दूतावास के वीजा डिपार्टमेंट में भी खासी पैठ थी। वो सीधे फर्स्ट सेक्रेटरी वीजा सुहैल कमर और काउंसलर ट्रेड उमर शेरयार के संपर्क में थी। मतलब नौशाबा जिसको चाहती एक फोन पर उसे तुरंत वीजा मिल जाता था। पाक दूतावास में बतौर वीजा ऑफिसर काम करने वाले आईएसआई अधिकारी एहसान उर रहमान उर्फ दानिश से भी नौशाबा की सीधी बात होती थी। खास बात ये कि तकनीकी रूप से भारत से पाकिस्तान के लिए पर्यटकों को भेजने की कोई व्यवस्था नहीं है। न ही भारतीय नागरिकों को पर्यटक वीजा जारी करने की कोई प्रक्रिया है। लेकिन पाकिस्तान उच्चायोग मैडम नौशाबा की सिफारिश और स्पॉन्सरशिप पर विजिटर वीजा जारी कर रहा था। साथ ही वह भारत में पाकिस्तान सेना के लिए स्लीपर सेल तैयार करने में भी सहायता कर रही थी। मैडम नौशाबा भारतीय यूट्यूबर्स के साथ फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन भी कर रही थी। इसी तरह नौशाबा के दो बैंक अकाउंट की भी डिटेल्स भी खुफिया एजेंसियों के हाथ लगी है जिसके जरिए भारतीयों के साथ उसकी मनी ट्रांजेक्शन ट्रेल को खंगाला गया है।

**जासूसी करने के आरोप में उत्तर प्रदेश के वाराणसी से तुफैल और दिल्ली से गिरफ्तार हारून ने यूपी एटीएस को बेहद चौंकाने वाली जानकारी दी, जिससे इस बात का खुलासा हुआ है कि जासूसी के लिए बड़ी संख्या में भारतीय महिलाओं की मांग क्यों की जा रही थी?**

## पाकिस्तानी जासूसों पर शिकंजा

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के बर्खास्त सहायक उप निरीक्षक मोती राम जाट की गिरफ्तारी के बाद 8 राज्यों दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम, पश्चिम बंगाल में 15 स्थानों पर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों (पीआईओ) से जुड़े संदिग्धों के ठिकानों पर छापे मारे गए। छापेमारी के दौरान कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, संदिग्ध वित्तीय दस्तावेज और अन्य संदिग्ध कागज बरामद हुए। छापेमारी के दौरान पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के संदेह में हरियाणा से ज्योति मल्होत्रा, देवेंद्र सिंह ढिल्लों, अरमान, तारिफ, नोमान इलाही को गिरफ्तार किया गया। जबकि राजस्थान से शकूर खान, हसीन और कासिम की गिरफ्तारी हुई। उत्तर प्रदेश से शहजाद व तुफैल को गिरफ्तार किया गया। दिल्ली से पाकिस्तानी मोहम्मद हारून को गिरफ्तार किया गया। पंजाब से सुखप्रीत सिंह, कर्णबीर सिंह, गजाला, यामीन, पलक शेर मसीह, सुरा मसीह, मोहम्मद अली मुर्तजा, गगनदीप सिंह उर्फ गगन व जसबीर सिंह को गिरफ्तार किया गया। राजस्थान के डीग जिले से गिरफ्तार हसीन और उसके भाई कासिम ने पूछताछ में कई चौंकाने वाले खुलासे किए। हसीन पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर भारत में स्लीपर सेल का बड़ा नेटवर्क तैयार कर रहा था। उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों को जासूसी नेटवर्क से जोड़ने के निर्देश पाकिस्तान से मिले थे। उसने चार भारतीय नंबर के सिम भी आईएसआई को उपलब्ध कराए थे। इन नंबरों का इस्तेमाल हनी ट्रैप में भारतीय नागरिकों को फंसाने के लिए किया जाता है। हसीन 3 बार पाकिस्तान गया था। हालांकि वह वहां अपने रिश्तेदारों के घर रुका था, वो पाकिस्तानी हैंडलर से बात करने के लिए अपने रिश्तेदारों के फोन का इस्तेमाल करता था। हसीन ने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी को जो भारतीय सिम दिए थे उससे ही पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए काम करने वाली पाकिस्तान इंटेलिजेंस ऑपरेटिव (पीआईओ) की महिला एजेंटों ने महाराष्ट्र के रवि वर्मा को हनी ट्रैप में फंसाया और उसे बहला-फुसलाकर युद्धपोतों और पनडुब्बियों जैसी संवेदनशील रक्षा सूचनाएं, फोटो और वीडियो की मांग की थी। नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच रवि वर्मा को 9,000 रुपये का भुगतान भी किया गया था। यह राशि डेड अकाउंट्स के जरिए अलग-अलग बैंक खातों में ट्रांसफर की गई। यह खुलासा महाराष्ट्र एटीएस ने किया था।

## जासूसी के लिए महिलाओं की डिमांड

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में उत्तर प्रदेश के वाराणसी से तुफैल और दिल्ली से गिरफ्तार हारून ने यूपी एटीएस को बेहद चौंकाने वाली जानकारी दी। जिससे इस बात का खुलासा हुआ है कि जासूसी के लिए बड़ी संख्या में भारतीय महिलाओं की मांग क्यों की जा रही थी? पाकिस्तान के हाई कमीशन में काम करने वाले मुज्जमिल से दोनों सीधे संपर्क में थे। मुज्जमिल ने इन दोनों को जासूसी के लिए अपने स्लीपर सेल में कुछ महिलाओं की भर्ती करने के निर्देश दिए थे, जिसके बाद इन लोगों ने कई महिलाओं और लड़कियों से संपर्क किया था। वाराणसी से गिरफ्तार तुफैल ने दावा किया है कि महिलाओं को भर्ती तो करना था, लेकिन उन्हें ये बात नहीं बतानी थी कि उनका इस्तेमाल जासूसी के लिए किया जा रहा है। उन्हें जानकारी देने, फोटो-वीडियो उपलब्ध कराने, किसी खास मकसद से विशेष व्यक्ति तक पहुंचाने की बात कही गई थी। शुरुआत में कुछ महिलाओं से जासूसी को लेकर बातचीत की गई थी, लेकिन इस शब्द के सामने आने के बाद महिलाएं पीछे हट गई, जिसके बाद उन्होंने उनकी भर्ती या उनका इस्तेमाल सिर्फ सूचना उपलब्ध कराने के लिए करने का फैसला किया था। यूपी एटीएस उन महिलाओं से संपर्क करने वाली है जो तुफैल के संपर्क में थी। तूफैल और हारून ने खुलासा किया महिलाओं को इस्तेमाल करने के पीछे मंशा ये थी कि महिलाओं पर सुरक्षा एजेंसियों को जल्दी शक नहीं होता या वो शक के दायरे में जल्दी नहीं आती है, इसलिए इस बार जासूसी के लिए भारतीय महिलाओं की भर्ती करने और उनकी मदद लेने का फैसला किया गया था। पूछताछ के बाद उन तीनों लोगों तक भी पहुंचने की कोशिश की जा रही है, जिनके बैंक खातों में हारून ने जासूसी में इस्तेमाल होने वाली रकम ट्रांसफर करवाई थी।

- **जासूसों से पूछताछ में मैडम-एन का नाम सामने आया, मैडम एन का पूरा नाम नौशाबा शहजाद मसूद है और ये महिला पाकिस्तान के लाहौर की रहने वाली है, इसी महिला ने जासूसी के मामले में गिरफ्तार इंफ्लुएंसर्स और यूट्यूबर्स को पाकिस्तान घुमाया था।**
- **महिलाओं को इस्तेमाल करने के पीछे मंशा ये थी कि महिलाओं पर सुरक्षा एजेंसियों को जल्दी शक नहीं होता या वो शक के दायरे में जल्द नहीं आती है, इसलिए इस बार इस काम के लिए इनकी भर्ती करने या इनकी मदद लेने का फैसला किया गया था।**

## नौ साल में 6 वीजा अधिकारी पकड़े

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पकड़े गए अधिकतर पाकिस्तानी जासूसों के तार सीधे नई दिल्ली के पाकिस्तान हाई कमीशन से जुड़े मिले। पाकिस्तान हाई कमीशन में पहले भी ऐसे कई वीजा अधिकारी पकड़े जा चुके है जो पाकिस्तान के साथ भारत की गोपनीय जानकारियां पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी से साझा करते थे। जासूसी के आरोप में गिरफ्तार ज्योति मेहरोत्रा पाकिस्तान दूतावास में तैनात एहसान उर रहमान उर्फ दानिश से सीधा संबंध था। दानिश वीजा दिलवाने की आड़ में भारतीय सेना की जासूसी कराता था। आईएसआई एजेंट होने के साथ वह पाकिस्तान हाई कमीशन में वीजा अधिकारी के पद पर कार्यरत था। दानिश अकेला आईएसआई एजेंट नहीं है, बल्कि पिछले 9 सालों में पाकिस्तान के 6 वीजा अधिकारी जासूसी करते पकड़े गए हैं। 2016 में आईएसआई ऑफिसर महमूद अख्तर को पकड़ा गया था, जो पाक हाई कमीशन में बतौर वीजा ऑफिसर तैनात था। उसने 2013 में आईएसआई ज्वाइन की थी। महमूद अख्तर के पकड़ने जाने के बाद दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने पाकिस्तान हाई कमीशन से जुड़े 5 अन्य भारतीय लोगों को भी गिरफ्तार किया था जो भारतीय फौज की खुफिया जानकारी आईएसआई और पाकिस्तान उच्च आयोग को देते थे। 31 मई 2020 को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल और मिलिट्री इंटेलिजेंस ने पाकिस्तान हाई कमीशन में तैनात दो वीजा ऑफिसर आबिद हुसैन और ताहिर खान को पकड़ा था, जो पाकिस्तान के लिए जासूसी करते थे। ये दोनों ऑफिसर आईएसआई के एजेंट थे। इसके बाद पाकिस्तान हाई कमीशन में कर्मचारियों की संख्या 180 से घटाकर 90 कर दी गई थी। 2021 में दिल्ली पुलिस ने एमआई के साथ मिलकर राणा मोहम्मद जिया को गिरफ्तार किया था। राणा पाकिस्तानी हाई कमीशन में वीजा अफसर के पद पर कार्यरत था। वह आईएसआई का एजेंट भी था। राणा के साथ आर्मी के कॉन्टेक्टर हबीब को पोखरन से पकड़ा गया था। जो राणा के साथ मिलकर पाकिस्तान को भारत की खुफिया जानकारी देता था। 2022 में पाक हाई कमीशन में बतौर वीजा अधिकारी काम करने वाले एक पीआईओ को गिरफ्तार किया गया। इसने दिल्ली के एक कुल्फी वाले को जाल में फंसाकर उससे पांच हजार रुपये में इंडियन मोबाइल सिम ली और दिल्ली के कैंटोनमेंट एरिया की फोटो और वीडियो हासिल किए थे। अप्रैल 2024 में मिलिट्री इंटेलिजेंस ने दिल्ली से गुजरात तक फैले पाक जासूसी नेटवर्क का खुलासा किया था। पाकिस्तान दूतावास में तैनात वीजा अधिकारी भारतीयों को वीजा का झांसा देकर अपने जाल में फंसाते थे। जिसके बाद वो भारतीय मोबाइल सिम हासिल कर जासूसी करते थे। खुफिया एजेंसियों को हमेशा इस बात का अंदाजा रहता है कि पाकिस्तान हाई कमीशन में तैनात स्टाफ और अधिकारियों में कुछ पाकिस्तान खुफिया एजेंसी आईएसआई के एजेंट होते है, जो गलत नाम और पद से अपना पासपोर्ट तैयार कराते हैं, फिर भारत में आकर पाकिस्तान के लिए जासूसी करते हैं। इनमें ज्यादातर एजेंट कुक, ड्राइवर, क्लर्क, वीजा अफसर, कल्चरल स्टाफ के तौर पर पाकिस्तान हाई कमीशन में काम करते हैं। इसके अलावा जासूसी में ज्यादातर उन लोगों को शामिल किया जाता है जो आम भारतीय नागरिकों से अधिक तालमेल रखते हैं और वह पैसों के लालच में या फिर मजबूरी में आईएसआई के लिए काम करने लगते हैं।

विज्ञान

# भारत की रोबोटिक फौज

**भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान रोबोटिक म्युल्स का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, वीडियो में रोबोट कुत्ते की तरह दिखाई दे रहे हैं, ये हाइटेक रोबोट म्यूल, कुत्तों की तरह फुर्तिले और खुंखार भी है जो दुश्मनों का पता लगते ही पलभर में उसे ढेर भी कर सकते हैं।**

उदयभान सिंह
लेखक

तकनीक की दुनिया में आ रहे बदलाव के साथ अब भारतीय सेना भी तकनीक के साथ कदमताल कर रही है। सेना में अब रोबोटिक म्यूल को भी शामिल कर लिया गया है। सेना दिवस की परेड-2025 में इंडियन आर्मी ने 'रोबोटिक डॉग्स' का प्रदर्शन किया है। रिहर्सल के दौरान 'रोबोटिक डॉग्स' को शामिल किया गया था। भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान रोबोटिक म्युल्स का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। वीडियो में रोबोट कुत्ते की तरह दिखाई दे रहे हैं। ये हाइटेक रोबोट म्यूल, कुत्तों की तरह फुर्तिले और खुंखार भी हैं। जो दुश्मन का पता लगते ही पलभर में उसे ढेर भी कर सकते हैं। इस 'रोबोटिक डॉग्स' को लेकर आपके मन में कई सवाल आ रहे होंगे, कि ये कैसे काम करता होगा? जवाब है ये बैटरी से चलता है और इसे चार्ज करना पड़ता है। इसमें इस्तेमाल की गई तकनीक कितनी उन्नत है? अथवा इसकी खासियत क्या है? इसे तकनीकी रूप से बताने की कोशिश करते हैं। दरअसल कुत्ते जैसा दिखने वाला ये रोबोट, रोबोटिक एमयूएलई (मल्टी-यूटिलिटी लेग्ड इक्विपमेंट) कहलाता है। इन्हें खासतौर से ऐसी जगहों के लिए बनाया जा रहा है, जहां इंसानों की पहुंच आसान नहीं है, या फिर इंसान को रहने में दिक्कत होती है। यानी खराब मौसम और बर्फीले स्थानों पर इसे रखा जा सकता है। ये इतने पावरफुल हैं कि सीढ़ियां चढ़ने या पहाड़ की सीधी चढ़ाई में भी ये माहिर है। आर्मी के ये रोबोटिक म्यूल-40 डिग्री सेल्सियस से लेकर 50 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान पर ऑपरेट किए जा सकते हैं। ये 12 से 15 किलोग्राम का वजन लेकर चल सकते हैं और इन्हें एक बार फुल चार्ज करने के बाद 20 घंटे तक चलाया जा सकता है।

### छोटे हथियारों से लैस होंगे रोबोट्स

इन रोबोट्स को दिल्ली की एयरोआर्क कंपनी ने तैयार किया है। इन रोबोट्स का वजन करीब 51 किलोग्राम है व लंबाई 27 इंच है। इसमें एनवीडिया के ग्राफिक कार्ड्स लगे हैं। इन्हें रिमोटली भी ऑपरेट कर सकते हैं। इनमें से कुछ को आटोनोमस भी इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन इन्हें आप हल्के में लेने की गलती न करें, क्योंकि ये हथियारों से लैस होते हैं। इनमें स्मॉल आर्म्स वेपन सिस्टम भी लगाया गया है। हाईटेक फीचर्स वाले इन रोबोटिक म्यूल में इलेक्ट्रो ऑप्टिकल और थर्मल इमेजिंग भी लगाए गए हैं। इनमें रेडियोऐक्टिव डिटेक्शन का फीचर भी है। यानी आर्मी को ये बताते हैं कि जहां उन्हें डिप्लोय किया गया है, वहां कैसी सिचुएशन है। इनमें कैमरा सेंसर लगा है, जिसकी वजह से ये आपस में टकराते भी नहीं है। इन्हें वैसे तो रिमोट से कंट्रोल किया जाता है, लेकिन जरूरत पड़ने पर ये ऑटोनोमस भी काम कर सकते हैं। इन्हें ऐसे तैयार किया गया है कि इनसे सेना को रियल टाइम वीडियो और ऑडियो क्लियर दिखता और सुनाई देता है। लिहाजा ये रोबोटिक डॉग्स जल्दी ही बॉर्डर पर निगरानी करते देखे जा सकते हैं। ये छोटे हथियारों से लैस होंगे और आवश्यकता पड़ने पर बिना मानव जीवन को जोखिम में डाले ये रोबो डॉग्स दुश्मन के सीने पर गोली भी चलाएंगे। कुत्तों की तरह दिखने वाले इन 'रोबोटिक डॉग्स' के पहले बैच को सेना में शामिल करने की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। खास बात यह होगी कि रोबो डॉग्स उबड़-खाबड़ जमीन पर चल सकेंगे और पहाड़ पर भी चढ़ाई करने में सक्षम होंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन रोबो डॉग का उपयोग फ्रंटलाइन सैनिकों तक हल्का भार ले जाने के लिए भी किया जा सकता है। अगर ये रोबोटिक म्यूल्स अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो इन्हें सेना में और ज्यादा तादाद में शामिल किया जाएगा।

### आर्मी का हिस्सा होंगे रोबो डॉग्स

कुछ समय पहले राजस्थान के पोखरण में हुए सैन्य अभ्यास में सेना द्वारा इन रोबोटिक डॉग म्यूल का प्रदर्शन किया गया था। इस रोबो म्यूल डॉग की चार टांगें हैं। लिहाजा ये ऊबड़-खाबड़ जमीन पर चलने के साथ दुर्गम पहाड़ी पर आसानी से चढ़ गया था। यह रोबो डॉग 3.15 घंटों तक लगातार चल सकता है। एक घंटे में रिचार्ज होकर करीब दस घंटे तक काम कर सकता है। मई में आगरा स्थित शत्रुजीत ब्रिगेड ने ऐसे ही एक रोबोटिक डॉग म्यूल की खूबियां बताई थीं। 25 रोबोटिक डॉग म्यूल का प्री-डिस्पैच निरीक्षण पूरा हो चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पिछले साल सितंबर 2024 में 100 रोबोटिक कुत्तों के लिए ऑर्डर दिया जा चुका है। लिहाजा जल्द ही इन्हें सेना में शामिल करने की तैयारी है। पिछले साल चीन ने भी ऐसे ही रोबो डॉग्स का प्रदर्शन किया था। चीन-कंबोडिया युद्ध अभ्यास के दौरान हथियारों से लैस ऐसे ही रोबो डॉग्स का प्रदर्शन किया गया था। रोबो डॉग्स इस एक्सरसाइज के शो स्टॉपर थे। चीन द्वारा प्रदर्शित इन रोबो डॉग्स ने अमेरिका को भी चिंतित कर दिया था। उसके बाद ऐसा कहा गया था कि चीन ऐसे रोबो डॉग्स को वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तैनात कर सकता है। ऐसे में भारत के ये रोबो डॉग्स उससे लोहा ले सकते हैं।

**हूमनॉइड रोबोट कठिन इलाकों में भी काम करेगा, पुणे में हुई नेशनल वर्कशॉप ऑन एडवांस्ड लेग्ड रोबोटिक्स में इस रोबोट को प्रदर्शित किया गया, अब यह प्रोजेक्ट अपने उन्नत चरण में है, टीम का ध्यान रोबोट की ऑपरेटर के निर्देशों को समझने और उन्हें लागू करने की क्षमता को बेहतर बनाने पर है।**

### 2027 में आएगा ह्यूमनॉइड रोबोट

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के वैज्ञानिक भी सैन्य मिशनों के लिए ह्यूमनॉइड रोबोट विकसित कर रहे हैं, जो जोखिम वाले क्षेत्रों में सैनिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे। यह रोबोट जटिल कार्य, स्वायत्त नेविगेशन और खतरनाक सामग्री को संभालने में सक्षम होंगे। उन्नत सेंसर, एक्ट्यूएटर्स और नियंत्रण प्रणाली से लैस, यह ह्यूमनॉइड रोबोट 2027 तक तैयार हो सकते हैं, जो रक्षा और अन्य क्षेत्रों में क्रांति लाने वाले साबित होंगे। डीआरडीओ के एक अधिकारी का कहना है कि इस रोबोट का उद्देश्य उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में सैनिकों की जान को खतरे में डाले बिना जटिल कार्यों को अंजाम देना होगा। डीआरडीओ के तहत एक प्रमुख प्रयोगशाला, रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट (इंजीनियर्स), इस मशीन को विकसित कर रही है। यह मशीन प्रत्यक्ष मानव निर्देशों पर जटिल कार्यों को करने में सक्षम होगी। इस रोबोट को विशेष रूप से ऐसे वातावरण में सैनिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किया जा रहा है, जहां जोखिम अधिक है। पुणे में सेंटर फॉर सिस्टम्स एंड टेक्नोलॉजीज फॉर एडवांस्ड रोबोटिक्स के समूह निदेशक एसई तलोले का कहना है कि उनकी टीम पिछले पांच साल से इस परियोजना पर काम कर रही है। हमने ऊपरी और निचले शरीर के लिए अलग-अलग प्रोटोटाइप विकसित किए हैं। यानी ये रोबोट मानव के डिजाइन का होगा। आंतरिक परीक्षणों के दौरान कुछ कार्यों को सफलता पूर्वक हासिल किया जा चुका है। यह ह्यूमनॉइड रोबोट जंगल जैसे कठिन इलाकों में भी काम कर सकेगा। हाल ही में पुणे में आयोजित नेशनल वर्कशॉप ऑन एडवांस्ड लेग्ड रोबोटिक्स में इस रोबोट को प्रदर्शित किया गया था। इस समय यह प्रोजेक्ट अपने

- **रोबोटिक डॉग्स जल्दी ही सीमा पर निगरानी करते दिखेंगे, ये छोटे हथियारों से लैस होंगे और जरूरत पड़ने पर बिना मानव जीवन को जोखिम में डाले ये दुश्मन के सीने पर गोली भी चलाएंगे, इन 'रोबोटिक डॉग्स' के पहले बैच को सेना में शामिल करने की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है।**
- **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के वैज्ञानिक सैन्य मिशनों के लिए ह्यूमनॉइड रोबोट विकसित कर रहे हैं, जो जोखिम वाले क्षेत्रों में सैनिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे, ये रोबोट जटिल कार्य, स्वायत्त नेविगेशन और खतरनाक सामग्रियों को संभालने में सक्षम होंगे।**

उन्नत विकास चरण में है। टीम का ध्यान रोबोट की ऑपरेटर के निर्देशों को समझने और उन्हें लागू करने की क्षमता को और बेहतर बनाने पर है। इस प्रणाली में तीन मुख्य घटक शामिल है यानी एक्ट्यूएटर्स-जो मानव मांसपेशियों की तरह गति उत्पन्न करते हैं। सेंसर-जो आसपास के वातावरण से वास्तविक समय में डेटा एकत्र करते हैं। नियंत्रण प्रणाली-जो एकत्रित जानकारी का विश्लेषण करके रोबोट के कार्यों को निर्देशित करती है। तलोले का कहना है कि सबसे बड़ी चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि रोबोट वांछित कार्यों को सुचारू रूप से कर सके। इसके लिए संतुलन, तीव्र डेटा प्रोसेसिंग और जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन में महारत हासिल करना आवश्यक है। ह्यूमनॉइड रोबोट को डिजाइन करने वाली टीम का नेतृत्व कर रहे वैज्ञानिक किरण अकेला का कहना है कि शोधकर्ता 2027 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की दिशा में काम कर रहे हैं।

### रक्षा सुरक्षा के साथ घरेलू सहायता भी

डीआरडीओ के अधिकारियों कहना है कि दो पैरों (बाइपेडल) और चार पैरों (क्वाड्रुपेडल) वाले रोबोट रक्षा और सुरक्षा के साथ स्वास्थ्य सेवा, घरेलू सहायता, अंतरिक्ष अंवेषण और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में भी अपार संभावनाएं हैं। हालांकि स्वायत्त और कुशल लेग्ड रोबोट बनाना एक बड़ी तकनीकी चुनौती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ह्यूमनॉइड रोबोट का ऊपरी हिस्सा हल्के वजन वाले हाथों से सुसज्जित होगा, जिसमें गोलाकार रिवॉल्यूट जोड़ कॉन्फिगरेशन होगा। इसमें कुल 24 डिग्री ऑफ फ्रीडम होंगे। प्रत्येक हाथ में 7, ग्रिपर में 4, और सिर में 2 होंगे। यह रोबोट जटिल परिस्थितियों में कार्य करने में सक्षम होगा, मसलन बंद-लूप ग्रिपिंग के साथ वस्तुओं को पकड़ना, वस्तुओं को मोड़ना, धक्का देना, खींचना, स्लाइडिंग दरवाजे खोलना, वाल्व खोलना और बाधाओं को पार करना। खतरनाक सामग्री जैसे खदानों, विस्फोटकों और तरल पदार्थों को सुरक्षित रूप से संभालना, दोनों हाथ मिलाकर सहयोगात्मक रूप से कार्य करेंगे, जिससे खतरनाक सामग्रियों को सुरक्षित रूप से संभाला जा सके। यह रोबोट दिन हो या रात, घर के अंदर हो या बाहर, निर्बाध रूप से काम करेगा। इसमें तकनीकी की बात करें तो प्रोप्रियोसेप्टिव और एक्सटेरोसेप्टिव सेंसर से रोबोट अपने शरीर और आसपास के वातावरण की सटीक जानकारी दे सकेगा। डेटा फ्यूजन ये रोबोट विभिन्न स्रोतों से डेटा को एकीकृत करने की क्षमता वाला होगा। सामरिक संवेदन यानी यह रोबोट को जटिल परिस्थितियों में निर्णय लेने में मदद करेगा। ऑडियो-विजुअल धारणा रोबोट को देखने और सुनने की क्षमता देगी। इसके अलावा, यह ह्यूमनॉइड बाइपेड रोबोट में फॉल और पुश रिकवरी या धक्का दिए जाने पर स्वयं को संभालने की क्षमता होगी। वास्तविक समय में मैप जनरेशन आसपास के क्षेत्र का नक्शा बनाने की क्षमता होगी। स्वायत्त नेविगेशन और पथ नियोजन समुल्टेनियस लोकलाइजेशन एंड मैपिंग (एसएलएएम) के माध्यम से यह रोबोट जटिल और उच्च जोखिम वाले वातावरण में संचालित हो सकेगा। डीआरडीओ के इस ह्यूमनॉइड रोबोट प्रोजेक्ट से न केवल रक्षा क्षेत्र में क्रांति आएगी, बल्कि यह अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस तरह की उन्नत तकनीक सैनिकों की सुरक्षा को बढ़ाने के साथ मानव जीवन को और सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने में मदद करेगी। ●

व्यक्तित्व

# श्रीदेव सुमन का बलिदान

**विद्यार्थी जीवन के प्रारंभिक काल से ही श्रीदेव सुमन, महात्मा गांधी के देशभक्तिपूर्ण विचारों से बहुत प्रभावित थे, 1930 में जब वह किसी काम से देहरादून गए थे तो सत्याग्रही जत्थों को देखकर वे उनमें शामिल हो गए, लिहाजा उन्हें 14-15 दिन की जेल भी हुई।**

उत्तराखंड में आजादी की राह दिखाने वाले श्रीदेव सुमन का जन्म टिहरी गढ़वाल जिले की बमुंड पट्टी के ग्राम जौल में 25 मई, 1916 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री हरिराम बड़ोनी और माता का नाम श्रीमती तारा देवी था। हरिराम बडोनी अपने इलाके के लोकप्रिय वैद्य थे। 1919 में जब क्षेत्र में हैजे का प्रकोप हुआ तो उन्होंने अपनी परवाह किए बिना रोगियों की सेवा की, जिससे वे 36 वर्ष की अल्पायु में स्वयं भी हैजे के शिकार हो गए, लेकिन दृढ़निश्चयी साध्वी माता ने धैर्य के साथ बच्चों का पालन-पोषण किया और श्रीदेव सुमन की शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबंध किया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव और चम्बाखाल में हुइ। 1931 में टिहरी से हिंदी मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने विद्यार्थी जीवन के प्रारंभिक काल से ही श्रीदेव सुमन, महात्मा गांधी के देशभक्ति पूर्ण विचारों से बहुत प्रभावित थे। 1930 में जब वह किसी काम से देहरादून गए थे तो सत्याग्रही जत्थों को देखकर वे उनमें शामिल हो गए, लिहाजा उन्हें 14-15 दिन की जेल भी हुई। 1931 में वो देहरादून गए और वहां नेशनल हिंदू स्कूल में शिक्षा देने का काम करने लगे और उसके बाद दिल्ली चले गए। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने 'रत्न','भूषण' और 'प्रभाकर' परीक्षाएं उत्तीर्ण की फिर हिंदी साहित्य सम्मेलन की 'विशारद' और 'साहित्य रत्न' की परीक्षाएं भी उत्तीर्ण कीं।

देवनागरी महाविद्यालय की स्थापना

दिल्ली में उन्होंने कुछ मित्रों के सहयोग से देवनागरी महाविद्यालय की स्थापना की और 1937 में 'सुमन सौरभ' नाम से अपनी कविताएं भी प्रकाशित कराईं। श्रीदेव सुमन को पत्रकारिता में विशेष रुचि थी लिहाजा उन्होंने भाई परमानंद के अखबार 'हिंदू' में कार्य किया, फिर 'धर्म राज्य' पत्र में कार्य किया। वे वर्धा भी गए और राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यालय में काम करने लगे। इस दौरान श्रीदेव सुमन काका कालेलकर और लक्ष्मीधर बाजपेई आदि के संपर्क में आए। वहां से इलाहाबाद आकर 'राष्ट्र मत' नामक समाचार पत्र में सहायक संपादक के रूप में काम करने लगे। जनता की क्रियात्मक सेवा करने के उद्देश्य से 1937 में उन्होंने दिल्ली में 'गढ़देश-सेवा-संघ' की स्थापना की जो बाद में 'हिमालय सेवा संघ' के नाम से विख्यात हुआ। 1938 में जब वह गढ़वाल भ्रमण पर गए और जिला राजनीतिक सम्मेलन, श्रीनगर में शामिल हुए तब से वो पूरी तरह से सार्वजनिक जीवन में आ गए। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू को गढ़वाल राज्य की दुर्दशा से परिचित कराया। यहीं उन्होंने गढ़वाल राज्य की एकता का नारा भी बुलंद किया। जिसके बाद ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें ढ़ाई महीने देहरादून जेल में रखने के बाद आगरा सेंट्रल जेल भेज दिया। जहां श्रीदेव सुमन 15 महीने नजरबंद रखे गए। इससे टिहरी रियासत की जनता लगातार लामबंद होती रही और अंग्रेज हुकुमत के इशारे पर रियासत उनका उत्पीड़न करती रही। टिहरी रियासत के जुल्मों के संबंध में जवाहर लाल नेहरू ने कहा था-'टिहरी राज्य के कैद खाने दुनिया भर में मशहूर रहेंगे, लेकिन इससे दुनिया में रियासत की कोई इज्जत नहीं बढ़ सकती।' 23 जनवरी, 1939 को देहरादून में टिहरी राज्य प्रजा मंडलकी स्थापना हुई, जिसमें श्रीदेव सुमन संयोजक मंत्री चुने गए। इसी माह जब जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्का लुधियाना अधिवेशन हुआ तो उन्होंने टिहरी और अन्य हिमालयी रियासतों की समस्या को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। 'हिमालय सेवा संघ' द्वारा उन्होंने हिमालय प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद का गठन किया और उसके द्वारा पर्वतीय राज्यों में जागृति और चेतना लाने का काम किया। इस बीच लैंसडाउन से प्रकाशित 'कर्मभूमि' पत्रिका के संपादन मंडल में शामिल होकर उन्होंने कई क्रांतिकारी लेख लिखे।

> **1937 में श्रीदेव सुमन ने दिल्ली में 'गढ़देश-सेवा-संघ' की स्थापना की जो बाद में हिमालय सेवा संघ' के नाम से विख्यात हुआ, 1938 में जब वह गढ़वाल भ्रमण पर गए और जिला राजनीतिक सम्मेलन श्रीनगर में शामिल हुए तब से वो पूरी तरह से सार्वजनिक जीवन में आ गए।**

## श्रीदेव सुमन का जीवन प्रासंगिक

अगस्त, 1942 में जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो' आंदोलन शुरू हुआ तो टिहरी आते समय उन्हें 29 अगस्त, 1942को देवप्रयाग में ही गिरफ्तार कर लिया गया और 10 दिन मुनि की रेती जेल में रखने के बाद 6 सितंबर को देहरादून जेल भेज दिया गया। 19 नवंबर, 1942 को श्रीदेव सुमन आगरा जेल से रिहा हुए और फिर टिहरी की जनता के अधिकारों को लेकर अपनी आवाज बुलंद करने लगे। इनके क्रांतिकारी शब्द थे-'मैं अपने शरीर के कण-कण को नष्ट होने दूंगा लेकिन टिहरी के नागरिक अधिकारों को कुचलने नहीं दूंगा।' इस बीच उन्होंने दरबार और प्रजामंडल के बीच सम्मानजनक समझौता कराने का संधि प्रस्ताव भी भेजा, लेकिन दरबारियों ने उसे खारिज कर दिया। 27 दिसंबर, 1942को श्रीदेव सुमन को एक बार फिर चंबाखाल में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और 30 दिसंबर को टिहरी जेल भिजवा दिया, जहां उन्हें काफी प्रताड़ना दी गई। वहां उन्हें जो खाना दिया जाता था वो खाने लायक नहीं होता था जिससे तंग आकर उन्होंने अनशन शुरू कर दिया और 84 दिन तक लगातार अनशन किया जिसके बाद 25 जुलाई 1944 को इस क्रांतिकारी अमर शहीद का शव ही बाहर आ सका। अपनी जन्मभूमि के प्रति ऐसी अपार श्रद्धा तथा बलिदान की भावना रखने वाले उत्तराखंड के इस महान स्वतंत्रता सेनानी, अमर शहीद श्रीदेव सुमन का जीवन दर्शन और उनके क्रांतिकारी विचार वर्तमान संदर्भ में आज भी बहुत प्रासंगिक हो गए हैं। उत्तराखंड के इस महान क्रांतिकारी के देशभक्तिपूर्ण जीवन मूल्यों को कभी नहीं भुलाया जा सकता। कहने को तो आज हमारा देश अंग्रेजों की राजनीतिक गुलामी से आजाद हो चुका है किंतु अवसरवादी सत्तालोलुप राजनेताओं की वजह से यहां की अधिकांश जनता और खासकर उत्तराखंड की जनता आजादी मिलने के बाद भी अपनी आजीविका, स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि मौलिक अधिकारों से वंचित होने के कारण बदहाली का जीवन बिता रही है अथवा पलायन के लिए विवश है। मानवाधिकारों के संकट से जूझ रहे उत्तराखंडवासियों के लिए अमर शहीद स्वंत्रता सेनानी श्रीदेव सुमन का जीवन दर्शन आज पहले से भी ज्यादा अनुकरणीय हो गया है। श्रीदेव सुमन का एक देशभक्तिपूर्ण कविता संग्रह 'सुमन सौरभ' नाम से 1937 में प्रकाशित हुआ था। बहुत कम लोगों को इस कविता संग्रह के बारे में जानकारी है। कैसे रहे होंगे देश हित को समर्पित इस क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त के विचार। उसी कविता संग्रह में 'जननी जन्मभूमि' शीर्षक से लिखी कविता है-

जिस जननी के शुचि रजकण से, तन मन है यह जीवन है।
जिसके निस्सीम अनुग्रह से, मिलता उर को नित भोजन है।
शुभ स्नेहमयी जिस गोदी में, विश्राम हमें मिलता नित है।
जिस राष्ट्र ध्वजा के तले अहा, बन मोदमयी खिलता चित है।
वह प्रेम की मूर्ति मनोरम हां, सुख शांति से हीन अहो अब है।
मुख मंजुल कांतिविहीन बना, उसको सुख हाय मिला कब है...।

श्रीदेव सुमन रचित 'सुमन सौरभ' नाम से प्रकाशित उनकी कविता 'जननी जन्म भूमि' की इन काव्य पंक्तियों द्वारा टिहरी जनक्रांति के नायक, संघर्ष व बलिदान की प्रतिमूर्ति, अमर शहीद श्रीदेव सुमन का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। अपने जीते जी न सही, अपने बलिदान के बाद वे अपना मकसद पूरा कर गए। उनके बलिदान ने जनता पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ा कि उनके बलिदान को देखकर टिहरी रियासत में आंदोलन और तेज हो गया। जनता ने राजशाही के खिलाफ खुला विद्रोह कर दिया। लिहाजा टिहरी रियासत को प्रजामंडल को वैधानिक करार देने को मजबूर होना पड़ा। मई 1947 में प्रजामंडल का प्रथम अधिवेशन हुआ। 1948 में जनता ने देवप्रयाग, कीर्तिनगर और टिहरी पर अधिकार कर लिया और प्रजामंडल के मंत्री परिषद का गठन हुआ। इसके बाद 1 अगस्त 1949 को टिहरी गढ़वाल रियासत का भारतीय गणराज्य में विलय हो गया। पुराने टिहरी शहर की जेल और काल कोठरी तो अब बांध बन जाने से डूब गई है, पर नई टिहरी की जेल में उन्हें बांधने वाली हथकड़ी व बेड़ियां अब भी मौजूद हैं। श्रीदेव सुमन ने 17 जून 1937 को 'सुमन सौरभ' नामक 32 पेजों का यह संग्रह प्रकाशित किया। वे हिंदू, धर्मराज, राष्ट्रमत, कर्मभूमि जैसे हिंदी व अंग्रेजी के समाचार पत्रों के संपादन से जुड़े रहे। वे 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के भी सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन्होंने गढ़ देश सेवा संघ, हिमालय सेवा संघ, हिमालय प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद, हिमालय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद आदि संस्थाओं की स्थापना की। श्री देव सुमन के बलिदान दिवस 25 जुलाई को ऐतिहासिक जेल जनता के दर्शनार्थ खोली जाती है। टिहरी रियासत ने जिन बेड़ियों से श्रीदेव सुमन को जकड़ा था। जनता उन बेड़ियों को भी नमन करती है। उत्तराखंड सरकार ने एक विश्वविद्यालय का नामकरण किया है। शहीद श्रीदेव सुमन को आज पूरा उत्तराखंड याद करता है। महान क्रांतिकारी श्रीदेव सुमन के परिजनों ने उनसे जुड़ी वस्तुओं को संजोकर रखा है। राजशाही की पुलिस का डंडा श्रीदेव सुमन के परिजनों ने अभी तक संजोकर रखा है। क्योंकि श्रीदेव सुमन को देखते ही पुलिस के एक जवान ने उनके ऊपर जोर से डंडा फेंका था। श्रीदेव सुमन तो भाग गए, लेकिन डंडा एक झाड़ी में उलझ गया। जो डंडा झाड़ी में अटक गया था, उसे श्रीदेव सुमन की मां ने अपने पास छिपा लिया था। राजशाही की पुलिस ने सुमन की मां से डंडा वापस मांगा और धमकी भी दी, लेकिन श्रीदेव सुमन की मां ने डंडा वापस नहीं दिया। इसके बाद राजशाही की पुलिस टिहरी वापस चली गई। वहीं श्रीदेव सुमन के भाई के बेटे मस्तराम बडोनी की मानें तो श्रीदेव सुमन से जुड़ी यादें पलंग, डेस्क और पुलिस का डंडा आज भी उनके पास सुरक्षित है। जिन्हें वे अपने पितरों की निशानी समझते हैं।

- **देश अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हो चुका है किंतु सत्तालोलुप राजनेताओं की वजह से खासकर उत्तराखंड की जनता आजादी मिलने के बाद भी अपनी आजीविका, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि मौलिक अधिकारों से वंचित होने के कारण बदहाली का जीवन बिता रही है।**
- **राजशाही पुलिस का डंडा श्रीदेव सुमन के परिजनों ने अभी तक संजोकर रखा है क्योंकि श्रीदेव को देखते ही पुलिस वाले ने उनके ऊपर जोर से डंडा फेंका था, जो एक झाड़ी में उलझ गया, बाद में यह डंडा श्रीदेव सुमन की मां ने अपने पास छिपा लिया था।**

डा.भारत भूषण
आईएफटीएम

# छी वतन के गद्दारों

**भारत में घुसपैठ करने पर वहां की विपक्षी पार्टियां तमाम सुविधाएं देने के लिए उतावली रहती हैं वो भी बिलकुल मुफ्त...मुफ्त...मुफ्त...। भारत में घुसते ही पप्पू टाइप नेता पहले आधार कार्ड बनवाएंगे, फिर एक राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, पासपोर्ट, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त इलाज, मुफ्त राशन आदि आदि दिलाएंगे।**

प्रदीप डी भट्ट
लेखक, मेरठ

आपराधिक मामले में भारत की जेल में उम्र कैद की सजा काट रहे श्रीलंका के एक नागरिक ने सुप्रीम कोर्ट में आवेदन कर भारत में रहने के लिए शरण मांगी थी, इस आवेदन के संदर्भ में ऐतिहासिक फैसला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि भारत दुनिया भर के शरणार्थियों के लिए धर्मशाला नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि अनुच्छेद 19 केवल भारतीय नागरिकों के लिए है। कोर्ट ने याचिकाकर्ता श्रीलंका के नागरिक को किसी अन्य देश में शरण लेने की सलाह देते हुए अपनी टिप्पणी में यह भी जोड़ दिया कि भारत स्वयं 140 करोड़ की जनसंख्या के साथ बहुत सी समस्याएं झेल रहा है, इसलिए भैया तुम पहले अपनी सजा पूरी करो और पहली फुर्सत में श्रीलंका निकल लो। बात तो कायदे की है, लेकिन यहां मानता कौन है जी। यकीन नहीं आता तो एक बानगी देखिए। फक्कड़ कमरुद्दीन मियां अपने पांच निठल्ले दोस्तों बदरुद्दी, एहसास मलिक, शकील कुरैशी, मुख्तार अहमद और चांद मियां के साथ कराची (पाकिस्तान) के उजड़े हुए पार्क में बैठ कर पाकिस्तान की खस्ताहाल होती माली हालत का गुणा-भाग लगा रहे थे, वे कभी सुरसा के मुंह जैसी फैलती महगांई पर अपना ज्ञान पेलते तो कभी हिमालय की ऊंचाई की तरह बढ़ रहे टैक्स पर अपना सिर पीटते, वो कभी सरकार को कोसते तो कभी गुंडी पाक आर्मी की मनहूसियत और अमेरिका को कोसना नहीं भूलते। अच्छी बात ये थी कि अभी तक इन छहों के बीच सर फुटव्वल नहीं हुई थी। एजुकेशन के नाम पर मदरसा छाप ज्ञान और जहन में भरा जज्बे व कलमे का फितूर तथा जिहाद तो हर फटेस्तानी (पाकिस्तान) में दिख ही जाता है। इनमें एक अच्छी बात थी तो वो ये कि सभी हाथ के कारीगर थे कोई एक-47 बनाना जानता था तो कोई देशी तमंचों और कारतूसों का कारीगर था। वैसे भी पाकिस्तान में अस्लाह बनाने वाले हर गली मोहल्ले में मिलते हैं।

## भिखारी मुल्क पाकिस्तान के धूर्त

खैर खस्ताहाल मुल्क के खस्ताहाल पार्क की मीटिंग के बाद छहों ने फैसला किया कि भिखारी मुल्क की तो दिन-ब-दिन भीख मांगने में जीडीपी ऊंचाई छू रही है। लिहाजा पहली फुर्सत में परदेश निकल लेने पर बहस का इंतकाल हुआ। शकील मियां सिर की खुजली मिटाते हुए बोला मियां एक बात कहूं अगर पासपोर्ट वीजा के चक्कर में पड़े तो सात जन्म तक पाकिस्तान में ही गलना-सड़ना पड़ेगा। सो भैय्ये मेरी राय तो जे है कि पतली गली (डंकी रूट) पकड़ कर परदेश निकल लेते हैं। कमरुद्दीन मियां भी खलीफा हैं लिहाजा वो कहां चुप रहने वाले थे उसने भी सलाह दे डाली, भाईजान मेरा एक हमदर्द अबरार है, जो हम जैसों को पिछले दरवज्जे से परदेश भिजवा देता है। लेकिन है तो थोड़ा सनकी, पर वो हमारी तकदीर खोल सकता है, सो सभी निठल्ले शाम चौदहवीं का चांद देखते ही अबरार के घर जा धमके। मनोहर कहानियां स्टाइल में सबने अपनी अपनी दर्दभरी दास्तां अबरार को सुना डाली। उनकी दास्तां सुनने के बाद कच्ची छलिया चबाते हुए अबरार बोला सुनो बे लकड़बग्घो ये डेली सोप मुझे मति दिखाओ, जहां कहोगे भिजवा दूंगा लेकिन पैसे पूरे लगेंगे बेटा। जैसा देश वैसा पैसा। बोलो मंजूर हो तो पैकेज दिखाऊं नहीं तो बेटा जिस दरवज्जे से आए हो उस्से ही बाहर निकल लो...। छहों ने अपनी अपनी बत्तीसी दिखाते हुए झट पैकेज दिखाने की फरियाद लगा दी। अबरार ने तुरंत बाबा आदम के जमाने का कंप्यूटर खोला और थोड़ी देर में हर परदेश की पतली गली का रेट बताना शुरू कर दिया। उसने रेट बताने के साथ नफे-नुकसान का पिटारा भी खोल दिया।

## सरहद पार करने के पैकेज

अबरार ने पैकेज बताने शुरू किए दक्षिण कोरिया में पतली गली से दाखिल कराने के एवज में 2 लाख इंडियन करेंसी लगेगी। बीच रास्ते में पकड़े गए तो 12 बरस के लिए सश्रम कारागार में डाल दिया जाएगा। ठुकाई-पिटाई अलग से होगी, बताओं ओके करूं...? ईरान में पतली गली से सरहद पार करवाने के डेढ़ लाख इंडियन करेंसी लगेगी। वहां खप गए तो मौज ही मौज पकड़े गए तो तुड़ाई के साथ ठुकाई भी होगी, सलाखों के पीछे भी रहना होगा, बोलो मंजूर है...? अफगानिस्तान में पिछले दरवज्जे से जाने का रेट एक लाख इंडियन करेंसी जमा करनी होगी। अगर घुसपैठ करते पकड़े गए तो कोर्ट कचहरी का कोई चक्कर नहीं काटना पड़ेगा क्योंकि अफगानिस्तानी तो देखते ही सीधे सिर में पीतल भर देते हैं। यानी सारी टेंशन एक ही झटके में खत्म। चीनी में भी पतली गली से घुसने की गुंजाइश है पर इसका रेट थोड़ा ज्यादा है। कहो तो बताऊं, हां...हां...बताइए, चीन तो वैसे भी हमारा हमसाया और दोस्त है, तो सुनो पतली गली से घुसने के तीन लाख इंडियन करेंसी देनी पड़ेगी। घुस गए तो तुम्हारा मुक्कदर और पकड़े गए तो पुलिस अपहरण कर लेगी फिर ढंग से छेतेगी। तुम्हें पता चलेगा चाइना अपने बाप का भी दोस्त नहीं फिर पाकिस्तान का कैसे होगा? तुम्हें खौफनाक यातनाएं देखकर जिंदगी से अच्छी मौत लगने लगेगी। वैसे चीन में मुसलमानों को नमाज भी नहीं पढ़ने दी जाती। क्यूबा में भी पिछले दरवज्जे से घुसने की गुंजाइश है, अगर घुसपैठ करते पकड़े गए तो राजनीतिक षडयंत्र के जुर्म में जेल में डाल दिया जाएगा। साफ-साफ समझें जिंदगी न मिलेगी दोबारा वाली सीन होगा। बस यही एक गली है जिसकी मैं कोई फीस-वीस नहीं लेता।

ब्रिटिश की सरदह लांघने पर तो देखते ही बंदी बना लिया जाएगा, जेल भेजा जाएगा और मुकदमा चलेगा। सजा भुगतनी होगी और फिर लात मारकर वहीं फेंक दिया जाएगा जहां से निकलोगे, यानी पाकिस्तान में। इसकी फीस जिंदा रहे तो दे देना। बस अबरार भाई बस अब और नहीं सुनने की ताकत रही। इससे अच्छे तो हम अपने भिखारी मुल्क में ही ठीक हैं। आप तो डरा रहे हो अबरार भाई और ये क्या आप फीस इंडियन करेंसी में क्यों मांग रहे हो अमेरिका का पैकेज क्यों नहीं दिखाया? अबरार ने घूर कर देखा फिर बोला बहन के टको सारी दुनिया में 57 मुस्लिम देश हैं पर किसी भी मुस्लिम को किसी भी मुस्लिम देश में घुसपैठ नहीं करनी है, सोचा है ऐसा क्यों? छहों ने अपनी न में मुंडी हिलाई तो अबरार बोला क्योंकि सबको ऐशो आराम चाहिए शरिया वाला इस्लाम का रुल नहीं और हां अमेरिका भिजवाने का प्रोग्राम तो सैट करवा दूं पर तुम्हारी थूथन देखकर डंकी रूट पर पड़ने वाला वो जो जंगल है न जिसके जानवर भी तुम्हें देख कर डर जाएंगे। पर अबरार भाई एक बात तो बताओ कि दुनिया में इत्ते सारे देश हैं कोई देश तो ऐसा होगा जहां चार पैसे कमा कर आतंक की फैक्टरी चलाई जा सके?

## पाक की क्या औकात

हां मियां ऐसा भी एक देश है भारत जो हमारा हमसाया भी है फिर सिर खुजलाते हुए बोला पड़ोसी क्या है मियां वो वास्तव में अब हमारा बाप ही है। हम गलती करते हैं वो हमें ढ़ंग से रगड़ता और ठोकता है युद्ध में भी और क्रिकेट में भी लेकिन भारत में कुछ पप्पू टाइप नेता हैं जो हमारी भरपूर मदद करते हैं। नीतियों की बात बताऊं तो सभी मुस्लिम देशों से भी ज्यादा बढ़िया है...। कहो तो वहां भिजवा दूं, लेकिन टका 5 लाख लगेगा वो भी इंडियन करेंसी में और एक आदमी का। पैकेज देख लो मना नहीं कर पाओगे। अबकी बार बदरुद्दीन बोला ये ठीक रहेगा न भाषा की दिक्कत न खाने-पीने की दिक्कत दिखाओ अबरार भाई दिखाओ, लेकिन ये इंडियन करेंसी ही क्यों? अबरार ने कंखियों से छहों को देखा फिर बोला अबे पाकिस्तान की करेंसी की औकात ही क्या बची है पाकिस्तान में, सरकार की तो बात ही छोड़ दो चलो जाहिलो स्पेशल पैकेज का पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन पर अपने गोल मटोल दीदे गड़ाओ। छहों ने अबरार को सलाम ठोका और अपने अपने दीदे बाबा आदम के जमाने के कंप्यूटर की गंदी स्क्रीन पर गड़ा दिए।

## गद्दारों ने धर्मशाला बनाया वतन

भारत में पतली गली या पिछले दरवज्जे पर घुसने पर आपको वहां की विपक्षी पार्टियां निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान करने के लिए हमेशा उतावली रहती हैं वो भी बिलकुल मुफ्त...मुफ्त...मुफ्त...। भारत में घुसते ही पहले मुफ्त में आधार कार्ड बनवाएंगे, फिर एक राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, पासपोर्ट, सरकारी रियायती किराए पर आवास, मुफ्त मकान, घर खरीदने के लिए कर्ज, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त इलाज, मुफ्त राशन, सड़क पर नमाज पढ़ने की आजादी, विशेषज्ञ मानव अधिकार के सेक्युलर कार्यकर्ताओं के गैंग के साथ आपकी नियमित मीटिंगे। भले ही आप पंक्चर बनाते हों किंतु यदि आपको लव जिहाद करना है तो करें कोई रोक टोक नहीं होगी, कहीं मजार बनाओं, सरकारी जमीन पर कब्जा करो, तमंचे और गोला बारूद बनाकर बेचों, विस्फोट और धमाके करो, पत्थरबाजी करो, पकड़े गए तो विपक्ष की 40 पार्टी तुम्हारे पीछे खड़ी होंगी, तोते की चोंच जैसी नाक वाले, ममतामयी मां, पप्पू और खुजलीवाल जैसे सियासतदान, वामपंथी, डीप स्टेट और जॉज सोरोस के चेले चपाटे आपको मासूम बताएंगे, भटका हुआ बताएंगे, कोर्ट में पैरवी करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के भिब्बल, कलमान भाई और भिंडी जैसे एक दिन का लाखों रुपये फीस लेने वाले बड़े वकील मुफ्त में रात में कोर्ट खुलवा देंगे। दबा कर पैरवी करेंगे, जमानत से लेकर नेता बनाने तक पीछा नहीं छोड़ेंगे। किसी ने तुमसे भारतीय होने का सबूत मांग लिया तो पूरा विपक्ष शाहीनबाग की रोड जाम कर देगा, नारा लगेगा भाजपा सरकार गरीबों पर जुर्म कर रही है। तुम्हारी पैरवी करने वाले कहेंगे इनके बाप-दादा सौ साल से यहां रह रहे हैं, कैसे कागज किसके कागज सब बाढ़ में बह गए, आग में जल गए। कहां से लाए कागज? तो मियां भारत में ये सारी सुविधा हैं हां क्योंकि भारत का मूल निवासी बहुसंख्यक हिंदू अपना धर्म भूल चुका है, अपनी संस्कृति खो चुका है। सहिष्णुता को गांधी जैसा एक खलीफा धर्म बता गया है। बाकी आप जो चाहें या करो कोई रोकटोक नहीं है, लेकिन अब तो हमारे यहां से भारत गई अंडे देने वाली मुर्गी भी भगाई जा रही हैं, जरा संभल कर रहना।

## सरहद पार की मुर्गी दे रही अंडे

पूरा पैकेज पढ़ते पढ़ते छहों छिछोरों की आंखों में ऐसी चमक उभरी कि सबके मुंह से एक साथ निकला अबरार मियां अल्लाह ताला आपको जन्नत बख्शे आपने ये पैकेज पहले क्यूं नहीं दिखाया। एक बात और हम इत्ता कुछ वहां करेंगे तो हिंदू हमें छेतेगा नहीं क्या? अबरार ने एक दरिंदगी वाली हंसी के साथ अपना मुंह खोला और बोला अगर पहले बता देता तो तुम्हें इसका लुत्फ कैसे मिलता जाहिलो। अचानक चांद मियां बोल उठे एक सवाल और है अबरार भाई जब भारत का पैकेज इत्ता उम्दा है तो आप क्यूं सड़ रिए हो यहां म्हारे साथ आप भी निकल लो। अबरार ने फिर खींसे निपोर दीं और बोला तुम ठहरे सी सल्फेट कभी नहीं समझोगे। मैं हूं असली पाकिस्तानी और इस्लाम को मानने वाला बड़े ठाठ से पाकिस्तानी पासपोर्ट पर हर दो तीन बरस में इंडिया जाता हूं शादी करता हूं बच्चे पैदा करता हूं और एक बार पाकिस्तान की सैर करवाकर बेगम को बच्चों के साथ इंडिया छोड़ आता हूं। यहां तो अपने ही खाने के लाले पड़े हैं तो अपने छः इंडियन बच्चों का पेट कैसे भरूंगा? तो बस यहां एक बेगम से 6 बच्चे उधर 2 इंडियन बीबी से 6-6 बच्चे। आखिर इंडियन गवर्नमेंट फ्री राशन दे रही है न। यानी इधर की मुर्गी उधर और उधर की मुर्गी इधर अंडे दे रही हैं। अबरार की बातें सुनकर छहों को जोर का झटका कुछ ज़्यादा ही जोर से लगा। फिर भी शकील बोल ही पड़ा अबरार भाई आपने बताया नहीं वहां हिंदुस्तान में हमें रोकने वाला कोई नहीं है क्या? अबरार बोला अबे सी सल्फेट हिंदुस्तान के नेता हिंदूओं को सेकुलर...सेकुलर का चूरन खिलाकर अपने ही देश में हमसे ज्यादा प्रताड़ित और तंग करते हैं।

---

**खस्ताहाल मुल्क के खस्ताहाल पार्क की मीटिंग के बाद छह निठल्लों ने फैसला किया कि भिखारी मुल्क में जिंदगी ज्यादा नहीं है लिहाजा पहली फुर्सत में परदेश निकल लेने पर बहस का इंतकाल हुआ, शकील मियां सिर की खुजली मिटाते हुए बोला मियां एक बात कहूं अगर पासपोर्ट वीजा के चक्कर में पड़े तो 7 जन्म तक पाकिस्तान में ही सड़ना पड़ेगा, लिहाजा पतली गली से निकलते हैं।**

---

- **सरकारी जमीन पर कब्जा करो, तमंचे, गोला बारुद बनाकर बेचों, विस्फोट करो, पत्थरबाजी करो, पकड़े गए तो विपक्ष की 40 पार्टी तुम्हारे पीछे खड़ी होंगी, वामपंथी और जॉज सोरोस के चेले चपाटे मासूम व भटका हुआ बताएंगे, कोर्ट में पैरवी के लिए सुप्रीम कोर्ट के भिब्बल, कलमान भाई और भिंडी जैसे बड़े वकील मुफ्त में रात में कोर्ट खुलवा देंगे।**
- **मैं हूं असली पाकिस्तानी व इस्लाम मानने वाला बड़े ठाठ से पाकिस्तानी पासपोर्ट पर हर दो तीन बरस में इंडिया जाता हूं शादी करता हूं बच्चे पैदा करता हूं और एक बार पाकिस्तान की सैर कराकर बेगम को बच्चों के साथ इंडिया छोड़ आता हूं, यहां तो अपने ही खाने के लाले पड़े हैं तो अपने 6 इंडियन बच्चों का पेट कैसे भरुंगा?**

परमाणु

# हम क्यों बनें हिबाकुशा ?

**भारत को 6 अगस्त 1945 का वह काला दिन आज भी याद है जब अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला परमाणु बम गिराया था, जापान आज तक उससे उबर नहीं पाया था कि अमेरिका ने ठीक-तीन दिन बाद जापान के ही दूसरे शहर नागासाकी पर दूसरा परमाणु हमला कर दिया।**

डॉ.जय महलवाल
बिलासपुर, हिमाचल

अगर हम भारत-पाकिस्तान के युद्ध की बात करें तो युद्ध आरंभ से युद्ध विराम तक हम पाते हैं कि युद्ध शुरू होने से पहले हम क्या थे और युद्ध विराम तक आते-आते हमारी सोच क्या हो गई? बात करें भारत के उत्तरी राज्यों की तो यहां पर हर जन मानस सहमा हुआ था। जैसे-जैसे युद्ध आगे प्रवेश करता गया लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना तो जागी, लेकिन दूसरी तरफ लोग यह सोचने को भी मजबूर हो गए कि नुकसान तो हमारा भी होगा और अगर होगा तो किस तरह का नुकसान होगा? यह युद्ध अगर लंबा खिंचा तो बात परमाणु हथियारों के इस्तेमाल तक पहुंच सकती। जैसा सबको मालूम है कि भारत भी परमाणु संपन्न देश है तो पाकिस्तान के पास भी बहुत सारे परमाणु हथियार हैं। परंतु भारत कभी भी परमाणु हथियार चलाने की पहल नहीं करेगा, यह भारत पहले ही घोषित कर चुका है। परंतु इसका कतई मतलब यह भी नहीं है कि भारत अपने पूरे राज्यों अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए बिल्कुल चुप बैठेगा। अब भारत वो भारत नहीं रहा की आंखें मूंद कर मौन बैठा रहे। अब हमारा देश किसी भी दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए बिल्कुल पक्के इरादों के साथ बैठा है। यह तो भारत ने पाकिस्तान को तीन दिन में ही जता और बता दिया कि किस तरह से हवाई क्षेत्र हो या जल क्षेत्र हो या फिर जमीन की बात हो हम किसी भी क्षेत्र कम नहीं है और किसी ने अगर आंख उठाकर हमारे भारत की तरफ देखा तो उसकी आंख नोचने में हम कतई भी देर नहीं करेंगे।

### जापान भुगत रहा है परमाणु बम का दंश

आखिरकार भारत चुप क्यों रहता है? क्योंकि भारत को 6 अगस्त 1945 का वह काला दिन आज भी याद है जब अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला परमाणु बम गिराया था। जापान आज तक उससे उबर नहीं पाया था कि अमेरिका ने ठीक-तीन दिन बाद जापान के ही दूसरे शहर नागासाकी पर दूसरा परमाणु हमला कर दिया। इन परमाणु हमलों से वहां बहुत तहस-नहस, बर्बादी और मानवता का लगभग नामोनिशान मिट गया था। 1945 की इस त्रासदी को हम कैसे भूल सकते हैं? मानवता के इतिहास का वह सबसे काला दिन था। पल भर में ही 1.5 लाख लोग एक झटके में खत्म हो गए थे। मानव द्वारा मानव पर किया गया यह सबसे कुकृत्य, घिनौना और निर्मम अपराध था, जिसका सीधे-सीधे अमेरिका जिम्मेदार था। इसका खामियाजा आज तक वहां के लोग भुगत रहे हैं। कहा जाता है कि आज भी नागासाकी और हिरोशिमा में विकृत रूप में बच्चे पैदा होते हैं। हिबाकुशा प्रजाति यहीं से आरंभ हुई। जब अमेरिका ने दो परमाणु बम लिटिल बॉय और फैट मैन तैयार किया। उनका इस्तेमाल जापान पर किया तो खूनी मंजर देखकर उनको बनाने वाले अमेरिकी वैज्ञानिक रॉबर्ट ओपनहाइमर ने कहा था कि 'मेरे हाथ लाखों बेकसूर लोगों के खून से सने हुए हैं'। बेशक आज के दौर में रूस, अमेरिका, भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, उत्तरी कोरिया, फ्रांस, ब्रिटेन, पाकिस्तान इत्यादि परमाणु संपन्न देश बन चुके हैं। लेकिन अगर किसी भी देश ने दूसरे देश पर परमाणु हमला किया तो वहां के लोगों को हिबाकुशा बनने से कोई भी नहीं रोक सकता है।

### समाज से अलग-थलग परमाणु पीड़ित

शिव कुशल जापानी भाषा से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ है 'विस्फोट से प्रभावित इंसान'। एक रिपोर्ट के अनुसार जब हिरोशिमा शहर पर परमाणु हमला हुआ था तो लगभग एक मिनट में ही शहर का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा निस्तेनाबूद हो गया था, या दूसरा शब्दों में कहा जाए तो बिल्कुल राख हो चुका था। जो लोग बच गए वे जहरीली विकिरणों और काली बारिश की चपेट में आ गए और वो भयंकर बीमारियों से ग्रसित हो गए। हजारों लोग कैंसर और ल्यूकेमिया जैसे रोगों से पीड़ित हो गए थे। यह एक यूरेनियम गन-प्रकार का बम था जो लगभग तेरह किलोटन बल के साथ फटा था। बमबारी के समय, हिरोशिमा में 2.80 लाख से 2.90 लाख नागरिक और 43,000 सैनिक मारे गए थे। माना जाता है कि विस्फोट के बाद चार महीने की अवधि में परमाणु बम के निकलने वाली रेडिएशन से 90,000 से 1.66 लाख लोगों की मौत हुई थी। हिरोशिमा शहर में बम के प्रभाव से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 237,000 लोगों के मारे जाने का अनुमान लगाया गया था। बचे हुए जिंदा इंसानों को हिबाकुशा कहा गया। उनकी जिंदगी भी किसी मौत या सजा से कम नहीं रही है, क्योंकि उनको सभ्य समाज में भी घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा था और तो और अगर बीबीसी की रिपोर्ट को पढ़ा जाए तो आज भी कई लोग हिबाकुशा प्रजाति के लोगों से शादी नहीं करते है या करने से कतराते हैं। उनको समाज में बिल्कुल अलग-थलग कर दिया गया। जरा सोचिए उनके दिलों पर क्या बीतती होगी और सबसे बड़ी बात इसमें उनकी क्या गलती थी?

**पाकिस्तान अपनी सेना के बल पर भारत का मुकाबला नहीं कर सकता इसलिए 30 वर्षों से वो आतंकवादियों के कंधे पर हथियार रखकर भारत को कमजोर करना चाहता है, लेकिन इस बार भारत ने उसे ऐसा सबक सिखाया जिसकी पाकिस्तान ने शायद कल्पना भी नहीं की थी।**

### भुखमरी का संकट पैदा हो सकता है

अगर भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध लंबा चलता और परमाणु हथियारों का प्रयोग होता तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम लोग भी हिबाकुशा जरूर बन गए होते। जब 1980 में वैज्ञानिकों ने न्यूक्लियर विंटर थ्योरी (हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमलों का लेखा-जोखा देखा) प्रस्तुत की थी तो इस थ्योरी से समझ में आया कि किसी भी प्रकार का परमाणु युद्ध सारे संसार के तापमान को बहुत अधिक प्रभावित करेगा। धरती का तापमान लगभग दस वर्षों में ही औसतन 10 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। परिणाम स्वरूप सूर्य की किरणें धरती पर नहीं पहुंचेंगी और इससे खाद्य पदार्थों का उत्पादन बुरी तरह से प्रभावित होगा। जिससे भुखमरी का संकट पैदा हो सकता है। एक तरफ हम सोचते हैं कि पड़ोसी देश को बिल्कुल ही खत्म कर दो, क्योंकि वह आतंकवादियों को पनाह देता है और हमारे देश में खून खराबा करता है। एक तरह से सोचा जाए तो हमारे वीर सैनिक भी क्यों बिन वजह के शहीद होते रहें आखिर कब तक? वो भी तो किसी मां के बेटे, किसी बहन के भाई, किसी भाई के दोस्त और किसी का सिंदूर हैं। दूसरी तरफ हमे आज के युग में ये सुनिश्चित करना पड़ेगा कि हमारे वीर जवान भी सुरक्षित रहें और अपने दुश्मनों को भी तकनीकी रूप से जवाब दिया जाए, जिससे इंसानियत भी बची रहे और हमारा काम भी हो जाए। वरना पछताने के सिवाय आने वाली पीढ़ी के पास कुछ भी नहीं होगा। ये तो भारत पाकिस्तान की बात थी। साइंस अलर्ट की रिपोर्ट के अनुसार अगर रूस और अमेरिका के बीच परमाणु युद्ध होता है तो तापमान तो गिरेगा ही, साथ ही न्यूक्लियर विंटर के कारण अधिकतर धरती न्यूक्लियर आइस एज में चली जाएगी।

- **1945 की त्रासदी को हम कैसे भूल सकते हैं? मानवता के इतिहास का वह सबसे काला दिन था, जब पल भर में ही 1.5 लाख लोग खत्म हो गए थे, मानव द्वारा मानव पर किया गया यह सबसे कुकृत्य, घिनौना और निर्मम अपराध था, जिसका सीधे-सीधे अमेरिका जिम्मेदार था।**
- **हिरोशिमा शहर पर परमाणु हमला हुआ था तो लगभग एक मिनट में ही शहर का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा निस्तेनाबूद हो गया था, या दूसरा शब्दों में कहा जाए तो बिल्कुल राख हो चुका था, जो लोग बच गए वे जहरीली विकिरणों की चपेट में आ गए और भयंकर बीमारियों से ग्रसित हो गए।**

### परमाणु विस्फोट की चश्मदीद

बीबीसी की एक डॉक्यूमेंट्री में एक 86 साल की हिबाकुशा यानी परमाणु बम से प्रभावित महिला का इंटरव्यू है। जिसमें वो कहती हैं कि उसने वो खूनी त्रासदी अपनी आंखों से देखी है। वो आगे कहती है कि जब उसने मांस के लोथड़े लटके हुए इंसानों को देखा तो उसकी रूह कांप उठी। सब लोग इधर-उधर भाग रहे थे, विकिरणों के प्रभाव से झुलस रहे थे तो किसी के शरीर पिघल रहे थे। वो मंजर किसी नरक से कम नहीं था। वो अंदेशा जताती हैं कि अगर विश्व में कहीं दोबारा परमाणु युद्ध होता है, तो इंसानियत बचेगी ही नहीं, उसकी आंखे रौंध जाती हैं, रूह कांप उठती है। अब जापान का हिरोशिमा और नागासाकी तो धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ है, लेकिन संसार में कोई भी देश या शहर इनके जैसा दंश न झेले, ये ही कामना है। हाल ही में रूस-यूक्रेन, इजराइल-गाजापट्टी, इराक-ईरान, भारत-पाकिस्तान के युद्ध भविष्य में इंसानियत के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। हमें संपूर्ण विश्व को लेकर शांति का संदेश देने की जरूरत है। सबको मिलजुल के रहने की आवश्यकता है।

### भारत व पाक परमाणु शक्ति

भारत और पाकिस्तान, दोनों परमाणु शक्ति संपन्न देश, 1947 में आजादी मिलने के बाद से दोनों देशों ने कई युद्ध लड़े हैं, जिनमें से ज्यादातर कश्मीर क्षेत्र को लेकर लड़े गए हैं, लेकिन हर बार पाकिस्तान ने हार का सामना किया। पाकिस्तान अपनी सेना के बल पर भारत का मुकाबला नहीं कर सकता इसलिए 30 वर्षों से वो आतंकवादियों के कंधे पर हथियार रखकर भारत को कमजोर करना चाहता है, लेकिन इस बार भारत ने उसे ऐसा सबक सिखाया जिसकी पाकिस्तान ने शायद कल्पना भी नहीं की थी। पाकिस्तान पर चोरी छिपे हमला नहीं किया गया बल्कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐलान करने के बाद पाकिस्तान में आतंकियों के ठिकानों को मिट्टी में मिलाने का काम किया। इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साफ कर दिया कि अब पाकिस्तान खुद को एटमी पावर बताकर दुनिया को ब्लैकमेल नहीं कर सकेगा। यानी भारत ने उसकी एटमी पावर की हवा भी निकाल दी। हालांकि भारत 1974 में परमाणु शक्ति बन गया था, जबकि पाकिस्तान 1998 में परमाणु शक्ति बना। 2024 तक पाकिस्तान के पास लगभग 130 हथियार होने का अनुमान लगाया जाता है। जबकि भारत के पास 170 से ज्यादा परमाणु हथियारों को जखीरा बताया जाता है। भारत अपने परमाणु शस्त्रागार का विस्तार और आधुनिकीकरण कर रहा है तो पाकिस्तान के परमाणु हथियार कभी भी आतंकवादियों के हाथ लग सकते हैं, ऐसी आशंका भारत वैश्विक मंच पर जता चुका है।

# श्रावण मास में शिव साधना

अषाढ़ के बाद सावन में संपूर्ण प्रकृति शस्य-श्यामला हो जाती है, नव अंकुर फूट पड़ते हैं, तभी हजारों भोले के भक्त झूमते-गाते निकल पड़ते हैं गंगा तटों की ओर, कांवर में गंगा जल लाने के लिए, ताकि वे भोले भंडारी का जलाभिषेक कर सकें।

भूतभावन भगवान शिव की पूजा, अभिषेक व आराधना के लिए सर्वोत्तम समय है- संपूर्ण श्रावण मास। इस माह में श्रवण नक्षत्र युक्त पूर्णिमा होती है अतः श्रावण मास नाम दिया गया है। इस वर्ष यह पावन पर्व 11 जुलाई से शुरू होकर 4 अगस्त तक चलेगा। आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का पर्व होता है जो 10 जुलाई, 2025 को है। अगले दिन से श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के साथ ही श्रावण का महीना लग जाता है। रक्षा बंधन तक रहता है। जैसा कि सभी जानते हैं कि सोमवार का दिन शिव की साधना व आराधना के लिए विशेष महत्व का होता है, अतः सावन मास के सोमवार तो शिवभक्तों के लिए अति विशिष्ट हो जाते हैं। वर्ष 2025 में सोमवार जुलाई की 14, 21, 28 व अगस्त 4 को पड़ेंगे। वसंत ऋतु के बाद वैशाख-ज्येष्ठ (जेठ) की तप्त धरती को प्रतिक्षा होती है मेघों की। अषाढ़ में जब बादल उमड़-घुमड़ कर आकाश से बरसते हैं तो सभी जीव-जंतु पेड़ पौधा मानो नया जीवन पाते हैं। अषाढ़ के बाद सावन में संपूर्ण प्रकृति शस्य-श्यामला हो जाती है। नव अंकुर फूट पड़ते हैं। तभी हजारों भोले के भक्त झूमते-गाते निकल पड़ते हैं गंगा तटों की ओर, कांवर में गंगा जल लाने के लिए, ताकि वे भोले भंडारी का जलाभिषेक कर सकें। क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या बूढ़े और क्या जवान यहां तक कि बच्चे भी शहर-शहर, गांव-गांव 'बोल बम और 'हर-हर महादेव' 'घर-घर महादेव' के जयघोष से गली कूचों को गुंजायमान कर देते हैं। भक्ति का ज्वार हृदय से उमड़कर चतुर्दिक फैल जाता है। हरिद्वार से तो निकलने वाली सभी गलियां, सड़कें व राजमार्ग भगवा रंग की पताका, कांवड़ियां के भगवा वस्त्रों व कांवरों से पट जाते हैं। यह विहंगम दृश्य अद्वितीय व अनुपम होता है। जो भी इसे देखता है उसके हृदय में भी श्रद्धा और भक्ति हिलोरें मारने लगती है। मन-मयूर नाचने लगता है। इसलिए तो कहा है शिव साधना का महापर्व है श्रावण मास।

डॉ.सतीश चंद्र अग्रवाल
पूर्व आयकर आयुक्त

## शिव अनादि और अनंत हैं

देवाधिदेव भगवान शिव अनादि और अनंत हैं। वे ही आदिगुरु हैं, जगतगुरु हैं। निर्गुण निराकार रूप में ब्रह्म हैं, अविनाशी हैं, जगत का आधार हैं तो सगुण साकार रूप में कैलासवासी, गंगाधर, पार्वतिपति, आशुतोष, अवढरदानी आदि अनेकानेक नामों से जाने जाते हैं। वे आत्मस्थ योगी हैं-अतः एकांतप्रिय हैं। लय के देवता हैं अतः रुद्र हैं। सृष्टि के कण-कण में समाये शिव, ज्योति रूप में शिवलिंगों में वास करते हैं। शिव की शक्ति महामाया जगदंबा संसार का संचालन करती हैं। शिव के बिना शक्ति की आराधाना अपूर्ण रहती है। अर्द्धनारीश्वर शिव और माता पार्वती का सम्मिलित स्वरूप है। वे ही माता हैं और पिता भी-

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

अर्थात जब शिव शंभू कहते हैं तब शंभू माने 'स्वयंभू' अर्थात जो स्वंय से प्रकट हुए हैं। उनके कोई माता-पिता नहीं हैं। वे जन्म-मृत्यु से परे हैं। गुणातीत हैं। राम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रुद्राष्टकम के पहले छंद में शिव के सवरूप का सुंदर चित्रण किया है।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपः॥

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाश वासं भजेहं।।

अर्थात हे ईशान दिशा के स्वामी, मोक्षस्वरूप, विभु, व्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरूप-मैं आपको नमस्कार करता हूं। निज स्वरूप में स्थित, गुणातीत, भेदरहित, कामनाशून्य, चेतन आकाश रूप दिगंबर भगवन मैं आपका भजन करता हूं।

## सावन में ही हरियाली तीज

पूरे श्रावण मास में भक्तजन बारहों ज्योतिर्लिंगों के अलावा सभी शिवालयों में धूप, दीप नैवेद्य, पंचामृत, पुष्प, बेलपत्र, भांग, धतूरा, फल आदि से शिव परिवार का अर्चन, वंदन व अभिषेक करते हैं। भजन कीर्तन, मंत्र जप भी किया जाता है। सावन में ही दो प्रमुख पर्व और आते हैं जो शिव से ही जुड़े हैं। श्रावण शुक्ल की तृतीया को हरियाली तीज कहते हैं। इस दिन महिलाएं मेहंदी व अन्य श्रृंगार कर मां गौरा का पूजन कर अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं। श्रावण शुक्ल पंचमी को नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन नाग की आकृति अथवा चांदी व तांबे के नाग बनवाकर उनका पूजन करते हैं। यह पर्व प्रकृति-संरक्षण एवं सभी जीव-जंतुओं से प्रेम का प्रतीक है। नाग व सर्प तो भगवान शिव के कंठहार हैं। सावन की सुहानी ऋतु में झूला झूलने का आनंद भी अद्वितीय है। आज भी गांव देहात में पेड़ों की मजबूत डाली पर झूला डालकर महिलाएं उत्साह, उमंग और आनंद से सराबोर होकर लोकगीत गाती हैं। एक प्रचलित गीत की पंक्ति याद आ रहा है- शिवशंकर चले कैलास बुंदिया पड़ने लगी, गौराजी ने पीसी हरी-हरी मेहंदी, शिव शंकर ने पीसी भांग। बुंदिया पड़ने लगी...। बृज क्षेत्र में भी राधा-कृष्ण के झूला झूलने का 'झूलन उत्सव' मनाया जाता है। महानगरों में झूले डालने की जगह नहीं रही फिर भी रस्म अदायगी के तौर पर महिलाएं क्लबों में सावन मना लेती हैं।

## झारखंड के देवघर में बैजनाथ ज्योतिर्लिंग

सावन की रिमझिम फुहारों से जनमानस उल्लास और उमंग से भर जाता है। आजकल तो वाहनों में डैक, बड़े-बड़े डीजे, और स्टीरियो लगाकर स्त्री-पुरुषों के झुंड के झुंड गंगा तटों से कांवर लेकर पैदल यात्रा करते हुए देखे जा सकते हैं। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तक से श्रद्धालु हरिद्वार, ऋषिकेश आकर गंगा जल ले जाते हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि कुछ उपद्रवी तत्व शिव भक्तों के बीच शामिल होकर नशा करके दंगा-फसाद भी करते हैं। जिससे सनातनी लोग बदनाम होते हैं व हमारे पर्व की मर्यादा भी भंग होती है। ऐसे लोगों पर प्रशासन को नजर रखनी चाहिए और दोषी पाए जाने पर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। झारखंड के देवघर स्थित बैजनाथ ज्योतिर्लिंग पर जल चढ़ाने के लिए पूरे सावन मास शिवभक्त सुल्तानगंज से गंगाजल लाते हैं और बाबा धाम में अभिषेक करते हैं। वहां श्रावणी मेला भी लगाया जाता है, जिसमें अपार संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यूं तो भारत के सभी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में श्रावण मास में शिव आराधना की धूम रहती है, फिर भी उज्जयिनी के कालों के काल महाकाल मंदिर का नजारा अद्वितीय होता है। यहां की प्रातःकालीन भस्म आरती तो अनोखी है ही, सावन के सोमवारों का नगर भ्रमण में निकली शिव बारात दर्शनीय होती है। पालकी, हाथी-घोड़ों व रथ पर सवार महाकाल की चल-मूर्ति के साथ बैंड बाजे, ढ़ोल-नगाड़े, भजन-कीर्तन, शिवभक्त का सैलाब सा सड़कों पर उतर आता है। इस अलौकिक दृश्य का साक्षी मैं स्वयं रहा हूं।

## जागेश्वर धाम में भक्तों का सैलाब

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में सुप्रसिद्ध जागेश्व धाम है। 'द्वादश ज्योतिर्लिंगानि' स्तोत्र में आठवां ज्योतिर्लिंग 'नागेशं दारुकावने' बताया गया है। जहां एक ओर यह मान्यता है कि गुजरात में द्वारका के पास यह ज्योतिर्लिंग स्थित है वहीं उत्तराखंड में जागेश्वर धाम के शिवलिंग को नागेश माना जाता है। कारण यह कि यह प्राचीन मंदिर समूह देवदार के घने वृक्षों के बीच है। दारुकावने का तात्पर्य दारूक वन (देवदार का वन) होता है, जो भी हो इतना तो सत्य है कि हिमालय पर्वत भगवान शिव का परम दिव्य स्थान है, जहां शिव सदा विचरण करते रहते हैं। जागेश्वर धाम में अति प्राचीन महामृत्यंजय मंदिर है। यहां छोटे-बड़े 124 मंदिर हैं। एक पुरातात्विक संग्रहालय भी है जिसमें 8वीं से 16वीं सदी तक की मूर्तियों को संरक्षित किया गया है। कहा जाता है कि इस मंदिर का जीर्णोद्धार महाराजा विक्रमादित्य ने कराया था। घने देवदार के वृक्षों से आच्छादित रमणीय जागेश्वर धाम का सौंदर्य बड़ा मोहक और अलौकिक है। श्रावण मास में तो शिव भक्तों का तांता लग जाता है। भक्तों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर राज्य सरकार इस धाम आने वाले मार्गो का चौड़ीकरण व आवास सुविधा का विस्तार कर रही है। पूजा-पाठ व अभिषेक आदि के लिए नियम बनाए गए हैं। जिससे कि भक्तों को सुचारु रूप से दर्शन हो सकें। अंत में मानस के 'रुद्राष्टकम' की इन पंक्तियों के माध्यम से आशुतोष शिव को नमन है-

न यावत उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम।

न तावत सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासम।।

अर्थात जब तक पार्वती पति के चरण कमलों को नहीं भजते तब तक मनुष्य को न तो इस लोक में और न परलोक में सुख-शांति मिलती है और न तापों का नाश होता है। अतः समस्त जीवों के हृदय में निवास करने वाले प्रभो आप प्रसन्न होकर कृपा कीजिए। श्रावण मास में अधिक से अधिक सेवा, पूजा, जप द्वारा भोलेनाथ की भक्ति का सौभाग्य सभी को प्राप्त हो यही कामना है यही प्रार्थना है। ●

- **जागेश्वर धाम में अति प्राचीन महामृत्यंजय मंदिर है, यहां छोटे-बड़े 124 मंदिर हैं, एक पुरातात्विक संग्रहालय भी है जिसमें 8वीं से 16वीं सदी तक की मूर्तियों को संरक्षित किया गया है, कहा जाता है कि इस मंदिर का जीर्णोद्धार महाराजा विक्रमादित्य ने कराया था।**
- **सावन में भक्ति का ज्वार हृदय से उमड़कर चतुर्दिक फैल जाता है, हरिद्वार से निकलने वाली सभी गलियां, सड़कें भगवा रंग की पताका, कांवड़ियां के भगवा वस्त्रों व कांवरों से पट जाती हैं यह विहंगम दृश्य अद्वितीय होता है, जो भी इसे देखता है उसके हृदय में श्रद्धा और भक्ति हिलोरें मारने लगती है।**

# उत्तराखंड के ग्राम्य देवता

**उत्तराखंड का निवासी किसी ना किसी रूप में अपने ग्राम देवता से जुड़कर अपनी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर उनको अपने नजदीक महसूस करता है, देवभूमि के प्रसिद्ध ग्राम देवताओं में नवल देवता जो गोरिला, ग्वाल, गोलू आदि नाम से जनमानस के अंदर स्वतः ही प्रवेश कर जाते हैं।**

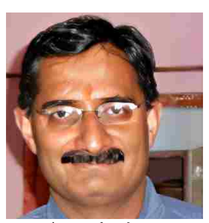

राकेश मैन्दोला
देहरादून

उत्तराखंड को सांस्कृतिक भाषा में देवभूमि भी कहा जाता है। जहां चार धाम बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री तो विश्व प्रसिद्ध हैं, लेकिन उत्तराखंड के गांव-गांव में ग्राम देवताओं का महत्व किसी भी उत्तराखंडवासी से छिपा नहीं है। उत्तराखंड का निवासी किसी ना किसी रूप में अपने ग्राम देवता से जुड़कर अपनी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखकर उनको अपने नजदीक महसूस करता है। उत्तराखंड के प्रसिद्ध ग्राम देवताओं में नवल देवता, गोरिला, ग्वाल, गोलू आदि नाम से जनमानस के अंदर स्वतः ही प्रवेश कर जाते हैं। इनके मंदिर में प्रसिद्ध हैं चौर कल्ली, गरुड़ डोटी काली कुमाऊं, छकाता, चितई, घोड़ाखाल हैं। इससे बड़ी इनकी जन्म की कथा मानी जाती है। एक कथा के अनुसार चंपावत के कत्यूरी राजा झालराय जंगल में शिकार करने निकले थे। शिकार न मिलने के कारण राजा दूब चोर गांव में पहुंच गए जहां पर दो महिष (भैंसे) भयंकर युद्ध कर रहे थे। राजा ने उन्हें छुड़ाने का प्रयास किया पर वे रुके नहीं, इस बीच राजा ने अपने एक सेवक को पानी के लिए भेजा, लेकिन उसे पानी नहीं मिला। फिर दूसरा सेवक पानी की खोज में निकल गया उसकी नजर दूर एक झरने पर पड़ी जहां एक सुंदरी ध्यान अवस्था में बैठी थी। वह सेवक उसके पास जाकर चिल्लाकर बोला कौन हो तुम? सुंदरी ने आंखें खोल कर कहा मूर्ख दिखता नहीं मैं ध्यान कर रही हूं, जा भाग यहां से। सेवक ने कहा मेरा राजा बहुत प्यासा है आज्ञा दें तो थोड़ा पानी ले लूं।

### राजा झालराय की कहानी

सुंदरी ने पानी लेने की आज्ञा दे दी सेवक पानी लेने के लिए झुका जरूर परंतु उसने सुंदरी को भीगो दिया। तब सुंदरी बोली अनाड़ी राजा के सेवक तू भी उल्टा निकला, जैसा तेरा राजा है, वैसा तू भी। तेरे राजा से दो भैंसों का युद्ध तो समाप्त नहीं हो पाया, तो भला पानी कैसे पा सकता है। सेवक यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गया तब उसने हाथ जोड़कर पूछा कि देवी आप कौन हो? लेकिन सुंदरी बगैर जवाब दिए ही हवा में उड़ कर उन खूंखार भैंसों के पास पहुंच गई और उन्हें अलग कर खड़ी हो गई। यह सब राजा देखकर मंत्रमुग्ध हो गया तब राजा ने प्रश्न किया तुम कौन हो? सुंदरी ने कहा कि मैं काली हूं, मेरे चाचा यहां के राजा हैं मेरी सगाई होने वाली है, मैं अपने पति के लिए तपस्या कर रही हूं। मन ही मन राजा ने उसे पटरानी बनाने का संकल्प कर लिया तब राजा उसके चाचा से मिलने उसके राज्य में पहुंच गया। उसने देखा कि उसका चाचा भयंकर रोग से पीड़ित है, लेकिन काली को पाने के लिए राजा झालराय ने उसके चाचा की सेवा की। अंत में राजा काली से विवाह करने में सफल हो गया। राजा की सात रानियां पहले से थी, लेकिन काली की सुंदरता मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी अब तो सातों सौतन उससे चिढ़कर बैठ गई। इस बीच काली गर्भवती हो गई। राजा को बाहर जाना पड़ा तब राजा ने एक घंटी अपने कमरे में बांधकर उसका एक छोर काली को थमाया और कहा कि जब तुम्हारा पुत्र हो तो डोरी हिला देना, मैं समझ जाऊंगा कि पुत्र हो गया है और मैं आ जाऊंगा। लेकिन सौतनों ने पूर्व में ही डोर हिला दी। राजा आया लेकिन गुस्से से लौट गया। परंतु जब काली को पुत्र हुआ तो सौतनों ने उसकी आंख पर पट्टी बांध दी और पुत्र की जगह कद्दू रख दिया फिर पट्टी खोली तो कद्दू देखकर काली बहुत दुखी हुई।

**गोरिल राजा बने तो जनमानस की विश्वसनीयता ईश्वरीय होने लगी, लोगों ने गोरिल को भगवान का रूप मान लिया, उन्हें जीवित अवस्था में ही पूजने लगे, आज उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में गोरिल देवता की पूजा घर-घर की जाती है और यही गोरिल आज न्याय के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।**

### गोरिल देवता की उत्पत्ति

बालक को सौतनों ने नमक की बोरी में बंद कर दिया। लेकिन ईश्वरीय कृपा से नमक चीनी में बदल गई। वह बालक चीनी के साथ रहकर जीवित रहा। फिर रानियों ने उसे पिंजरे में बंद कर उसे गोरी गंगा में बहा दिया। पिंजरे को बहता देख एक मछुआरे ने उसे बचा लिया और उसे पालने लगा। खेलने के लिए उसे एक लकड़ी का घोड़ा बना कर दिया। एक दिन मछुआरा बालक को लेकर उसके पिता के राज्य के झरने पर पहुंचा जहां उसकी सौतेली माताएं पानी लेने आई हुई थी, मछुआरे ने उसका नाम गोरिल रखा था। क्योंकि वह गुलेल चलाने में माहिर था। गोरिल ने दूर से ही उनके घड़े फोड़ दिए फिर पास जाकर बोला हटो यहां मेरा घोड़ा पानी पिएगा। रानियों ने कहा, कभी लकड़ी का घोड़ा भी पानी पी सकता है। यह सुनकर गोरिल बोला क्या कभी कोई रानी कद्दू को जन्म दे सकती है? यह सुनकर सभी रानियां घबरा गई यह खबर आग की तरह राजा तक पहुंच गई। राजा ने तुरंत उन्हें मारने का आदेश दे डाला और गोरिल को राजकुमार बना दिया। उसके राजकुमार बनते ही जनमानस में सुख शांति का आगाज हो गया। गोरिल राजा बने तो जनमानस की विश्वसनीयता ईश्वरीय होने लगी। जनमानस ने गोरिल को भगवान का ही रूप मान लिया। लोग उन्हें जीवित अवस्था में ही पूजने लगे। आज उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में गोरिल देवता की पूजा घर घर की जाती है और यही गोरिल आज न्याय के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

### विवाद निपटाने वाले देवता

भूमिया देवता-उत्तराखंड के हर गांव की पहचान भूमिया देवता से होती है। इन्हें गांव के विवादों को निपटाने वाला देवता माना जाता है। जहां प्रत्येक फसल के बीज बोए जाने से पहले एक मुट्ठी बीज भूमिया देवता को चढ़ाया जाता है, ताकि फसल किसी भी दैवीय आपदा से सुरक्षित रहे। फसल होने पर पहली मुट्ठी इसी देवता को अर्पित की जाती है। गांव का पहला फल भी इसी देवता को चढ़ाया जाता है। गांव की नवविवाहित दंपत्ति भी इसका आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। इस देवता के बारे में कहा जाता है कि इस क्षेत्र में रहने वाले सज्जन लोगों की रक्षा यह देवता करता है एवं दुष्टों के दुष्प्रभाव का नाश स्वतः कर देता है, क्योंकि इसे गांव का क्षेत्रपाल भी कहते हैं।

एड़ी-एड़ी एक प्रकार की प्रेत आत्मा है जो आधी रात के बाद परियों के साथ नाचता गाता है। ऐसी मान्यता है कि एड़ी के आने की सूचना उसके साथ चलने वाले कुत्तों की आवाज एवं छन-छन की आवाज से मिल जाती है। उसके साथ चलने वाली परियों के पैर उल्टे होते हैं। ऐड़ी के मंदिर निर्जन स्थानों में ही हैं। इन मंदिरों में एड़ी, परियों एवं दूत साऊ भाऊ की मूर्ति रहती है। चैत मास में महा आग जलाकर ढोल बजाकर इनकी पूजा की जाती है। डगरिया के शरीर पर एड़ी आती है जो की नग्न शरीर को जलते अग्निकुंड में बैठ कर नाचती है। फिर बकरे की बलि देने से पहले उसके कान में यह मंत्र बोला जाता है कि...।

अश्व नैव, गजनैव, च नैव च

अजपुत्रों बलिदघात देवी दुर्बल घातका।

फिर उसकी बलि दी जाती है। उसका सिर पुजारी को, पिछला हिस्सा बलीकर्ता को, बचा प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। कटी पूंछ मंदिर में टांग दी जाती है।

भोलनाथ-भोलनाथदेवता जिसके आठ थान उत्तराखंड के अल्मोड़ा में हैं। ऐसी मान्यता है कि अल्मोड़ा के राजा उदयचंद की दो रानियां जिनसे उसके 2 पुत्र थे। बड़ा भोलनाथ, छोटा ज्ञानचंद। लेकिन ज्ञानचंद को गद्दी पर बैठाया गया। भोलनाथ घर छोड़कर निकल गया। योग की सिद्धियां प्राप्त कर वह जोगी (साधु) का वेश बनाकर, अपने योग बल से राजा रानी के बीच जाकर सो गया। तब राजा ने उसे मार दिया और तभी से राजा परेशान रहने लगा। तब उसे सलाह दी गई कि आप उसके नाम पर आठ मंदिर बनाओ तब राजा ने भोलनाथ के नाम पर भैरव के आठ मंदिर थान (स्थान) बनाएं। खुंत्कुणी भैरव, बटुक भैरव, कालभैरव, बालभैरव, गरही भैरव, आनंद भैरव, सैभैख भैरव, गौर भैरव। जहां पर एक लोहे को त्रिशूल गाड़ दिया गया। जिसकी पूजा की मान्यता है। अंग्रेजों ने भी इस देवता को स्वीकार किया था। ऐटकिंसन के गजेटियर के

- **गांव की नवविवाहित दंपत्ति भी भूमिया देवता का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं, इस देवता के बारे में कहा जाता है कि इस क्षेत्र में रहने वाले सज्जन लोगों की रक्षा भूमिया देवता करते है एवं दुष्टों के दुष्प्रभाव का नाश स्वतः हो जाता है।**
- **एड़ी एक प्रकार की प्रेत आत्मा है जो आधी रात के बाद परियों के साथ नाचता गाता है, ऐसी मान्यता है कि एड़ी के आने की सूचना उसके साथ चलने वाले कुत्तों की आवाज एवं छन-छन की आवाज से मिल जाती है।**

अनुसार 'जब अंग्रेजों ने अल्मोड़ा का शासन हाथ में लिया तो उन्होंने भी आठ भैरव मंदिरों की पूजा की क्योंकि उनके ऊपर अदृश्य पत्थर आकर बरसते थे तब जाकर पत्थर बरसने बंद हुए।' इसके अलावा गंगनाथ, शमशान का भूत मसाण, खबेश, बिंसर का कलुआ, रणिया, चौमूं, चंद राजामो का हारु...

औना हारु हरपट्ट, जौना हारु खड़पट्ट।

टोला कोचरी, अछरिया आंचरी जो कम उम्र में मरने वाली कुंवारी कन्या हैं। इन रूपों में रात को नाचती गाती हैं। जो उत्तराखंड की पहाड़ियों में दूर-दूर से ज्योतिपुंज के रूप में देखी जा सकती हैं। अंग्रेज ट्रेल एवं ऐटकिंसन ने भी इन ज्योतिपुंज को माना है। उन्होंने कहा कि यह कल्पना मात्र नहीं बल्कि एक सच्चाई है। इन देवताओं को जाग्रत करने के लिए जागर (जागरण) की विशेष पूजा की जाती है। इन देवताओं के लिए जागर में पहले जागवासी की जाती है, जिसमें धूप-दीप जलाए जाते हैं। संझियाल (सायं) से ग्राम देवता की स्तुति की जाती है। गायक (जगरिया) के साथ डंगरिया (जिसके शरीर में देवता प्रवेश करता है) गन्त्वा (डंगरिया को वश में रखने वाला प्रधान डंगरिया) को आमंत्रित किया जाता है। भोजन के बाद देवताओं की गद्दी लगाई जाती है। बाइस महीने भगवती, चौसठ योगिनिओं तथा बावन वीरों का आह्वान किया जाता है। जिसके प्रारंभ में गन्त्वा कहता है कि

सत फिरी जालो, जौ जौंकर जाली,

बसे बैनी भगवती, चौसठी जोगिनी।

बावन वीर हो देवा, भल हेई जालो

दूसरे प्रकार का आह्वान

घोर नरसिंह अघोर नरसिंह भैरो नरसिंह,

हठ नहीं तप नहीं तो राज नहीं

दया मालिक कानू में मुनडी

सर में जटा, जैडो वीर नरसिंह भान बामनी की गाथा में जगरिया कहता है किसिंदुर पैरिनी खोरी, विभूते रमायो, ओ भना बामनी हो भना बामनी।

# वन्यजीवों के लिए घास का किरदार

**राजाजी राष्ट्रीय उद्यान 800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है, हरिद्वार, ऋषिकेश जैसे पवित्र नगरों को चारों ओर से घेरे यह उद्यान सहारनपुर, पौड़ी गढ़वाल एवं देहरादून जिलों तक फैला हुआ है, इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि इन नगरों के विस्तार से पूर्व यहां जंगल व घास के मैदान रहे होंगे।**

डॉ.हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

उत्तराखंड के जंगलों की खूबसूरतीसिर्फउसकी हरियाली में नहीं बल्कि यहां के पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, वृक्षों, जड़ी-बूटियों और वनस्पतियों के बीच अद्भुत संतुलन में है। यहां की पारिस्थितिकी प्रणाली में हर चीज, चाहे वह एक बाघ हो या छोटी सी दूब घास, अहमकिरदारनिभाती है।इसी संतुलन का एक अनदेखा लेकिनबहुतमहत्वपूर्णहिस्सा हैं जंगलों में घास के मैदान (ग्रासलैंड) है।कुछ घास के मैदानों को स्थानीय भाषा में बुग्याल भी कहा जाता है। बीते कुछसालोंमें राज्य के संरक्षित क्षेत्रों, खासतौर पर राजाजी टाइगर रिजर्व में घास के मैदानों का तेजी से ह्रास हुआ है।इसका सीधा असर शाकाहारी वन्यजीवों जैसे हिरण, चीतल और सांभर पर पड़ रहा है, जिन्हें भोजन के लिए घास कीआवश्यकताहोती है।यही नहीं, शिकारी वन्यजीवों जैसे-बाघ और तेंदुए को भी शिकार करने के लिए घनी घास की आड़ ही चाहिए होती है। जब ये मैदानसमाप्तहोते हैं, तो ये जीव नकेवलभोजन से वंचित होते हैं बल्कि उनका प्राकृतिक व्यवहार भी प्रभावित होता है। उत्तराखंड केवन क्षेत्र में हर चीज का अपना एक खास महत्व है। यहां वन्यजीवों से लेकर वृक्ष और वनस्पतियों तक की एक फूड चेन बनी हुई है। खास बात ये है कि फूड चेन का कोई भी हिस्सा प्रभावित होता है तो इसका असर जंगल के पूरे एनवायरनमेंट पर होना स्वभाविक हो जाता है। जंगलों में घास के मैदान काफी तेजी से सिमट रहे हैं। जबकि पहाड़ी क्षेत्र में ग्रासलैंड का अपना खास महत्व है, जिसके कारण बाकी चीजें भी प्रभावित हो रही हैं। यह बात वन विभाग भी समझ रहा है इसलिए वन विभाग ने कुछ ऐसे प्रयास शुरू किए हैं, जिससे जंगलों में घास के मैदान की कमी वन्यजीवों को महसूस ना हो।

## वन्यजीवों के लिए घास का अकाल

राजाजी राष्ट्रीय उद्यान 800 वर्ग किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्रफल में फैला हुआ है। हरिद्वार एवं ऋषिकेश जैसे पवित्र नगरों को चारों ओर से घेरे यह उद्यान सहारनपुर, पौड़ी गढ़वाल एवं देहरादून जिलों तक फैला हुआ है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इन नगरों के विस्तार होने से पूर्व यहां का अधिकतर क्षेत्र जंगल और घास के मैदान ही रहे होंगे। राजाजी उद्यान भीड़भाड़ भरे नगरों के इतने समीप है, फिर भी इसकी जैव-विविधता आज भी अछूती है। शुरू में यहां 3 वन्यजीव अभयारण्य थे। 1977 में स्थापित चीला अभयारण्य, 1964 में स्थापित मोतीचूर अभयारण्य एवं 1948 में स्थापित राजाजी अभयारण्य थे। 1983 में इन तीनों अभयारण्यों को मिलाकर राजाजी वन्यजीव अभयारण्य बनाया गया। 2015 में इसे टाइगर रिजर्व की श्रेणी में शामिल किया गया। इसका नामकरण स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल सी राजगोपालाचारी के नाम पर रखा गया था। राजाजी राष्ट्रीय उद्यान हाथियों के लिए अधिक जाना जाता है। इन वनों से गुजरते समय हाथियों के झुंड देखे जा सकते हैं। भारत में हाथियों की उपस्थिति का यह उत्तर-पश्चिमी छोर है। यहां से उत्तर अथवा पश्चिम की तरफ जंगली हाथी देखने को नहीं मिलेंगे। ये वही राजाजी राष्ट्रीय उद्यान है जहां घास के जंगल लुप्त होने की कगार पर हैं। घास ही तमाम शाकाहारी वन्यजीवों का भोजन है। एक तरफ जहां शाकाहारी वन्यजीव भूख से तड़पते हैं तो दूसरी तरफ इन शाकाहारी वन्यजीवों का शिकार करने वाले मांसाहारी वन्यजीव भी बेचैन हो जाते हैं। जब भोजन का अकाल होता है तो वन्यजीव आबादी की तरफ रुख करते हैं और फिर वन्यजीवों का मानव से संघर्ष शुरू हो जाता है। बहुत से मानव वन्यजीवों का शिकार होते हैं तो कई बार वन्यजीव मानव संघर्ष का शिकार हो जाते हैं।

- **घास के मैदानों केसमाप्तहोने के पीछेमानव गतिविधियां के साथ प्राकृतिक आपदाएं भी एक बड़ी वजह हैं, क्योंकि वन क्षेत्र में तेज बारिश और नदियों में पानी के तेज बहाव से मिट्टी का कटान होने से भी घास के मैदानों को नुकसान पहुंच रहा है।**
- **लेंटाना जैसी झाड़ीदार प्रजातियां, जो विदेशी पौधों की श्रेणी में आती हैं, तेजी से फैलकर घास के मैदानों कास्थानले रही हैं,ये झाड़ियां घास को पनपने नहीं देतीं, ऐसी झाड़ियां वन क्षेत्र में पनप रही हैं, जो घास के मैदान को खत्म कर अपना वर्चस्व बढ़ा रही हैं।**

## घास के मैदान बढ़ाने की योजना

वन विभाग के लिए राजाजी टाइगर रिजर्व में घास के घटते मैदान एक बड़ी चिंता बन गए हैं। शायद इसलिए वन विभाग कुछ ऐसे प्रयास कर रहा है ताकि भविष्य में इस संकट से निजात मिल सके। इसके लिए जंगल के भीतर ही घास की नर्सरी तैयार की जा रही है। चारा घास के रूप में पौधशाला का निर्माण किया गया है, करीब 0.42 हेक्टेयर क्षेत्रफल में इस नर्सरी को तैयार किया जा रहा है। हालांकि यह प्रयास नए नहीं हैं, पिछले करीब 4 सालों से घास के मैदान को बढ़ाने के लिए इस नर्सरी पर काम हो रहा है। वन विभाग द्वारा तैयार की गई ये नर्सरी कैंपर परियोजना के माध्यम से बनाई गई है, जिसमें दूब घास, पन्नी घास, गोल्डा घास, छोटी भूंज, बंसी घास और कुमारिया घास रोपी गई है। यह ऐसी घास हैं, जिनको जंगल में अलग-अलग वन्यजीव खाना पसंद करते हैं। इस नर्सरी में तैयार की जा रही विभिन्न प्रजाति की घास को बाद में जंगल के अलग-अलग हिस्से में रोपकर घास के मैदानों को बढ़ाने की योजना है। घास के मैदानों केसमाप्तहोने के पीछेमानव गतिविधियों के साथ प्राकृतिक आपदाएं भी एक बड़ी वजह हैं। क्योंकि वन क्षेत्र में तेज बारिश और नदियों में पानी के तेज बहाव से मिट्टी का कटान होने से भी घास के मैदानों को नुकसान पहुंच रहा है। माना जा रहा है कि संरक्षित क्षेत्र में कई हेक्टर घास के मैदान सिर्फ नदियों के भूमि कटान के कारण कम हुए हैं। इसके अलावा आग की घटनाओं की वजह से भी घास के मैदान घटते रहे हैं। आग से भी घास के मैदानों को भारी नुकसान होता है। लेंटाना जैसी झाड़ीदार प्रजातियां, जो विदेशी पौधों की श्रेणी में आती हैं, तेजी से फैलकर घास के मैदानों कास्थानले रही हैं।ये झाड़ियां घास को पनपने नहीं देतीं और वन क्षेत्र के पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करती हैं। ऐसी झाड़ियां वन क्षेत्र में पनप रही हैं, जो घास के मैदान को खत्म कर अपना वर्चस्व बढ़ा रही हैं। इससे भी घास के मैदान कम हो रहे हैं। घास के मैदान कम होने के कारण ना केवल शाकाहारी वन्यजीव जिनकी निर्भरता इन घास के मैदानों पर रहती है वो प्रभावित होते हैं, बल्कि शिकारी वन्यजीवों को भी इससे काफी असहजता हो रही है।

## वन्यजीवों को भोजन की समस्या

पहाड़ी और तराई क्षेत्र में घास के मैदान कम होने से हिरण, चीतल, सांभर जैसे

- **वन क्षेत्र में नारियल की रस्सी वाली चटाइयां बिछाई जा रही हैं, ये खाद का काम तो करती ही हैं साथ ही मिट्टी बहने से भी रोकती हैं, क्योंकि ये मिट्टी को जकड़ लेती हैं, जिससे तेज बारिश में भी मिट्टी बहने नहीं पाती, ये चटाइयां कम से कम दो साल तक कारगर रहती हैं।**
- **जलवायु परिवर्तन के कारण भी घास के मैदान सिमट रहे हैं, कई इलाकों में भारी लैंडस्लाइड से भी घास के मैदानों का स्वरूप बदला है, बादल फटने जैसी घटनाओं ने भी घास के मैदानों को कम किया है, इन प्राकृतिक वजहों के अलावा घास के मैदानों में पर्यटकों की कैंपिंग भी है।**

वन्यजीवों को पर्याप्त घास नहीं मिल पा रही है। संरक्षित क्षेत्र में एक समय ऐसा था जब घास के मैदान काफी दूरी तक फैले होते थे। इन्हीं लंबी-लंबी घास और झाड़ियों में शिकारी वन्यजीवों बाध तथा तेंदुओं को छिपने में आसानी होती थी। झाड़ियों या घास में छिपकर ही शिकारी वन्यजीव आसानी से अपने शिकार तक पहुंच जाते  हैं। लेकिन घास के मैदान ना होने के कारण खुले में शिकार करने के लिए इन शिकारी वन्यजीवों को काफी मुश्किल का सामना करना पड़ता है। यही वन विभाग के लिए सबसे बड़ी चिंता और चुनौती है। वन विभाग की यहकोशिशनसिर्फजंगलों की हरियाली लौटाने की दिशा में है बल्कि आने वाले समय में यह पूरे क्षेत्र में प्राकृतिक संतुलन बहाल करने का आधार बन सकती है। रानीखेत के कालिका वन अनुसंधान केंद्र ने देश का पहला घास संरक्षण केंद्र स्थापित किया है। इसमें लगभग घास की 90 प्रजातियां उगाई गई हैं। इन प्रजातियों के वैज्ञानिक, पारिस्थितिक, औषधीय और सांस्कृतिक महत्व है। कैंपा योजना के तहत तीन साल में छह लाख रुपये की लागत से देश का पहला घास संरक्षण केंद्र तैयार किया गया है। इसमें उत्तराखंड के साथ ही अन्य प्रदेशों की घास को भी संरक्षित किया गया है।

## मिट्टी कटाव रोकने की तैयारी

यह भी सच है कि घास के मैदानों पर पिछले कई दशकों से लगातार दबाव बढ़ रहा है। यह दबाव केवल प्राकृतिक रूप से ही नहीं है, बल्कि इंसानों की तमाम गतिविधियों ने भी घास के इन बड़े मैदानों को खतरे में डाल रखा है। जलवायु परिवर्तन के कारण भी घास के मैदान सिमट रहे हैं। कई इलाकों में भारी लैंडस्लाइड से भी घास के मैदानों का स्वरूप बदल रहा है। बादल फटने जैसी घटनाओं ने भी बुग्यालों और घास के मैदानों को कम किया है। इन प्राकृतिक वजहों के अलावा घास के मैदानों में पर्यटन के लिहाज से कैंपिंग और चरवाहों द्वारा घास के मैदानों में जानवरों को ले जाने से भी घास के मैदान घटे हैं। जड़ी बूटियां के अवैध दोहन की घटनाओं, पर्यटन गतिविधियों में प्लास्टिक के कचरे के उपयोग से भी घास के मैदानों को खतरा पैदा हुआ है। हालांकि उत्तराखंड में घास के मैदानों को बचाने के लिए ठोस शुरुआत हो गई है। राज्य का वन विभाग एक अनोखी पहल कर रहा है, जिसमें ईको फ्रेंडली इंजिनियरिंग की मदद से मट्टी के कटाव से तबाह हो रहे घास के मैदानों और जंगलों को बचाने की कोशिश हो रही है। इसके लिए बाकायदा मिट्टी और घास के बीच पैच लगाए जा रहे हैं और घास का बेहतर रखरखाव करके सुरक्षित बनाया जा रहा है। इस काम में लगभग छह करोड़ रुपये का खर्च भी आएगा। कोयर बोर्ड ऑफ इंडिया के असिस्टेंट मैनेजर सुशील भट्ट का कहना है कि पहले चरण में नारियल की रस्सी वाली चटाइयां बिछाई जा रही हैं। ये खाद का काम तो करती ही हैं साथ ही मिट्टी बहने से भी रोकती हैं। ये मिट्टी को जकड़ लेती हैं, जिससे तेज बारिश में भी मिट्टी बहने नहीं पाती। ये चटाइयां कम से कम दो साल तक कारगर रहती हैं। इन्हीं मैट्स में देवदार की पत्तियां मिलाकर इनका इस्तेमाल चेक डैम के रूप में किया जा रहा है, जिससे मॉनसून के समय मिट्टी के कटाव को कम किया जा सके। अगले चरण में यही काम करने के साथ नर्सरी भी तैयारी की जाएंगी, जिसमें स्थानीय पौधों के साथ घास भी लगाई ।

नजरिया

# संकट में है नयार नदी

**नयार नदी का कुल जलागम क्षेत्र 1960 वर्ग किलोमीटर है, संपूर्ण नयार घाटी की तकरीबन 3 लाख आबादी में 1700 गांव बसे हैं, 'नयार नदी-स्त्रोत से संगम अध्ययन यात्रा' से वापस अपने गांव चामी आते हुए विचार आया कि आखिर इस यात्रा से हासिल क्या हुआ? जवाब मिला नयार नदी यात्रा आत्म-चिंतन की यात्रा साबित हुई है।**

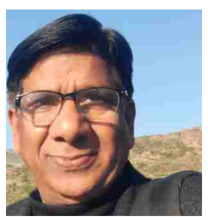

अरुण कुकसाल
चामी, पौड़ी गढ़वाल

न रुकदि छै, न थकदि छै, नयार जन बगदि छै...'(न रुकती है, न थकती है, नयार जैसी नदी निरंतर बहती रहती है)। दूधातोली की मुरलीकोठा चोटी (3000 मीटर) के चारों ओर के परिदृश्य को समझाते हुए कुलदीप ने पूरे रोमांच के साथ नरेंद्र सिंह नेगी का यह गीत गाया। इस पद-यात्रा में नयार की मातृ धाराओं के प्रवाह के साथ-साथ शुरुआती दिनों में चलते हुए लगता था, कि ये गीत भी हमारे साथ चलायमान है। लेकिन, दिन-प्रति-दिन यह भ्रम कम होता रहा और 8वें दिन जब हम इस यात्रा के विराम स्थल व्यासघाट पहुंचे तो यह पूर्णतया समझ में आ गया कि नयार नदी रुक भी गई है और थक भी गई है। उसका निरंतर प्रवाह बीते समय की बात है। समाज और सरकार का यही आचरण रहा तो कुछ ही दशकों बाद नयार नदी इस लोक से विदाई ले लेगी। नयार नदी के उद्गम से संगम तक के कई तटों पर विलुप्त जलधाराओं के सूखे निशानों ने ये चेतावनी दे भी दी है। ज्ञातव्य है कि 'पहाड़' संस्था, नैनीताल द्वारा 1974 से हर 10 साल में 25 मई से 8 जुलाई तक 'अपने गांवों को तुम जानो, अपने लोगों को पहचानो' ध्येय वाक्य को आत्मसात किए 'अस्कोट-आराकोट अभियान' यात्रा का आयोजन किया जाता रहा है। 2024 की यात्रा के दौरान यह विचार प्रबल हुआ कि 'अस्कोट-आराकोट अभियान' के समानान्तर स्थानीय नदियों के 'स्त्रोत से संगम तक की अध्ययन यात्राएं' भी आयोजित की जाएं।

## अदूरदर्शी व्यवहारों की हकीकत

इसी क्रम में 'नयार नदी-स्त्रोत से संगम अध्ययन यात्रा' (21 से 28 अप्रैल, 2025) आयोजित की गई। गढ़वाल हिमालय के दूधातोली रेंज के अंतर्गत ढाईजूली पट्टी के घुलेख गांव (2000 मीटर) से 21 अप्रैल को आरंभ यह पद यात्रा तूणखाल, सिंगौड़ाचैकी, श्रृंग ऋषि आश्रम, मुरलीकोठा टॉप, झिन और रात्रि विश्राम के लिए सिंगोड़ा चौकी पहुंची। अगले दिन, 22 अप्रैल को सिंगोड़ा चौकी से प्रस्थान करने से पूर्व यात्री दल दो भागों यथा-पूर्वी नयार और पश्चिमी नयार यात्रा दल में विभक्त हो गया। पूर्वी नयार अध्ययन यात्रा दल सिंगौड़ा चौकी, बगड्यूं, चाकखाल, ज्योलि गाड़, नौगांव, मरोड़ा, लदोली घाट, बंगला, डिन्याल्यू डांडा, मासों (चौथान), जगतपुरी, पीठसैण, थलीसैण, मजगांव, गंगाऊ, भीड़ा, गरसारी, गौणीछेड़ा, विरगण, जिवंई, सुखई, बैजरों, स्यूंसी, दुनाव, कठ्वाड़ा, मलेठी, खैरासैण से सतपुली पहुंचा। पश्चिमी नयार अध्ययन यात्रा दल सिंगौड़ा चैकी, बक्करकोट, रणधार, कुठउडियार, थाल, नानघाट, घौलखिन, मल्ला खंड, तल्ला खंड, पिनाकोट, पैठाणी, मासों (मवालस्यूं), सांसों, किर्खू, संतूधार, ज्वालपादेवी, पाटीसैण, बौसाल से सतपुली पहुंचा। दोनों दलों का पुर्नमिलन 27 अप्रैल की शाम को सतपुली में हुआ। सतपुली के निकट पूर्वी और पश्चिमी नयार नदी के संगम स्थल दुलै घाट से होते हुए व्यास घाट में 28 अप्रैल को 'नयार नदी-स्त्रोत से संगम अध्ययन यात्रा का समापन हुआ। इस यात्रा के केंद्र में गढ़वाल हिमालय का दूधातोली, राठ और नयार क्षेत्र थे। स्वाभाविक है कि यात्रियों को इन तीनों शब्दों के मायने और महत्व की समझ का जीवंत और सार्थक विस्तार इस यात्रा ने दिया है। साथ ही, इनके प्रति नीति-नियंताओं और समाज के असंवेदनशील और अदूरदर्शी व्यवहारों की हकीकत से भी अध्ययन यात्रियों को रू-ब-रू करवाया है। यह यात्रा इन स्थलों एवं समाज के निरंतर कमजोर होते हालातों को समझने और समाधानों की ओर जाने की भी रही है।

**दूधातोली जलागम लगभग 4000 वर्ग किलोमीटर में पौड़ी, चमोली और अल्मोड़ा जनपद का एक संयुक्त क्षेत्र है, इसका उत्तरी हिस्सा चमोली, पूर्वी क्षेत्र अल्मोड़ा और दक्षिण-पश्चिम भाग पौड़ी (गढ़वाल) जिले में शामिल है, दूधातोली जलागम क्षेत्र से पांच गैर हिमानी नदियां निकलती हैं, जिसमें नयार नदी भी है।**

## दूधातोली जलागम गढ़वाल से कुमाऊं तक

नयार नदी का उद्गम स्थल दूधातोली जलागम क्षेत्र है। दूधातोली का अर्थ दूध की तोली यानी बर्तन से है। जिसे उत्तराखंड हिमालय का हरा समुद्र, पानी की मीनार, पामीर और जलवायु नियंत्रक भी कहा जाता है। दूधातोली जलागम लगभग 4000 वर्ग किलोमीटर में पौड़ी, चमोली और अल्मोड़ा जनपद का एक संयुक्त क्षेत्र है। इसका उत्तरी हिस्सा चमोली, पूर्वी क्षेत्र अल्मोड़ा और दक्षिण-पश्चिम भाग पौड़ी (गढ़वाल) जिले में शामिल है। मुख्यतः दूधातोली जलागम क्षेत्र से पांच गैर हिमानी नदियां यथा-पश्चिमी रामगंगा, पूर्वी नयार, पश्चिमी नयार, आटागाड और वीनू जन्म लेती हैं। पश्चिमी रामगंगा उत्तराखंड हिमालय की सबसे बड़ी गैर हिमानी नदी है। यह उल्लेखनीय है कि उत्तराखंड के 40 प्रतिशत भूभाग और बसावट की जीवन भूमिगत नदियों पर ही निर्भर है। इस संदर्भ में दूधातोली के संवेदनशील पारिस्थिकीय तंत्र के गहन जानकार हेम गैरोला के अभिमत का जिक्र किया जाना आवश्यक है कि 'पानी को केंद्र में रखकर दूधातोली का प्रबंधन आवश्यक है। जिस पर अपेक्षित ध्यान न दिया जाना चिंताजनक है। चारागाह आधारित लैंडस्केप में यहां सशक्त डेयरी उद्योग स्थापित होने चाहिए थे, जो नहीं हुए। दूधातोली का प्रबंधन अलग-अलग वन प्रभागों के बजाय एकीकृत स्वरूप में होना चाहिए। नीति-नियंताओं को दूधातोली के व्यापक संरक्षण, प्रबंधन एवं स्थानीय समुदाय के रोजगार के लिए विशेष परियोजना तैयार करनी चाहिए।'

## राठ शब्द की उत्पत्ति पर विभिन्न मत

दूधातोली को सामाजिक दृष्टि से राठ बहुल क्षेत्र कहा जाता है। राठ शब्द की उत्पत्ति पर विभिन्न मत हैं। राठ क्षेत्र के जागरों के विराम में अक्सर जागरी यह गाता है 'चलि जान्दु मि अपणि कालि धौलि राठ' अर्थात अब मैं अपनी काली और धौली राठ को चला जाता या जाती हूं। (काली और धौली दूधातोली की ही स्थानीय जल-धाराओं के नाम हैं।) कहा जाता है कि पैठीनश गोत्र के राठी राजा जिसकी राजधानी पैठाणी थी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम राठ पड़ा। देश का एक मात्र राहू मंदिर इसी पैठाणी में है। थलीसैण विकासखंड की पट्टी चौपड़ाकोट, चौथान, ढाईज्यूली, कंडारस्यूं और पाबौ विकासखंड की वाली कंडारस्यूं पट्टी को मिला कर राठ बना है। इसे पंचपट्टी राठ कहा जाता है। इस प्रकार मुख्यतः थलीसैण और पाबौ विकासखंड की वाली कंडारस्यूं पट्टी का संयुक्त भू-भाग राठ क्षेत्र माना जाता है। वैसे, दूधातोली क्षेत्र का नाम राष्ट्रकूट से राठ भी है। विशेष जलवायु और भौगोलिक स्थिति के कारण यहां उत्तम किस्म के भेड़-बकरियों की ऊन और भांग की पैदावार होती है। ऊन और भांग के रेशों को कातने-बुनने में प्रयुक्त रहट अथवा चर्खा की अधिकता के कारण इसे राठ कहा गया। इसी राठ क्षेत्र में पूर्वी और पश्चिमी नयार नदी का अधिकांश जलागम क्षेत्र है। नयार नदी को नादगंगा, नारदगंगा, रथवाहिनी, नवालिका आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

## यात्रा से हासिल क्या हुआ?

दूधातोली पर्वत श्रृखंला के मुरलीकोठा चोटी (ऊंचाई समुद्रतल से 3000 मीटर) के दो अग्र पनढ़ालों यथा-दक्षिण-पश्चिम पनढाल से पूर्वी नयार और उत्तर-पश्चिम पनढाल से पश्चिमी नयार नदियों की मातृ धाराएं जन्म लेती हैं। ये जल धाराएं अपनी-अपनी दिशाओं में आगे चलकर अन्य कई जल धाराओं को समेटते हुए प्रवाहित होती हैं। मरोड़ा गांव के निकट सिंगोडा गाड़ और उडियार गाड के संगम स्थल लदोली घाट (2000 मीटर) पहुंचने वाली संयुक्त जल धारा को यहां से पूर्वी नयार कहा जाता है। इसी प्रकार स्योलीगाड और ढाईज्यूली गाड के संगम स्थल पैठाणी (1272 मीटर) पहुंचने पर इस संयुक्त जल धारा को पश्चिमी नयार कहा जाता है। पूर्वी और पश्चिमी नयार अपने-अपने उद्गम क्षेत्र से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी तय करके सतपुली से 2 किलोमीटर आगे नौगांव और कमंद गांव के निकट दुनै घाट नामक स्थल पर आपस में मिल कर नयार नदी नाम से जानी जाती है। इससे आगे लगभग 20 किलोमीटर की यात्रा तय करके नयार नदी व्यासघाट के फूल-व्यास चट्टी (ऊंचाई समुद्रतल से 435 मीटर) स्थल पर गंगा नदी में समाहित हो जाती है। नयार नदी का कुल जलागम क्षेत्र 1960 वर्ग किलोमीटर है। संपूर्ण नयार घाटी की तकरीबन 3 लाख आबादी में 1700 गांव बसे हैं। 'नयार नदी-स्त्रोत से संगम अध्ययन यात्रा' से वापस अपने गांव चामी आते हुए मन-मस्तिष्क में उक्त आशंकाओं के साथ यह कुलबुलाहट भी थी कि आखिर इस यात्रा से हासिल क्या हुआ? इस द्वंद्व का कारण पिछली पद यात्राओं के दोहराव से उपजी उकताहट भी रही होगी। परंतु इस सबसे अहम यह बात मन में जरूर पुख्ता हुई कि नयार नदी यात्रा मेरे लिए आत्म-मुग्धता की नहीं आत्म-विवेचना की यात्रा साबित हुई है।

**• दूधातोली क्षेत्र का नाम राष्ट्रकूट से राठ भी है, विशेष जलवायु और भौगोलिक स्थिति के कारण यहां उत्तम किस्म के भेड़-बकरियों की ऊन और भांग की पैदावार होती है, ऊन और भांग के रेशों को कातने-बुनने में प्रयुक्त रहट अथवा चर्खा की अधिकता के कारण इसे राठ कहा गया।**

**• दूधातोली का प्रबंधन अलग-अलग वन प्रभागों के बजाय एकीकृत स्वरूप में होना चाहिए, नीति-नियंताओं को दूधातोली के व्यापक संरक्षण, प्रबंधन एवं स्थानीय समुदाय के रोजगार के लिए विशेष परियोजना तैयार करनी चाहिए।**

इस अध्ययन यात्रा ने नयार नदी के परिपेक्ष्य में कई महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर किया है। यथा-पूर्वी और पश्चिमी नयार नदी के संपूर्ण प्रवाह क्षेत्र और उनमें शामिल होने वाली जलधाराओं का चिह्नीकरण, पूर्वी नयार नदी से सतपूली में 14 सितंबर, 1951 को आई भीषण बाढ़ के प्रारंभिक स्थल डिन्यालू डांडा से तथ्यों का एकत्रीकरण, दूधातोली के उच्च क्षेत्रों में पौंधों के न उपजने एवं नयार के जल प्रवाह तंत्र में निरंतर कमी (विशेषकर मानवीय हस्तक्षेप, जलवायु परिवर्तन, अनियोजित खनन कार्यों) का आकलन, पारिस्थितिकी, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक तंत्र मुख्यतः पशुचारकों और वनकर्मियों की मनः स्थिति और कार्य दशाओं में हो रहे बहुआयामी बदलावों, सकारात्मक उद्यमीय प्रयासों, क्षेत्र की कुछ प्रमुख विभूतियों वीर चंद्रसिंह गढ़वाली, तीलू रौतेली, जसवंत सिंह, टिचंरी माई, शिवानंद नौटियाल आदि के पैतृक गांवों की यथा स्थिति के कारणों को इस यात्रा के द्वारा जाना और समझा गया है। उक्त सभी तथ्यों पर विस्तृत और गहन रिपोर्ट का लेखन कार्य गतिमान है। यह रिपोर्ट दूधातोली, राठ और नयार नदी क्षेत्र के संरक्षण और संवर्द्धन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी। संपूर्ण अध्ययन यात्रा के यात्रियों में अरुण कुकसाल, बीरेंद्र चंद, देवकृष्ण थपलियाल, जयदीप रावत, कुलदीप सिंह, प्रेम बहुखड़ी, सागर बिष्ट, सुमेर चंद, यश तिवारी।

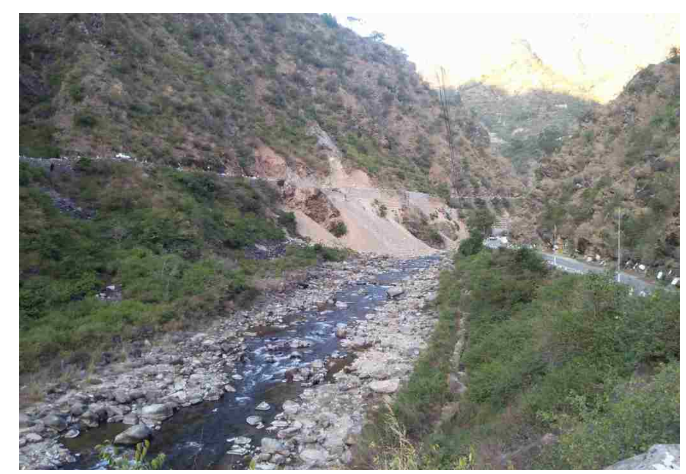

# उत्तराखंड में दक्षिण मुखी शिवलिंग

> **गुप्तकाशी के विश्वनाथ मंदिर को भगवान शिव से जुड़े होने के कारण वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर की प्रतिकृति भी कहा जाता है, वाराणसी काशी मंदिर 12 शुभ ज्योतिर्लिंगों में से एक है, उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर का महत्व भी वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर के बराबर ही माना गया है।**

हरीश भट्ट
रामनगर

उत्तर की काशी यानी देवभूमि उत्तरखंड का उत्तरकाशी जिला। इसी उत्तरकाशी में बाड़ाहाट में प्राचीन विश्वनाथ मंदिर है।

## स्कंद पुराण में उल्लेख है कि

'यदा पापस्य बाहुल्यं यवनाक्रान्तभुतलम्।
भविष्यति तदा विप्रा निवासं हिमवद्गिरो।।
काश्या सह करिष्यामि सर्वतीर्थः समन्वितः।
अनदिसिद्धं मे स्थानं वत्तते सर्वदेय हि।।'

अर्थात 'जब पाप का बाहुल्य होगा तथा पृथ्वी यवनों से अक्रांत हो जाएगी, तब मेरा निवास हिमालय पर्वत में होगा। अनादिसिद्ध हिमालय सर्वदा ही मेरा स्थान रहा है। मैं उसको इस समय यानी कलयुग में काशी के सहित समस्त तीर्थों को उत्तर की काशी में युक्त कर दूंगा।' स्कन्दपुराण के केदारखंड में भगवान आशुतोष ने उत्तरकाशी को कलियुग की काशी के नाम से संबोधित किया है। साथ ही उन्होंने व्यक्त किया है कि वे अपने परिवार, समस्त तीर्थ स्थानों एवं काशी सहित कलयुग में उस स्थान पर वास करेंगे। जहां पर एक अलौकिक स्वयंभू ज्योर्तिलिंग, जो कि द्वादश जयोतिर्लिंगों में से एक है। यानी उत्तरकाशी में वास करेंगे। उत्तरकाशी में भगवान विश्वनाथ अनादि काल से चिर समाधि में लीन होकर मंदिर में विराजमान हैं। इसे गुप्त काशी भी कहा जाता है। भगवान आशुतोष यहां सदियों से संसार के समस्त प्राणियों का अपने शुभाशीष से कल्याण करते आ रहे हैं। एक काशी विश्वनाथ उत्तर प्रदेश में भी है जिसे मोक्ष का द्वार कहा जाता है, देवों के देव महादेव का समर्पित काशी मंदिर देश और दुनिया में प्रसिद्ध है। देवभूमि उत्तराखंड के उत्तरकाशी शहर का नाम भी काशी विश्वनाथ से ही बना है। यानी यह उत्तर की काशी है। विश्वनाथ मंदिर को लेकर मान्यता है कि इस मंदिर की स्थापना परशुराम द्वारा की गई थी। यहां पाषाण शिवलिंग 56 सेंटीमीटर ऊंचा एवं दक्षिण कि ओर झुका हुआ है। गर्भगृह में भगवान गजानन एवं माता पार्वती शिवलिंग के सम्मुख विराजमान है। वाह्य गृह में नंदी प्रतीक्षारत हैं। वर्तमान मंदिर का जीर्णोद्धार 1857 में टिहरी गढ़वाल कि रानी खनेटी देवी पत्नी तत्कालीन राजा सुदर्शन शाह ने करवाया था। मंदिर का निर्माण कत्यूरी शैली में पाषाण के आधार पर किया गया है। मंदिर के निर्माण में पत्थर का प्रयोग किया गया है। यह गंगोत्री ग्लेशियर से निकलने वाली भागीरथी नदी के तट के पास यानी वरुणा और अस्सी नदी की धाराओं के बीच स्थित है।

मंदिर में 1500 वर्ष पुराना त्रिशूल

गुप्तकाशी के विश्वनाथ मंदिर परिसर में कई अन्य मंदिर भी हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण शक्ति मंदिर विश्वनाथ मंदिर के सामने है। यहां देवी दुर्गा एक विशाल त्रिशूल के रूप में विराजमान हैं। यह त्रिशूल 16.5 फीट ऊंचा है और लगभग 1500 वर्ष पुराना है। ऋषिकेश-गंगोत्री मार्ग पर समुद्र तल से 1158 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर का पौराणिक महत्व भी है। महिषासुर राक्षस का वध करने के बाद मां दुर्गा ने त्रिशूल का रूप धारण किया। यही त्रिशूल यहां इतनी मजबूती से जमीन पर टिका है कि कोई भी भारी बल उसे हिला नहीं सकता, लेकिन अगर भक्त मां दुर्गा का सच्चे मन से ध्यान कर त्रिशूल एक छोटी उंगली से भी छूते हैं तो वो हिलने लगता है। यह उत्तराखंड के प्राचीनतम धार्मिक चिह्नों में से एक है। इस त्रिशूल पर तिब्बती भाषा के आलेख अंकित हैं जो भारत और तिब्बत के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमाण हैं। त्रिशूल पर नाग वंश की वंशावली भी अंकित है। सिंह द्वार के दोनों ओर विभिन्न छोटे मंदिरों में भगवान गणेश की प्राचीन मूर्तियां स्थापित हैं। मंदिर परिसर में साक्षी गोपाल और मार्कंडेय ऋषि के मंदिर भी स्थापित हैं। किंवदंती के अनुसार ऋषि मार्कंडेय अल्पायु से शापित थे। वह विश्वनाथ मंदिर में ही तपस्यारत रहे थे। जब मृत्यु के देवता यमराज उनके प्राण लेने के लिए आए तो ऋषि मार्कंडेय, विश्वनाथ से जाकर लिपट गए। उनका प्रेम एवं भक्ति देख कर भगवान अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने यमराज को खाली हाथ वापस भेज दिया। मार्कंडेय की अल्पायु पूर्णायु में परिवर्तित हो गई। इसी कारण विश्वनाथ मंदिर में शिवलिंग दक्षिण की ओर झुका हुआ है। ये स्वयंभू शिवलिंग दक्षिण की ओर झुका है इसलिए इसे दक्षिण मुखी शिवलिंग भी कहा जाता है, जो काले पत्थर, चांदी के वासुकी और त्रिशूल से बना है। उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर को भगवान शिव से जुड़े होने के कारण वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर की प्रतिकृति भी कहा जाता है। वाराणसी काशी मंदिर 12 शुभ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। गुप्तकाशी के विश्वनाथ मंदिर का महत्व भी वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर के बराबर ही माना जाता है। इसका निर्माण भी पारंपरिक हिंदू मंदिरों की तरह ही पत्थर की नक्काशी से किया गया है, जिसके शीर्ष पर एक शिखर या शंक्वाकार गुंबद और एक चौकोर गर्भगृह है।

> - **उत्तर की काशी है। विश्वनाथ मंदिर को लेकर मान्यता है कि इस मंदिर की स्थापना परशुराम द्वारा की गई थी। यहां पाषाण शिवलिंग 56 सेंटीमीटर ऊंचा एवं दक्षिण कि ओर झुका हुआ है। गर्भगृह में भगवान गजानन एवं माता पार्वती शिवलिंग के सम्मुख विराजमान है।**
> - **माना जाता है कि गंगोत्री की तीर्थयात्रा तब तक पूरी नहीं मानी जाती है जब तक उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी के काशी विश्वनाथ और रामेश्वरम धाम में पूजा अर्चना न की जाए, श्रवण मास में उत्तरकाशी विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं और कांवड़ियों की खासी भीड़ रहती है।**

## उत्तरकाशी के स्थान देवता

गंगोत्री और यमुनोत्री धाम की यात्रा खासकर गुप्तकाशी के विश्वनाथ मंदिर की यात्रा के बिना अर्थहीन है। इसकी कारण प्रत्येक वर्ष हजारों तीर्थयात्री दर्शन के लिए गुप्तकाशी पहुंचते हैं। माना जाता है कि गंगोत्री की तीर्थयात्रा तब तक पूरी नहीं मानी जाती है जब तक उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी के काशी विश्वनाथ और रामेश्वरम धाम में पूजा अर्चना न की जाए। श्रवण मास में उत्तरकाशी विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं और कांवड़ियों की खासी भीड़ रहती है। विश्वनाथ मंदिर परिसर में कांवड़ियों के रुकने की भी व्यवस्था हैं। मंदिर के महंत जयेंद्र पुरी कहते हैं कि भगवान आशुतोष काशी विश्वनाथ, उत्तरकाशी के स्थान देवता भी हैं। कलयुग में उत्तरकाशी का खास महत्व है, उत्तरकाशी को गुप्तकाशी भी कहा जाता है। यहां पर स्वयंभू ज्योर्तिलिंग के रूप में देवों के देव महादेव दर्शन दे रहे हैं। भगवान का रूप 56 सेंटीमीटर ऊंचा दक्षिण की ओर झुका हुआ तथा प्राचीन शिवलिंग है। यहां आने वाले हर भक्त की हर मनोकामना पूर्ण होती है। हिमालय की गोद में बसा उत्तरकाशी एक छोटा किंतु रमणीक शहर है। जो अनादी काल से ऋषि-मुनियों कि तपोस्थली रहा है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर के बराबर ही उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर का महत्व है। यह दिव्य स्थान हिंदू पौराणिक कथाओं में गुप्तकाशी के रूप में एक पवित्र स्थान बताया गया है। उत्तरकाशी को सौम्य काशी या बाड़ाहाट भी कहा जाता है और भगवान शिव से जुड़े होने के कारण इसे शिवनगरी की उपाधि दी गई है। उत्तरकाशी का मतलब है उत्तर में काशी, जबकि काशी का वास्तविक अर्थ है जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति। उत्तरकाशी नगर का प्राचीन नाम बाड़ाहाट है। बाड़ाहाट का अर्थ बड़ा बाजार से है। कालान्तर में यहां भारत और तिब्बत के व्यापारियों का बाजार लगता था। तिब्बती व्यापारी नमक, खाद्य सामाग्री के लिए रत्नों का विनिमय करते थे। अब केवल इस बाजार की याद शेष बची हैं।

गुप्तकाशी में परशुराम का क्रोध शांत हुआ

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान परशुराम का जन्म ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के घर हुआ था। उनके पास एक पवित्र गाय, सुरभि (कामधेनु की पुत्री) थी। जो उन्हें जो भी चाहिए वो देती थी। एक बार हैय्या वंश के क्षत्रिय राजा कार्तवीर्य सहस्त्रराज की नजर सुरभि पर पड़ी और वह उसे अपने अधिकार में करना चाहता था। सुरभि गाय चुराने की कोशिश करते समय ऋषि जमदग्नि ने उसका सामना किया। हालांकि परशुराम ने राजा और उसके पिता को मार डाला। कार्तवीर्य के पुत्रों ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए क्षत्रिय राजाओं से संपर्क किया। उन्होंने परशुराम की अनुपस्थिति में ऋषि जमदग्नि का वध कर दिया और आश्रम को नष्ट कर दिया। जब परशुराम को इस घटना के बारे में पता चला तो वे बहुत दुखी हुए और उन्होंने राजा कार्तवीर्य के पुत्रों को मार डाला, हैय्या वंश और क्षत्रिय साथियों का नाश कर दिया। लेकिन परशुराम का क्रोध शांत नहीं हुआ, उन्होंने 21 क्षत्रिय कुलों और भूमि को नष्ट कर दिया। कहा जाता है कि परशुराम ने उत्तरकाशी में कठोर तपस्या की और झुके हुए शिवलिंग की स्थापना की। यह उत्तरकाशी का वो विश्वनाथ मंदिर है जहां परशुराम का क्रोध शांत हुआ था। इसके बाद उन्होंने अपने पूर्वजों का श्राद्ध और अश्वमेध तथा विश्वजीत यज्ञ किया था।

## विश्वनाथ मंदिर में अनुष्ठान

उत्तरकाशी के विश्वनाथ मंदिर के पुजारी पवित्रता और परंपराओं को बनाए रखते हैं। मंदिर में होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों में पवित्रता और नियमों का विशेष ध्यान रखा जाता है। मंदिर के पुजारियों को आध्यात्मिक ज्ञान होना आवश्यक है। मंदिर में नियमित होने वाले अनुष्ठान में मंदिर के कपाट खुलने का समय प्रातः 3 बजे से प्रातः 4 बजे तक

> **परशुराम ने 21 क्षत्रिय कुलों और भूमि को नष्ट किया, लेकिन उनका क्रोध शांत नहीं हुआ, फिर परशुराम ने उत्तरकाशी में कठोर तपस्या की और झुके हुए शिवलिंग की स्थापना की, यही उत्तरकाशी का वो विश्वनाथ मंदिर है जहां परशुराम का क्रोध शांत हुआ था।**

मौसम के अनुसार है। मंदिर में मंगला आरती प्रातः 4 बजे से 6 बजे तक होती है इसके बाद भोग आरती सुबह 11.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक, सायंकालीन आरती सायं 6.30 बजे से 8.00 बजे तक होती है। श्रृंगार आरती रात्रि 9 बजे से 10 बजे तक और शयन आरती रात्रि 10.30 बजे से 11 बजे तक हो जाती है। लेकिन श्रद्धालुओं के लिए मंदिर में दर्शन करने का समय सुबह 6.00 बजे से रात 8.30 बजे तक निर्धारित है। मंदिर में रुद्राभिषेक से पहले दूध, जल, शहद, कच्ची लस्सी, दही आदि से शिवलिंग का स्नान कराया जाता है। आत्मज्ञान और शांति के लिए वैदिक शिव मंत्र या ओम नमः शिवाय का जाप करना होता है। पुजारियों द्वारा की जाने वाली आरती में भाग लेने वालों को शिवलिंग पर फूल, चंदन, चावल, चीनी, शहद या अन्य चीजें चढ़ानी चाहिए। आध्यात्मिक आनंद लेना चाहते हैं तो दीया व धूपबत्ती जलाएं। आरती भागीरथी के तट के पास भी की जाती है, जहां काशी विश्वनाथ मंदिर (उत्तरकाशी) स्थित है। प्रतिदिन पुजारी वैदिक मंत्रों का जाप करते हैं, भक्त भागीरथी में पवित्र डुबकी लगाते हैं, फूल चढ़ाते हैं और भागीरथी में दीया जलाकर प्रवाहित करते हैं। भगवान शिव से जुड़े दिन और समय भाग्यशाली माने जाते हैं क्योंकि उत्तरकाशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव से जुड़ा हुआ है। आप शिव शंकर से सुख-समृद्धि पाने के लिए यहां सोमवार को जा सकते हैं क्योंकि भगवान शिव को सोमेश्वर भी कहा जाता है। चंद्र चक्र के 13वें दिन या त्रयोदशी को सूर्यास्त के समय प्रदोष काल मनाया जाता है, जिसे शिव पूजन के लिए अत्यधिक पवित्र समय माना जाता है। मासिक शिवरात्रि चंद्र चक्र के कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है, जो हिंदू कैलेंडर में हर महीने आती है। मासिक शिवरात्रि पर आधी रात को निशिता काल मनाया जाता है। इस दौरान भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान कृष्ण की पूजा करना शुभ होता है। महाशिवरात्रि भगवान शिव का सबसे पवित्र त्यौहार है, जो फरवरी या मार्च में मनाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था।

# उत्तरकाशी का प्राचीन परशुराम मंदिर

**2016 में उत्तरकाशी का परशुराम मंदिर तब चर्चा में आया था जब इसके दरवाजे दलितों के लिए खोले गए थे, उत्तराखंड के जौनसार बावर क्षेत्र के इस मंदिर के दरवाजे शताब्दियों से दलितों के लिए बंद थे, इस क्षेत्र के दलितों द्वारा एक दशक से भी ज्यादा समय तक मंदिरों में प्रवेश के लिए आंदोलन किया था।**

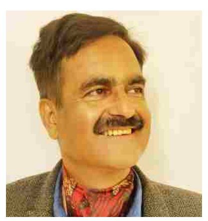

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड के कण-कण में देवी-देवताओं का वास बताया गया है। यहां पौराणिक महत्व के ही नहीं बल्कि प्राचीन मंदिरों की बड़ी श्रृंखला है। इसी श्रृंखला में भगवान विष्णु के छठें अवतार परशुराम जी का एक मात्र प्राचीन मंदिर उत्तरकाशी जिले में है। अक्षय तृतीय के दिन इनकी जयंती भी मनाई जाती है। जिसमें देश के कोने-कोने से श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। मान्यता है कि कार्तवीर्य के पुत्र द्वारा परशुराम की गैर मौजूदगी में आश्रम पर हमला कर उनके पिता जमदग्नि ऋषि का वध कर दिया गया था, तब परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रीय विहीन करने की प्रतिज्ञा ली और 21 बार धरती को क्षत्रिय विहीन किया था। भगवान परशुराम को शंकर भगवान से दिव्य अस्त्र प्राप्त थे। महाभारत काल में भीष्म व कर्ण परशुराम के भी शिष्य थे, उन्हें परशुराम ने ही धनुर्विद्या का ज्ञान दिया था। पुराणों के अनुसार उत्तरकाशी में ही भगवान परशुराम ने इसी मंदिर परिसर में तपस्या की थी। स्थानीय लोग बताते हैं कि इस मंदिर के गर्भगृह में पहले भगवान विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति भी विराजमान थी। इसके अलावा उनकी दशावतार व नवग्रह मूर्तियां भी यहां होती थीं, लेकिन इन कीमती मूर्तियों को चोरों और तस्करों ने गायब कर दिया। पुराणों के अनुसार उत्तरकाशी में ही बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन के बाद परशुराम का क्रोध शांत हुआ था। तब भगवान शिव ने परशुराम को आशीवार्द दिया था कि अब इसे सौम्यकाशी के नाम से भी जाना जाएगा। उत्तरकाशी जिला मुख्यालय में परशुराम का मंदिर बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर से करीब 100 मीटर की दूरी पर है। यहां पर उनकी पूजा विष्णु जी के पाषाण रूप में की जाती है। यहां स्थापित परशुराम मूर्ति आठवीं और नवीं सदी की बताई जाती है। परशुराम की इस मूर्ति और अयोध्या में भगवान श्रीराम की मूर्ति में कई समानताएं देखी जा सकती हैं। मंदिर के पुजारी का कहना है कि स्कंद पुराण के केदारखंड में परशुराम और उनके पूरे परिवार के उत्तरकाशी से संबंध के प्रमाण मिलते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार उत्तरकाशी में ही राजा भागीरथ ने तपस्या की थी और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें वरदान दिया था कि भगवान शिव धरती पर आ रही गंगा को धारण कर लेंगे। तब से यह नगरी विश्वनाथ की नगरी कही जाने लगी और कालांतर में इसे उत्तरकाशी कहा जाने लगा। लोकमान्यता है कि इस मंदिर की स्थापना परशुराम द्वारा की गई थी। मंदिर में मौजूद मूर्ति पर अंकित ब्यौरे के अनुसार राजा सुदर्शन शाह के शासनकाल में मंत्री रहे धर्मदत्त द्वारा 1842 में इसका जीर्णोद्धार कराया गया था। इसके बाद सुदर्शन शाह की पत्नी महारानी कांति ने 1857 में इस मंदिर की मरम्मत कराई थी। इस मंदिर में एक शिवलिंग भी स्थापित है।

**क्रोध के लिए जाने जाने वाले भगवान परशुराम ने अपने क्रोध को काबू करने के लिए उत्तरकाशी में भगवान विश्वनाथ की तपस्या की थी। लोकमान्यता है कि कठोर तपस्या के बाद परशुराम का व्यवहार बहुत ही सौम्य हो गया था यही वजह है कि उत्तरकाशी को सौम्यकाशी के नाम से भी जाना जाता है।**

## 400 साल पुरानी परंपरा तोड़ी

2016 में उत्तरकाशी का यह परशुराम मंदिर तब चर्चा में आया था जब इसके दरवाजे दलितों के लिए खोले गए थे। उत्तराखंड के जौनसार बावर क्षेत्र के इस मंदिर के दरवाजे शताब्दियों से दलितों के लिए बंद थे। इस क्षेत्र के दलितों द्वारा एक दशक से भी ज्यादा समय तक मंदिरों में प्रवेश के लिए आंदोलन भी चलाया गया था। 2016 की शुरुआत में परशुराम मंदिर कमेटी के अध्यक्ष जवाहर सिंह ने घोषणा की कि परंपरा के नाम पर दलितों और महिलाओं को मंदिर प्रवेश से रोकना ठीक नहीं है अतः मंदिर के द्वार दलितों व महिलाओं के लिए खोल दिए गए थे। तब से इस मंदिर में सब लोगो का आना जाना है। कोई भी मंदिर में भगवान परशुराम के दर्शन कर सकता है। भगवान परशुराम का यह बहुत ही दुर्लभ मंदिर है। हलांकि बहुत कम संख्या में ही भगवान परशुराम के मंदिर हैं, इन्हीं मंदिरों में से एक यह मंदिर उत्तरकाशी में भगवान दत्तात्रेय मंदिर के पास है। परशुराम का उल्लेख रामायण, ब्रह्मवैवर्त पुराण और कल्कि पुराण आदि में मिलता है। धार्मिक मान्यताएं हैं कि अपने क्रोध के लिए जाने जाने वाले भगवान परशुराम ने अपने क्रोध को काबू करने के लिए उत्तरकाशी में भगवान विश्वनाथ की तपस्या की थी। लोकमान्यता है कि कठोर तपस्या के बाद परशुराम का व्यवहार बहुत ही सौम्य हो गया था यही वजह है कि उत्तरकाशी को सौम्यकाशी के नाम से भी जाना जाता है।

## पराक्रमी भगवान परशुराम

भगवान परशुराम की तपस्थली बाराहाट में ही परशुराम का यह प्राचीन मंदिर स्थापित है। लोकमान्यता  है कि इसी स्थान पर भगवान परशुराम ने आशुतोष की तपस्या की थी। द्वापर युग में भगवान परशुराम पद्मावत राज्य में वेण्या नदी के किनारे रहते थे। जरासंध के हमले के दौरान, बलराम और श्रीकृष्ण ने दक्षिण से मदद लेने के लिए दक्षिण प्रदेश की यात्रा की। श्रीकृष्ण ने बलराम से बात करके परशुराम से मिलने का फैसला किया। कई नदियों और जंगलों को पार करने के बाद, वे परशुराम के आश्रम पहुंचे। जहां परशुराम और सांदीपनि ने उनका स्वागत किया। परशुराम ने उन्हें फल खिलाए, रहने की व्यवस्था की और बाद में श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र की दीक्षा दी। परशुराम एक बहुत शक्तिशाली देवों में से एक थे। जिन्होंने अलग-अलग युगों में कई महत्वपूर्ण काम किए। सतयुग में उन्होंने गणेश जी का एक दांत तोड़ दिया था। त्रेतायुग में उन्होंने राजाओं का सम्मान किया और प्रभु श्रीराम का अभिनंदन किया। द्वापर युग में उन्होंने श्रीकृष्ण का साथ दिया और कर्ण को श्राप दिया। उन्होंने भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण को शस्त्र विद्या भी सिखाई। भगवान परशुराम ने यज्ञ करने के लिए एक विशाल सोने की वेदी बनवाई थी। इस वेदी पर कई यज्ञ किए। बाद में महर्षि कश्यप ने उनसे वह वेदी ले ली और उन्हें पृथ्वी छोड़ने को कह दिया था। लिहाजा परशुराम ने उनकी बात मानकर समुद्र को पीछे धकेल दिया और महेंद्र पर्वत पर चले गए।

## बिना शस्त्र असुरों का वध

माना जाता है कि परशुराम ने हैयवंशी क्षत्रियों से धरती जीतकर दान कर दी थी। जब उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं बची, तो वो वरुणदेव की तपस्या करने लगे। वरुणदेव ने उन्हें दर्शन दिए और परशुराम को एक उपाय बताया कि वो अपना फरसा समुद्र में फेंक दें। जहां तक फरसा गिरेगा, वहां तक समुद्र का जल सूख जाएगा और वह भूमि परशुराम की होगी। ऐसा करने पर केरल राज्य बना और यही पर परशुराम ने विष्णु भगवान का मंदिर बनवाया। परशुराम मंदिर के पुजारी के अनुसार परशुराम जन्मोत्सव का दिन खास होता है इस दिन अच्छे काम करने से शुभ फल प्राप्त होता है। एक कथा के अनुसार जब समस्त देवी-देवता असुरों के अत्याचार से परेशान होकर महादेव के पास गए तो शिव जी ने अपने परम भक्त परशुराम को उन असुरों का वध करने के लिए कहा जिसके बाद परशुराम ने बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के सभी राक्षसों का वध कर डाला था। यह देख शिवजी अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने परशुराम को कई शस्त्र प्रदान किए, जिनमें से एक फरसा भी शामिल था। उस दिन से वे राम से परशुराम बन गए। परशुराम अपने माता पिता की भक्ति में लीन रहते थे वे अपने माता-पिता की आज्ञा की कभी अवहेलना नहीं करते थे। परशुराम के चार बड़े भाई थे। एक दिन जब सब पुत्र काम से जंगल चले गए तब माता रेणुका स्नान करने गईं। जिस समय वह स्नान करके आश्रम को लौट रही थीं, तब उन्होंने राजा चित्ररथ को जलविहार करते देखा। यह देखकर उनका मन विचलित हो गया और जब वो घर लौटीं तो उनके हाव भाव देखकर महर्षि जमदग्नि यह बात जान गए। इतने में ही परशुराम के बड़े भाई रुक्मवान, सुषेणु, वसु और विश्वावसु जंगल से आ गए। महर्षि जमदग्नि ने उन सभी से बारी-बारी अपनी मां का वध करने को कहा लेकिन सभी ने ऐसा करने से मना कर दिया।  इससे नाराज होकर महर्षि जमदग्नि ने उन्हें श्राप दे दिया और उनकी विचार शक्ति खत्म कर दी। तभी वहां परशुराम भी आ गए, उन्होंने पिता के आदेश का पालन करते हुए अपनी मां का सिर काट दिया। यह देखकर महर्षि जमदग्नि बहुत प्रसन्न हुए और परशुराम को वर मांगने के लिए कहा। तब परशुराम ने बड़ी ही चतुराई  3 वरदान मांगे। पहला माता रेणुका को पुनर्जीवित करने का वरदान मांगा। इस तरह उन्होंने अपने पिता का भी मान रख लिया और माता को भी पुनर्जिवित करा लिया। और दूसरा चारों भाइयों को विचार शक्ति ठीक करने का वरदान मांगा। तीसरे वरदान में उन्होंने कभी पराजय का सामना न करने और दीर्घ आयु का वरदान मांग लिया।

**पिता महर्षि जमदग्नि के आदेश परशुराम ने अपनी मां का सिर काट दिया था, इससे महर्षि जमदग्नि प्रसन्न हुए और परशुराम को वर मांगने के लिए कहा, तब परशुराम ने 3 वरदान मांगे, पहला माता रेणुका को जीवित करने का, दूसरा चारों भाइयों को विचार शक्ति ठीक करने का व तीसरा दीर्घ आयु का वरदान मांगा।**

## परशुराम क्रोधी योद्धा?

पौराणिक कथाओं में इस बात का उल्लेख मिलता है कि परशुराम ने ही गणेश जी का एक दांत तोड़ा था। इसके पीछे की कथा है कि एक बार परशुराम कैलाश पर भगवान शिव से मिलने पहुंचे, किंतु महादेव घोर तपस्या में लीन थे इसलिए गजानन ने उन्हें भोलेनाथ से मिलने नहीं दिया। इस बात से क्रोधित होकर परशुराम ने उन पर अपना फरसा चला दिया। क्योंकि वह फरसा स्वयं शंकर जी ने उन्हें दिया था इसलिए गणपति उसका वार खाली नहीं जाने देना चाहते थे। जैसे ही परशुराम ने उन पर वार किया उन्होंने उस वार को अपने दांत पर ले लिया जिसके कारण उनका एक दांत टूट गया तब से गणेश जी एकदंत भी कहलाते है। विरोधी छवि होने के कारण भगवान परशुराम ने सहस्त्रबाहु जैसे अधर्मी क्षत्रियों का संहार किया था। जिसके कारण कुछ समुदाय उन्हें क्रोधी योद्धा मानते हैं। यह छवि उनकी भक्ति को सीमित करती है। सन्यासी स्वरूप होने के कारण, परशुराम एक योद्धा-ऋषि थे, जिनका तप, शास्त्र और धर्म की रक्षा पर केंद्रित था। उनका कोई पारिवारिक या सामाजिक रूप नहीं था, जिससे भक्तों का जुड़ाव कम रहा। क्षेत्रीय भक्ति होने के कारण जैसे उनकी पूजा मुख्य रूप से दक्षिण भारत और कुछ ब्राह्मण समुदायों में होती है। अन्य क्षेत्रों में राम-कृष्ण की भक्ति अधिक लोकप्रिय है। इसके पीछे की पौराणिक कथा यह है कि परशुराम अमर हैं और कलियुग के अंत में कल्कि अवतार को प्रशिक्षित करेंगे, इस कारण उनकी पूजा भविष्य-उंमुख मानी जाती है। परशुराम जन्मोत्सव धर्म, शास्त्र और शस्त्र की आराधना का महापर्व है। शास्त्रों के अनुसार इस दिन पूजा व्रत करने से साहस, शक्ति और शांति प्राप्त होती है। निःसंतान दंपतियों के लिए यह व्रत संतान प्राप्ति में फलदायी माना जाता है। दान पुण्य का विशेष महत्व है, जो मोक्ष और समृद्धि का मार्ग खोलता है। यह दिन भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने का भी अवसर माना जाता है।

# खुद फिल्मी स्क्रिप्ट है कैटरीना कैफ

**कैटरीना कैफ की कुछ कामयाब फिल्मों की बात करें तो उनमें 'वेलकम', 'सिंह इज किंग', 'न्यूयॉर्क', 'पार्टनर', 'अजब प्रेम की गजब कहानी', 'राजनीति', 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा', 'एक था टाइगर', 'धूम-3', 'बैंग बैंग', 'टाइगर जिंदा है' और 'सूर्यवंशी' जैसी फिल्में शामिल हैं।**

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

2003 में फिल्म 'बूम' से अपने फिल्मी करियर को शुरू करने वाली कैटरीना कैफ ने बहद कम समय में ही हिंदी सिनेमा में अपनी पहचान बना ली। करीब 22 साल के फिल्मी करियर में कैटरीना कैफ ने एक से बढ़कर एक हिट और ब्लॉकबस्टर फिल्मों में काम किया। 40 साल की कैटरीना कैफ फिल्म टाइगर 3 में एक बार फिर सलमान खान के अपोजिट नजर आई हैं। इन 22 सालों में कैटरीना की लाइफ पूरी तरह से बदल गई है। 'बूम' में छोटा सा किरदार निभाने वाली कैटरीना कैफ अब इंडस्ट्री की टॉप एक्ट्रेस में शुमार हो गई हैं। कुछ समय पहले ही कैटरीना कैफ ने अपना घर भी बसाया है। उन्होंने जाने माने अभिनेता विक्की कौशल के साथ शादी की है। कैटरीना कैफ की कुछ कामयाब फिल्मों की बात करें तो उनमें 'वेलकम', 'सिंह इज किंग', 'न्यूयॉर्क', 'पार्टनर', 'अजब प्रेम की गजब कहानी', 'राजनीति', 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा', 'एक था टाइगर', 'धूम-3', 'बैंग बैंग', 'टाइगर जिंदा है' और 'सूर्यवंशी' जैसी फिल्में शामिल हैं। ये सभी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर तो कामयाब रही हीं, साथ ही इन फिल्मों में कैटरीना ने अपने अभिनय से तारीफें भी बटोरीं। कैटरीना कैफ की 5 सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्में, तो बजट की आधी कीमत भी नहीं वसूल पाईं। कैटरीना की 5 सबसे फ्लॉप फिल्मों के बारे में भी बताते हैं।

### हिट के साथ फ्लाप फिल्मे

कैटरीना कैफ ने अपनी खूबसूरती और अदाकारी के जरिए लाखों फैंस बनाए हैं। उन्हें बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस में गिना जाता है। लेकिन कैटरीना कैफ के खाते में कई ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर दम तोड़ दिया था। इनमें से चार फिल्में तो अपने बजट का आधा भी नहीं कमा पाई थीं। फिल्म 'जीरो' कैटरीना कैफ के करियर की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्मों में से एक है। 2018 की इस फिल्म में उनके साथ शाहरुख खान और अनुष्का शर्मा ने भी काम किया था। लेकिन नाम की तरह ही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर जीरो साबित हुई। 200 करोड़ रुपये के बजट में बनी

- **फिल्म 'जीरो' कैटरीना कैफ के करियर की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्मों में से एक है, 2018 की इस फिल्म में उनके साथ शाहरुख खान और अनुष्का शर्मा ने भी काम किया था, लेकिन नाम की तरह ही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर जीरो साबित हुई।**
- **कैटरीना कैफ की मां सुजैन टरकोटे ब्रिटेन मूल की हैं और कश्मीर मूल के मोहम्मद कैफ से शादी रचाई थी, इस शादी से सुजैन टरकोटे को 8 बच्चे हुए, कैटरीना के पिता उन्हें बचपन में ही छोड़कर अमेरिका चले गए थे, सुजैन टरकोटे अब चैरिटी वर्कर के साथ टीचर भी हैं।**

'जीरो' भारत में सिर्फ 97 करोड़ ही कमा पाई थी। फिल्म 'जीरो' को इसलिए कैटरीना कैफ के करियर की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्म माना गया। 2018 में ही रिलीज हुई 'ठग्स ऑफ हिन्दोस्तान' भी बड़े पर्दे पर पिट गई थी। ये तीन सौ करोड़ रुपये के भारी भरकम बजट में बनी थी, लेकिन इंडिया में सिर्फ 151 करोड़ रुपये ही कमाए। ये फिल्म एक तरह से डिजास्टर निकली। आमिर खान और अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गज कलाकार भी 'ठग्स ऑफ हिन्दोस्तान' को फ्लॉप होने से नहीं बचा सके। फिल्म 'जीरो' की तरह ही कैटरीना की फिल्म 'जग्गा जासूस' भी अपने बजट का आधा भी वसूल नहीं कर पाई थी। यह फिल्म जुलाई 2017 में रिलीज हुई थी। इसमें उन्होंने रणबीर कपूर के साथ काम किया था। 'जग्गा जासूस' का बजट 125 करोड़ रुपये था, जबकि कमाई सिर्फ 54 करोड़ रुपये ही हो पाई थी। कैटरीना ने 2003 में फिल्म 'बूम' से डेब्यू किया था। इस फिल्म में उनके साथ अमिताभ बच्चन और गुलशन ग्रोवर जैसे कलाकार भी थे। इसकी कमाई बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ 1.20 करोड़ रुपये ही हो पाई थी, जबकि मेकर्स ने इसे 5 करोड़ रुपये के बजट में तैयार किया था। कैटरीना ने सलमान खान के साथ कई सुपरहिट फिल्में दीं, लेकिन इन दोनों की 2008 में रिलीज हुई फिल्म 'युवराज' का बॉक्स ऑफिस पर हश्र बहुत बुरा हुआ। इसने भारत में सिर्फ 16.67 करोड़ का कलेक्शन किया था। जबकि इसका बजट 45 करोड़ रुपये था।

### कैटरीना की मां का संघर्ष

आज बॉलीवुड की खूबसूरत एक्ट्रेस कैटरीना कैफ हिंदी सिनेमा की टॉप और हाईएस्ट पेड एक्ट्रेस में से एक हैं। कैटरीना कैफ ने फिल्म 'बूम' से बॉलीवुड में धमाकेदार एंट्री की थी। इस फिल्म में कैटरीना ने कई इंटीमेट सीन दिए थे। इसके बाद से कैटरीना ने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बॉलीवुड के तीनों खान संग काम कर चुकीं कैटरीना कैफ फिल्म 'छावा' स्टार विक्की कौशल की पत्नी हैं। कैटरीना कैफ की तीन बड़ी और तीन छोटी बहनें हैं, एक बड़ा भाई है। कैटरीना कैफ की तरह उनकी बहनें भी सुंदर हैं और सबसे ज्यादा खूबसूरत उनकी मां सुजैन टरकोटे हैं। कैटरीना कैफ अपनी मां सुजैन टरकोटे पर गई हैं, क्योंकि सुजैन टरकोटे अपनी जवानी के दिनों में बेहद सुंदर दिखती थीं और यह खूबसूरती आज भी बरकरार है। एक वायरल पोस्ट में कैटरीना कैफ और उनकी मां सुजैन टरकोटे का फोटो देखी गई तो ये राज खुला। लुक और सुदंरता में मां-बेटी एक जैसी दिखती हैं। कैटरीना कैफ की मां सुजैन टरकोटे पेशे से चैरिटी वर्कर हैं। कैटरीना कैफ की पर्सनल लाइफ को सेट करने वाली उनकी मां सुजैन टरकोटे ही हैं, जिन्होंने कदम-कदम पर बेटी का मार्गदर्शन किया। सुजैन टरकोटे ब्रिटेन मूल की हैं और कश्मीर मूल के मोहम्मद कैफ से शादी रचाई थी। इस शादी से सुजैन टरकोटे को 8 बच्चे हुए। कैटरीना के पिता उन्हें बचपन में ही छोड़कर अमेरिका चले गए थे। सुजैन टरकोटे अब चैरिटी वर्कर के साथ-साथ टीचर भी हैं। कैटरीना कैफ के वायरल वीडियो पर एक यूजर ने लिखा, कैटरीना की मां ज्यादा सुंदर और क्यूट हैं। दूसरे यूजर ने लिखा है, मां नेचुरल ब्यूटी है और कैटरीना कैफ कॉस्मेटिक ब्यूटी है। एक ने लिखा है, नहीं, मां प्रीति जिंटा लग रही हैं और काफी सुंदर भी हैं। वहीं कई यूजर्स ने कैटरीना की मां को उनकी बहन बताया। कैटरीना कैफ की बात करें तो वो कभी भी स्कूल नहीं जा सकी। कैटरीना को उनकी मां ने घर पर ही पढ़ाया था। पिता के विदश जाने के बाद कैटरीना और उनकी फैमिली की लाइफ काफी संघर्षपूर्ण हो चुकी थी।

### 14 साल की उम्र में मॉडलिंग की

कैटरीना कैफ नाम से आज हर कोई वाकिफ है। क्योंकि आज वो बॉलीवुड की टॉप की हिरोइनों में गिनी जाती हैं। ब्रिटिश और भारतीय मूल की अभिनेत्री कैटरीना कैफ को बेहतरीन एक्टिंग के लिए बॉलीवुड में जाना जाता हैं। कैटरीना ने न सिर्फ हिंदी फिल्मों में काम किया है बल्कि वो तेलुगु और मलयालम फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। कैटरीना कैफ का जन्म 16 जुलाई 1983 को हांगकांग में हुआ था। उनके परिवार की स्थिति शुरुआत में बहुत खराब थी। इस खराब स्थिति की वजह से उन्हें एक शहर से दूसरे शहर जाना पड़ता था। आर्थिक स्थिति ठीक न होने की वजह से उनकी ज्यादातर पढ़ाई घर पर ही मां ने कराई। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से कैटरीना कैफ के करियर की शुरुआत महज 14 साल की छोटी उम्र में ही हो गई थी। इस उम्र में उन्होंने पहली बार मॉडलिंग की थी। मॉडलिंग में उन्होंने अच्छा नाम और पैसा कमाया। इसी के बूते उन्हें 2003 में फिल्म 'बूम' में अभिनय करने का मौका मिला। इस बीच कैटरीना कैफ को कई सारे

> **कैटरीना कैफ कभी भी स्कूल नहीं जा सकी, कैटरीना को उनकी मां सुजैन टरकोटे ने घर पर ही पढ़ाया था, पिता के अमेरिका चले जाने के बाद कैटरीना और उनकी फैमिली की लाइफ काफी संघर्षपूर्ण हो गई थी, इसलिए 14 साल की उम्र में कैटरीना ने मॉडलिंग शुरु कर दी थी।**

ब्रांड्स भी एंडोर्स करने के लिए मिले। उनकी पहली फिल्म 'बूम' बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो हुई तो उन्होंने तेलुगू फिल्म की तरफ अपना रुख किया और तेलुगू की पहली फिल्म 'मल्लीस्वरी' में काम किया। इस फिल्म के बाद बॉलीवुड अभिनेत्री कैटरीना कैफ को रामगोपाल वर्मा की फिल्म 'सरकार' में देखा गया, लेकिन उन्हें बड़ा ब्रेक मिला 2005 में आई फिल्म 'मैंने प्यार क्यों किया' से। इस फिल्म में उनके अपोजिट सलमान खान थे। ये फिल्म उस वक्त हिट साबित हुई थी। और इसी फिल्म के बूते कैटरीना कैफ बॉलीवुड में अपनी पकड़ मजबूत बना पाई थीं। इसके बाद कैटरीना कैफ ने अक्षय कुमार के साथ 'हमको दीवाना कर गए' में काम किया जो हिट साबित हुई थी। इस फिल्म में कैटरीना और अक्षय के अलावा बिपाशा बसु भी नजर आई थीं, जिनके काम की भी सराहना की गई थी। इन फिल्मों के बाद कैटरीना के पास तो जैसे फिल्मों की लाइन ही लग गई। उन्होंने नमस्ते लंदन, पार्टनर, वेलकम, रेस, अजब प्रेम की गजब कहानी, राजनीति, बॉडीगार्ड, दे दना दन और एक था टाइगर जैसी फिल्मों में काम किया। कैटरीना कैफ को आईफा के साथ ही स्क्रीन अवार्ड्स, स्टार डस्ट अवार्ड्स और जी सिने अवार्ड्स भी मिल चुके हैं।

# मासिक राशिफल


पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

## मेष-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि ससुराल के लोगों से मुलाकात हो सकती है। पिता से किसी प्रकार की मदद मिल सकती है, व्यवसाय में सफलता मिलेगी। आय के स्रोत में वृद्धि होगी। आपकी किसी मनोकामना की पूर्ति संभव है। मान सम्मान में वद्धि के अवसर मिलेंगे। नकारात्मक पक्ष देखें तो स्थानांतरण के योग हैं। पुरानी बीमारी से आराम मिलेगा। घुटने में चोट की आशंका है। बांई आंख का ध्यान रखें। खर्च बढ़ेगा। उपाय: ऊं हं हनुमते नमः मंत्र का जाप करें।

## वृषभ:-

इस माह सकारात्मक पक्ष यह है कि आप अपनी प्रभुता एवं अधिकारों का प्रयोग करेंगे। सरकारी पक्ष मजबूत रहने से काम बनेंगे। कारोबारी या धार्मिक यात्रा के योग हैं। आप कुल का नाम रोशन करने वाला काम कर सकते हैं। लाभ के प्रचुर अवसर मिलेंगे। नकारात्मक पक्ष देखें तो वाहन के प्रयोग में सावधानी बरतें। अनिर्णय की स्थिति बनेगी, खर्च विचलित कर सकता है। मन मुताबिक परिणाम मिलने में संदेह रहेगा। उपाय: कनकधारा स्त्रोत का पाठ करें।

## मिथुन:-

इस माह सकारात्मक पक्ष यह है कि धर्म कर्म में रुचि बढ़ेगी। भाग्य अचानक कुछ दिलवा सकता है और कई रुके काम बना सकता है। कोई सूचना आपके मन को उद्वेलित कर सकती है। नौकर चाकरों का सहयोग अच्छा रहेगा। आय के स्रोत में वृद्धि होगी। आपकी किसी मनोकामना की पूर्ति संभव है। नकारात्मक पक्ष देखें तो जूते पहन कर ही घर से बाहर निकलें। पीठ एवं कमर की तकलीफ बढ़ सकती है। उपाय: दुर्गा कवच का पाठ करें।

## कर्क:-

इस माह सकारात्मक पक्ष यह है कि अकस्मात धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा होगी, प्रशासनिक योग्यता में वृद्धि होगी। विवादित प्रकरणों में विजय मिलेगी, लाभ के प्रचुर अवसरों की प्राप्ति होगी। कारोबारी यात्रा होगी। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। पिता से किसी प्रकार की मदद मिल सकती है, व्यवसाय में सफलता मिलेगी। नकारात्मक पक्ष यह है कि स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अपनों की चिंता से मन दु:खी रहेगा। उपाय: शिव तांडव स्त्रोत का पाठ करें ।

## सिंह:-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि भागीदारी के कार्यों में सफलता मिलेगी। रोमांटिक मूड में रहेंगे एवं जीवनसाथी के साथ घूमने फिरने जा सकते हैं। लाभ के प्रचुर अवसर मिलेंगे। प्रेम मोहब्बत में सफलता मिलेगी। विरोधियों पर जीत हासिल कर सकते हैं। उत्साह व आक्रामकता बनाएं रखिए। नकारात्मक पक्ष देखें तो वाहन आदि का प्रयोग सावधानी से करें। अकारण तनाव को टालना ही हितकर रहेगा। उपाय: शिव चालीसा का पाठ करें ।

## कन्या:-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। भूमि भवन से संबंधित समस्या हल होगी कोई भूमि बेचने का सौदा हो सकता है। ननिहाल के किसी व्यक्ति से मुलाकात संभव है। भ्रमण एवं मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। मेहनत का फल मिलेगा। नकारात्मक पक्ष देखें तो जलीय रोगों के होने की संभावना प्रबल है। लेन-देन में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उपाय: गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ करें हितकारी रहेगा।

## तुला:-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि ऋण लेने की योजना फलीभूत होगी। सामाजिक सम्मान में बढ़ोतरी होगी। शिक्षा व प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। संतान पक्ष की चिंता दूर होगी। लाभ के नए अवसर मिलेंगे। बड़े भाई बहन का सहयोग बना रहेगा। व्यय बढ़ सकता है। अविवाहितों को विवाह के प्रस्ताव मिलेंगे। नकारात्मक पक्ष देखें तो शत्रुओं से सावधान रहें। कोई आपका काम बिगाड़ने की कोशिश करेगा। गले का रोग बढ़ने की आशंका है। उपाय: श्री सूक्त का पाठ करें।

## वृश्चिक:-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि संचार माध्यम से कोई आनंद दायक सूचना मिलेगी। लोकहित के लिए कोई योजना बनाएंगे। माता का आशीर्वाद चमत्कार की तरह काम करेगा। नेतृत्व क्षमता विकसित होगी, शिक्षा में सफलता मिलेगी। नकारात्मक पक्ष देखें तो लड़ाई-झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करें। अनायास ही कोई शत्रु सामने आएगा। लोग आपके सम्मान को ठेस पहुंचा सकते हैं। अपनों की चिंता से मन दु:खी रहेगा। उपाय: बजरंगबाण का पाठ करें।

## धनु:-

इस माह का सकारात्मक पक्ष यह है कि आप सत्य का साथ देंगे। वाणी की मधुरता से काम बना लेंगे। नौकरों का सहयोग अच्छा रहेगा। छोटे भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा। यात्रा होगी, जीवनसाथी के संग यात्रा का योग बनेगा। साहस पराक्रम में वृद्धि होगी। बुद्धि कौशल दिखाने का अवसर मिलेगा। नकारात्मक पक्ष देखें तो आलस्य बढ़ने की संभावना है जिससे हानि का योग बनेगा। एकांत में रहने की इच्छा बढ़ेगी। उपाय: श्रीमद्भगवतगीता का पाठ करें।

## मकर:-

इस माह आपकी व्यक्तिगत समस्याएं मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। आर्थिक तौर पर सुधार तय है। लोगों और उनके इरादों के बारे में जल्दबाजी में फैसला न लें। आपको अपनी ओर से सबसे अच्छा बर्ताव करने की जरूरत है, क्योंकि आपके प्रिय का मूड बहुत अनिश्चित होगा। महत्वपूर्ण लोगों के साथ बातचीत करते समय अपने शब्दों पर नियंत्रण रखें। जीवनसाथी से तनातनी संभव है। उपाय: गाय को हरा चारा खिलाएं।

## कुंभ:-

इस माह धैर्य बनाए रखें, क्योंकि आपकी समझदारी और प्रयास आपको सफलता जरूर दिलाएंगे। दीर्घावधि मुनाफे के नजरिए से स्टॉक और म्यूचुअल फंड में निवेश करना फायदेमंद रहेगा। आपकी मुस्कुराहट आपके प्रिय की नाराजगी दूर करने के लिए सबसे उम्दा दवा है। अगर आप खरीदारी पर जाएं तो जरूरत से ज्यादा जेब ढीली करने से बचें। आपको सच्चे प्यार का एहसास होगा। तनाव से मुक्त रहने की कोशिश करें। उपाय: घर के पश्चिम मे पौधा लगाएं।

## मीन:-

इस माह बाहर घूमना-फिरना, पार्टी और मौज-मस्ती आपको अच्छे मूड में रखेंगी। अचानक मुनाफे या सट्टेबाजी से आर्थिक हालात सुदृढ़ होंगे। सामाजिक उत्सवों में सहभागिता का मौका है, जो आपको प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में लाएगा। अपने प्रिय से कुछ भी तल्ख कहने से बचें, नहीं तो बाद में आपको पछताना पड़ सकता है। जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उपाय: किसी बुजुर्ग महिला की सेवा करें।

nupur.com NRITYA

नुपुर नृत्य कला केंद्र हल्द्वानी

में सभी के लिए
01 फरवरी 2021 से पुनः
कक्षाएं आरंभ
हो गई है।

जिसमें क्लॉसिकल डांस, तबला वादन, सेमी क्लासिकल, गिटार, पेंटिंग आदि का प्रशिक्षण राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करते हुए तथा कक्षों (क्लास) को नियमित रूप से सेनेटाइज कर आधुनिक तरीके से देने की व्यवस्था पूर्ण कर ली गई है ।

एडमिशन के लिए संपर्क करें।

NUPUR HALDWANI

www.facebook.com/nupurnrityakalakendra
You Tube: Search: nupurnrityakalakendra
nupurnritya99@gmail.com
www.nupurnritya.com

NEAR KANDPAL ENT. Hospital, SHAKTI SADAN GALI, NAWABI ROAD, HALDWANI (NAINITAL), Uttarakahnd

05946 220841, 91 9760590897
91 9411161794